॥ श्री ॥

॥ इस गुणविलाश छपाणे मैं प्रयत्नकर्त्ता तथा सहायकर्त्ता
सेठ श्रीमान् मोहणलालची पूनमचंद गोलछा.

(अर्पण पत्रिका)

भीनासर वास्तव्य, वांठिया सेठजी, श्रीहजारी मलजी ऐसें उदार
दिलवालेथे, जिनोनैं २२ समुदायवालोंमैं, ज्ञानवृद्धिवास्ते,
सहस्रो मुद्रायें खर्चकिया, अपणे समुदाई दीनहीनोका
उद्धार करणे मैं भी हरवख्त कटिवद्धथे, प्रार्थना
सफल करणा तो उनोंका परमशीलथा, इस
ग्रंथकै छपाणेमें भी अधिकांश सहायक
श्रीमान् हीथे, अब परलोकसिद्धाये, ऐसें
नररत्नकों शांतिमिलो, उन श्रीमान्के
पौत्र श्रीवहादरमलजीभी अपणे
पितामहकीतरे दिनोदिन धर्ममैं
दानशूरता दिखायगें, कारण
वीरोंके वीरही होते हैं.

[अथ ऋषभदेवजीकी लावणी ।]

॥ शीसनमाकै करूंरे वीनती, चरणकमलमैं चितलाउं हे जीरेचर० ऋषभ देव महाराज, करो सिद्धकाज, आज मैं जसगाऊं, [टेर,] अवल हकीगत कहूंरे आपकी सरवार्थसिद्धथी चविया, माता कूखै आया, बहोत सुखपाया उदर मैं वासलिया, चवदै सुपना आयारे मातानैं माताका हुलसा जोहिया, गई पतीकै पास, अर्थ दैवो भास, सुनो तुम मेरा पिया, [उडावणी] हे अब कहता राजा सुपना भला तो है आया, एहां आया, तुम बहोत खुसीसैं रहो हुसी जिनराया, एहां राया, माता मनमैं हरख पांमियो जायके मंगल गवाउं, ऋ० १, सुभ वेला मैं जनम लियो प्रभु, इंद्रादिक मिलकर आये, मेरू परवतपर, जाय, देव सब आय, महोच्छव करवाये, आठजातकै कलस मंगाकै, सुगंधजलसें भरवाये, प्रभुजीका जसगावै, चमर ढोलावै, प्रभूजीकूं नवाये, [उडावणी] हे इंद्राण्यां मिलकै भगतीसैं मंगल गावै, एहां गावै, अठाई महोच्छव करकै पीछा जावै, एहां जावै, इंद्र प्रभूजीसैं करै वीनती स्वर्ग लोकमैं मैं जाऊं, ऋ० २, कंचन वरणी देह प्रभूकी वृषभ लंछन है सुखदाई, धनुष पांचसै है काया मेरे मन भाया यही है अधिकाई, जुगला धर्म निवारै प्रभुजी कला बहोत्तर सिखलाई, वरसी दांन प्रभु दिया, जगमैं जसलिया, फेर दीक्षा पाई, [उडावणी] हे सब देवी देवता दीक्षा महोच्छवमैं आये, एहां आये, हे प्रभुजीके चरनमैं लुल २ सीस नमाये, एहां नमाये, च्यार सहससें लीनी है दीक्षा जिनकूं मैं नित उठ ध्याऊं, ऋ० ३, लाख चौरासी पूरब आयू बीस लाख रह्या

कवर पदे, पूर्व लाख दीक्षा पाली, शास्त्रमें चाली, एवं भगवंत वदे, सहस्र वरस छदमस्तरया प्रभुवाकी रह्या केवली स्वामी, तीरथ थाप्याचार, भवी हितकार, मोक्ष नगरी पांमी, [उडावणी] हे कहे आवड महात्मा प्रभु-जीका जसगातै, एहां गातै, हे देवो आवागमण निवार यही हम चातै, एहां चातै, सुखसंपत आपो मेरेकूं आपका दरशण मैं पाऊं, क० ४, इतिपदं ॥

[नेमनाथजीकी लावणी]

॥ कहती है राजुलनार ह्मारी सहियां है इसडो हठीलो ह्मारो दिलजानी, नेम गये गिरनार सखीरी एक वात मोरी नहीं मानी, [टेर,] विधसैं जांन वणाय मोरी सहियां है जूनेगढ प्रभू आये हैं, छपन कोड जादवकी जोड मिल जांन सजाकर लाये हैं, इन्द्रादिक सब साथ ह्मारी स० सखियन मंगल गाये हैं, तरेतरेका बाजा बाजता सुन-कर सहु हरखाये हैं, [उडावणी] हे अब कहती सखियां सारीरे, ह्मारो वनडो फूल हजारी, हे क्या जानवणी हदभारीरे, जिनकी शोभा लगती प्यारी, हाथी घोडा रथ ऊंठ ह्मारीसहियां हे, घूम रह्या चारूंकानी, ने० १, सुणकै पसुकी पुकार ह्मारीस० नेमजिनंद कियो वीचारी, जांनवास्ते लाये पसुकूं भोजन होसी तइयारी, पसुवांकों दिये छोडाय ह्मारी स० छोडदीवी राजुलनारी, तोरणसें रथ फेर प्रभूजी संजमकी दिलमैं धारी [उडावणी] हे प्रभु जाय चढै गिरनारीगे वहांपर पंच महाव्रतधारी, हे अब सुणलो वचन हमारेरे, प्रभुजी छोड दियो संसारे, करी हसीकी वात ह्मारी स० राजुल होरही दीवानी, ने० २, सब सखियां मिल आई ह्मारी स० राजुलदेकूं

समझावै, नेम गयो तो जावोवाईजी और वींद तोहे परणावै, जुगमें वींद अनेक ह्मारी स० जोथांरे चितमैं चावै, परसनकर मनोगमवरलो यूंसखियां सब वतलावै, [उडावणी] हे जब राजुलयूं फुरमांईरे, ह्मारे और पुरुष सबभाई,हे मैं किसीकूं परणूं नांईरे,ह्मारे एक वींद जादु-राई सुण राजुलकी वात ह्मारी स० सखी लगी सब पि-छताने ने० ३, सब सखियां लेलार ह्मारी स० चाली रा-जुलगढ गिरनारे, उठी घटा घनघोर मारगमैं मेहवरस्यो मुसलधारे, सब सखियां गई विछड ह्मारी स० न्यारी २, हुयगईसारे, चीर सुकावण काज सती जब गईहै गुफाकै मझारे [उडावणी] हे सती रहनेमी समझायोरे, उनकूं धर्मको राह बतायो, हे जब रहनेमी सरमायोरे, सतीकूं वारंवार खमायो, आवड महात्मा गावै ह्मारीस० पिऊसे पहली गई निरबानी, ने० ४, इतिपदं ॥

॥ प्रभु जाय चढै गिरनारीरे, वानैं छोडी है राजुल-नारी, सुनी पशु पुकारी दयाचितधारी वारी ममताकूं मारी विसारी, [टेर,] जलचरी खेचरी मरतांउवारी वानें मिरगाकी सुनी पुकारी, पशुवांकों छोडदीना, प्रभुजा० १, सहसारी वनमैं संजमलीनो पंचमहाव्रतधारी, ऋद्धिना त्यागकीना, प्र० २, चौतीस अतिशय पैतीसवानी, प्रभु भये हैं केवल ज्ञानी, आवडनैं छंद कीना, प्रभु जा० ३ इतिपदं ॥

[निवेदन]

॥ पूज्य श्री श्री लालजी ऋषिराज अच्छे सुशील क्षमा दया निस्पृहता इंद्रीदमनादि व्यवहार क्रियासें विराजित साधु आर्यायें भाये वायोंसें सेवितचरण, आर्यावर्त्तमैं प्रसिद्ध एक महापुरुष है, किसी गृहस्थ गृहस्थणीसें पत्र-व्यवहार नहीं करते धातूकी ताडीका चसाभी इनका साधू कोई नहीं लगाता, कपडा रंगते नहीं, न साबूसै धोते हैं, रातपडे वाद सूर्य उदयतक धर्म ध्यानके वास्ते भी यह और इनके साधू स्त्रीकों अपनेपास नहीं आणे देते, साधुओंके वास्ते जो मकान गृहस्थनें वणवाया उसमें नहीं उतरेते हैं, गृहस्थका धातू वगेरे पात्र काममें नहीं लाते हैं, कठोर ओर मर्मभेदक शब्द नहीं बोलते हैं, महान्पूर्वाचार्य श्रीजिनदत्तसूरिः प्रमुखका बडा उप-गार जैनधर्मपर मांनते हैं, पूर्वाचार्यरचित आगम प्रकीर्ण पंचागीयुक्त मांनते हैं, बावीस अभक्षका खाणा पीणा बुरा समझते हैं, व्याकरण पठण अच्छा फरमाते हैं, जिनमंदिरकी भक्ती करणेवालोंकी बुराई, नहीं करते हैं, बलकै श्रावकका कुलाचार धर्म फरमाते हैं, अपणे संग-ग्रहस्थ दूरदिसावर पोहचाणे चलेतो मना करते हैं, निश्राकृत आहार नहीं लेते हैं, गृहस्थकों कहकर सूत्रा-दिक नहीं लिखाते हैं, सीधा लिखा हुआ मिलै जरूरी होय तो वहरते हैं, विनपडिले है पुस्तकादिक अपणेपास नहीं रखते हैं, न दिशावरोंसें पुस्तकोंकी पारसलैं संदूकै मंगवाते हैं, पायखाना आदिकमें फरागत यह और इनकै साधु नहीं जाते हैं, ग्रहस्थोंसें पगचंपी आदिवे यावच्च नहीं कराते हैं, तपभी वडा भारी यह और इनकै ऋषीलोक करते हैं लिफाफा कार्ड साबू वहरते नहीं

नपास रखते हैं और एसे काम करणेवालेकों साधू नहीं समझते हैं इत्यादि अनेक व्यवहारोंसें अपणे साधुवेषकों शोभारहे है, इत्यादि गुणोंकै विलाससें इस ग्रंथका नाम गुणविलास धरा गया है निश्चयसम्यक्तो केवल विगर कोन कह सकता है, लेकिन् अच्छा व्यवहार हमेस इस लोकपरलोक मैं लाभदायक है अढाई द्वीपके पनरे कर्म्म भूमी मैं रजोहरण पात्र और गुच्छके धारणेवाले जिनाज्ञामुजब पंचमहाव्रत पालणेवाले अठारै हजारशीलांग रथ धारणेवाले अखंड आचार चारित्र पालणेवाले एसें सर्व साधुओंकों सिरसें मनसें वंदन करताहूं, इस ग्रंथकों छपाते प्रथम ग्राहक वणकर–

(सहायता देणेवाले श्रीमंतोंकै नाम)	रु०
श्रीयुत जोरावर मल हिम्मतमल मालू	५६।)
श्रीयुत अगरचंद भैरूंदान सेठी	७५।।।)
श्रीयुत चांद्मलजी डागा	१८।।।)
श्रीयुत हस्तमल लिखमीचंद डागा	१८।।।)
श्रीयुत सतीदासजी तातेड	११।)
श्रीयुत शिवदासजी कावडिया	११।)
श्रीमान्सेठ पेमराज हजारीमल वांठियां	३००।।।)
श्रीयुत गणेशीलाल डालचंद मालू	१८।।।)
श्रीयुत लाभचंदजी श्रीमाल	१५।।।)
श्रीयुत अगरचंदजी पूगलिया	११।)
श्रीयुत मोहणलाल पूनमचंद गोलछा	१५।।)

[ये पुस्तक विगरमूल्य विकानेर पास भीनासरमें सेठ पेमराज हजारी मल्लकेपास मिलेगी, मूल्यसें विद्याशालामें–

अथानुक्रमणिका.

(जाहिर खबर.)

॥ श्रीजिनायनमः विद्याशाला, वीकानेर, राजपूताना, उपाध्याय श्रीरामलालजी गणि:की तर्फसें इतने पुस्तक छपकै प्रसिद्ध हुये हैं नगदी निछ्रावलसें मिलता है, परदेशी ग्राहकोंको । वी । पी । सें भेजा जाताहै वैरंग पत्र नहीं लेगें, जो परदेशी ग्राहक प्रथम पुस्तक । वी । पी । सें मंगाकर फेर नहीं लेगा वह धोखावाज अपणे २ इष्टधर्मको गुनहगार वे मुख ठहरेगा पुष्ट चिकणे कागज भारतवर्पके नामी निर्णयसागर प्रेसके अक्षर शुद्ध छपाई मसहूरहै, महाराज उपाध्याय श्रीजीके जैनसिद्धांतानुसार प्रबल उक्तियुक्तिकेभी अमृतरसके पानकरणाभिलापी हमेस इन ग्रंथोंके रसिक वणरहे है पढिये २, लीजिये २, विलंब न कीजिये, सारतत्व देखके धन्यवाद दीजिये, लौकीकसें वाकवहोय अध्यात्मरस पीजिये—

(छपे हुये ग्रंथोंके नांम.)

॥ करुणाबत्तीसीं दादासाहिबके गुणानुवाद प्रत्यक्ष दरसाव देणेका मंत्रयुक्त पूजा .... ।)

सिद्धमूर्ति भाग प्रथम .... ॥)

सिद्धमूर्ति भाग द्वितीय .... ॥।)

श्रावक लोकोंका रुजगारी ग्रंथ, धर्म, धन, राजनीति, अनेक दृष्टांतयुक्त १)

६ चाणाक्यका अर्थ, कार्य सिद्ध देखणेकूं शकुनावली, जीणा, मरणा, काल, सुकाल, जीत, हार, इत्यादि अनेक वात जांणनेकूं जैन स्वरोदय .... ॥।)

जिन पूजामहोदधी, इसमें ३७ गायन पूजा मंत्रयुक्त सर्वविधि .... २।)

रत्नसागर नूतन, इसमें जैनधर्मवालोंका सर्व धर्म कर्त्तव्य, वडेस्तवन, छोटेस्तवन, सिझायें, चो ढालिये, तपस्याविधि, १२ मासपर्व्वाधिकार, लावणी यां जैनधर्मवालोंके रखणे योग्य है .... ५)

वैद्य दीपक; ये ग्रंथ सबगृहस्थोंकें रखणे योग्य है, रोगपासभी नहीं आ सके एसे खानपानका वर्त्ताव धरा गयाहै, पढणेसें मालम होगा, तारीफ क्या लिखैं, मनुष्य, स्त्री, बालक, जानवर, और सब तरेकै जहरोंका इलाज, देशी, अंग्रेजी, होमियोपथी, और यूनानी, पथ्य, कुपथ्य, सब दवासोधन, और वणाणेकी विधि, दयाधर्मवालोंके वास्तेही रचागयाहै, इसग्रंथमें सर्वज्ञधर्मका नमूना है; ....

शकुनशास्त्र; श्रीजिनदत्तसूरि रचित इसमें शकुन चिडी, कउआ, कुत्ता, स्याल, हिरण, इत्यादि जानवरोंकी चेष्टासें आगे होणेवाला फल, सब मनुष्योंकी चेष्टासें शुभाशुभ फल, अंगफुरकणका फल, गिलेरी गिरणेका फल, मेघ कब होगा, काल होगा, या सुकाल, इस वर्षमें कोन वस्तु तेज रहेगी, कोनसी मंदी विकेगी, मकान कराणे जमीनके धूलके रंगका शुभाशुभफल इत्यादि जाणनेको ये ग्रंथ साक्षात केवल ज्ञानीका भान दिखती है ....

महाजनवंशमुक्तावली, इसमें सब ओसवालोके अलग २ गोत्रोंकी उत्पत्ती महेश्वरी, अग्रवाल, श्रावगी, नरसिंघपुरे; गोरारे, हूंबडं, पोरवाल श्रीमाल, उत्पत्ती दसावीसा होणेका वयान ८४ गछोत्पत्ती, श्रीभोजगउत्पत्ती, श्रावकोंकों, आचार, वि[illegible] शिक्षा ....

खरतर बृह[illegible] पंचप्रतिक्रमण अर्थ[illegible] [illegible]स्मरण, भ[illegible]णमंदिर, छोटी शांति, बृ[illegible], ऋमिमंडल, जिनपंजर, [illegible]जयपहुत्त, दोसावहार, जगद्गुरु, नवग्रह शांतिमंत्र [illegible]था पूजाविधि, प्रतिक्रमण पांचोंकी करणेका विधि, पोसहविधि [illegible]त्यादि सव अर्थयुक्त.... ....

रिपारो, नहीं सा अंग्रेज़ कहर्त

(इन सब पुस्तकोंके मिलणेका ठिकाणा.)

॥ वीकानेर, मारवाड, उपाध्यायश्रीरामलालजीगणिः, विद्याशाला, मुंबई, विचला भोईवाडा, श्रीचिंतामणिजीका मंदिर, वा। श्री-जीवणमलजीगणिः, वैद्यपास, नाटपेट पत्र नहीं लैंगैं, ये पुस्तकै सब सरकारकै ऐन मुजब रजीष्टर कराई हुयी है छापेगा सो सजा वार होगा, पुस्तक मंगाकर फेर लोटायगा वह अपणे इष्टधर्मसैं हरामी करेगा.

॥ स्वप्नसामुद्रक छप रहा है, इसमैं स्वप्नेका फल, सामुद्रक, स्त्री, पुरुषोंकै, शिरसैं पैरतक, अच्छे और बुरे चिन्होंकै सब फल प्रगट किया है भाषा कविता बंध है मूलग्रंथ रचयीता भद्रबाहु स्वामी है, छंद रचयिता। श्रीरामलालजीगणिः है, इसमैं कामशास्त्रका कुलसार दरसाया है, ज्ञानीकों तो वैराग्यका मूल है, कामी पुरु-षोंकों कोक दरसेगा, ग्रंथनिर्दोष है, रचणेवाले मूल. सर्वज्ञवीत-रागकी वाणीके अनुसार है, किसीकों आरसी; किसीकों तवा सूझेगा, १

बावीस समुदाय.

॥ श्रीधर्मशीलसद्गुरुभ्यो नमः शाश्वतशाश्वत् सिद्धायतनस्थ सिद्धेभ्यो नमः इति मंगलं ॥

अथानेक पदानि लिख्यते ।

अथ चौवीस तीर्थंकरोंकी लावणी, चालपणिहारी, चौवीस जिन सब देव है, मुगतीकै दाताः सदा मैं तेरा जस गाताजी, टेर, ऋषभ अजित महाराज, तिरणकी जिहाज वडी भारी, संभवकी वाणी सुखकारीजी, अभिनंदन गुणधार सुमतकी जाउं बलिहारी, पद्मप्रभुकी सुरत पियारीजी, उडावणी, जनममहोछवकरवाभणी, इंद्रादिक सहु आय, मेरूगिरिलै जायकै, मंगल कलस ढोलाय, नेकचार जो करणा है सो करकै सब जाता, सदा में तेरा जस गाताजी, १, श्रीसुपारसनाथ जगत विक्षात प्रभुचंदा, सुविधि शीतल सुखकंदाजी, श्रेयांसवासपुज्य, सेवा करता सुरनर इंदा, सेवकका काटो भवफंदाजी, उडावणी, देवलोकांतिक आयकै, प्रतिबोध्या जिनराय, तारो तारो जगभणी, एहवा सवद सुणाय, ततक्षण प्रभु संजम लेकर तोडै जगनाता, सदामें ते० २, विमल अनंत धरमनाथ सोलमा शांति जिन जाणो, जिनोंका ध्यान हियै आणोजी, कुंथुनाथ अरनाथ बहुगुणपात्र पिछाणो, पख झूठी कुमति ताणोजी, उडावणी, च्यार कर्मघन घातिया, कीनाछै जिन दूर तपजप करणी खपकरी. पाम्या ज्ञान पडूर, चार तीरथसो थाप आप

फिर करता कहलाता, सदा में ते० ३, मल्लिमुनिसुव्रत वीसमा जाणो तुम भाई, नेमी है सबकूं सुखदाईजी, रिठनेमी पारस प्रभुकी महमा हद छाई वीरप्रभु सासन वरताईजी, उडावणी, अष्टकर्मदल चूरकै, पोहचा है निरवाण, अटल सुखों मैं जायकै, कीया आप असथांन, जनम मरणकी तिरसफासमैं, फेरवो नहीं आता, सदामैं ते० ४, चोवीसों महाराज रखो अब लाज आज ह्मारी, सरणमें आयोहूं थांरीजी, प्रभुगुण अनंत पावै नहीं अंत सुणो पियारे, करतगुण इंद्रादिक हारेजी, उडावणी, कनीराम जिनंद गुण गाया मन अति कोड, एक जिह्वा मेरे प्रभु, काहां लग गाउं जोड, अगम अगोचर तुम अविनासी पार कोण पाता सदा मैं तेरा जस गाताजी ५. इति पदं ॥

अथ सवइया घनासरी चालरा लिख्यते ।

चोथे आरे केरा वर्ष तीन साढी आठमहिना वाकी रह्या जदवीर मुगत पधाऱ्या है, पीछे जिन शासनमें मोटा मुनिराज थया आप तिऱ्या संसारथी घणा जीवताऱ्या है, सम्वत अठारे पनरेके सालचेत सुदिनवम सुक्रवार दिननिह्नव निकाल्या है, द्वेष करी देव गुरु धर्म तीमें भेद करी खोटो मत झाल्यो सठा ज्यानें गुरुधाऱ्या है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो कृपा राम कहै खेवो पार दया पाल्यां है १, चोवीशमा महावीर देव ज्यांनें चूका कहै ज्यांके नांमसेती माथो मुंडी मांग खावे है, गुरुगीतारथ दया देखी काढ्यो संसार थी ज्यांकी निंद्याकर सठ जनम गमावे है, जीवके वचाये मांहे पाप कहै दशआठ

कां करा मेलीनें बोघा लोकानें बेकावे है, देव गुरु धर्म तीन तीनांमें बतावै भिन्न सिद्ध पावडेमें कह्यो न्याय नर्क जावे है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो कृपाराम कहै दया पुन्यवांन पावै है, २, सात निह्नव आगे हूवा उवाईमें जिन कह्या आठमो निह्नव सिद्ध पावडियेमें चाल्यो है, वाणियेको सुत ग्राम कंटालेको वासी गुरु गीतारथ दया देखी दुखसुं निकाल्यो है, अविनीत हुवो गुरांकर दियो जुवो मोहकर्म उदय हुवो सठ खोठो मत झाल्यो है, चूका कहे देव सतगुरांमें बतावै दोष जीव वचायां पापकेवै बोले जिमसाल्यो है, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नांम दीनो कृपाराम दयाधर्म पुन्यवान झाल्यो है, ३, जीव दयासुत्रांमांहि ठाम २कही जिन जीवके वचायां पाप कठेही न जाणी है, दशमें अंगरे मांह ग्यांनी दीनो फुरमाय सब जीव दयाकाज कही जिनवाणी है, सूत्र आगम टीकाचूर्णीपयन्ना मांह जिहां तिहां जोवो जीवदयाही वखाणी है, दया रुचै कोई पुन्यवान रे घटमांह निह्नव कसाइ मांस खावै जिणां ताणी है, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नांम दीनो ज्ञानीका वचन सत्त हिरदेमें आणी है, ४, श्रेणक राजारे सुत हाथी भवदया पाली मृगरथराजा दयाकाज धाऱ्यो मरणो, धर्मरुचि दयाधार करगया खेवो पार श्रेणक पडहो वजायो सुत्रांमें निरणो, नेमजिन दया पाली छोड दी राजुल नारी मेतारज दया पाली मेट दियो मरणो, तेवीसमां जिनराय तापसके पासे जाय जीवांने वचाय दियो नवकारको सरणो, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नांम दीनो जीवदया धर्म पालो जोथे चाहो तिरणो, ५, आज्ञामें आलस मत करो जिन वैणसुणी

आज्ञा वाहिर उद्यम तूं कदे मती कीजिये, आज्ञा तीन प्रकार केरी कही जिनवर ज्ञान समकित चारित्र चित्त दीजिये, धर्म दोय प्रकार सुत्रचारित्रसार मिथ्यात्वीरी करणी कहो किणमांहे लीजिये, आहार तणो इधकार उत्तराध्ययनमझार छकारण छोडिये छकारण करलीजिये, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो जे तूं सुख चावै जिनवचनामें रहीजियै, ६, निह्नव निकल इण भांत अधिकाइकीनी आर ज्यानें पासवैठी राखे सारो दिन्नरे, छेद उत्तराध्ययन मांहि ज्ञानी दीनो फुरमांय वाड मांहे दोस नहीं वसरहे मन्नरे, थापरूप दोष नहीं लगावां इमकही जुदो क्षेत्रवताय नित्तरोज वहिरे अन्नरे, दया दान पूछ्यां कपटाइसहित जुआव देवै जहर जहर वटकेसुं मिल्या अन्यो अन्यरे, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो कृपाराम दयाधर्म धारे सोही धन्यरे, ७, श्रावकरो खाणोपीणो गहणो अवृतकहै उवाइसूत्र सुयगडांगजी वतावे है, गहणा कपडानें अवृत कहे ज्यांने कहणो गृहीलिंगी केवल पाय मुगत क्यों जावेहै, श्रावकनें तीर्थ सुवृती कह्या जिनसुख्य आराधक सेतीकी अवृत वधावे है, व्रत अव्रतपर नामाकेरी कहीजिन चोफरसी पुद्गल नजर न आवे है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो निह्नव कपटकर वोधानें वहकावे है, ८, पडिमा धारी श्रावकनें दांन दियां पाप कहै किसो पाप हुवे कहो निह्नवांनें केवणो, तीन करण तीन जोग पाप रातो त्याग हुवा जिनजी वतायो पडिमांमें मांगलेवणो, निह्नव कपट करी वोधा आगे इम कहै, साधूके जो आहार वचे वांनें क्यों नहीं देवणो, कलप संभोग मिल्यांविना लेवे देवे नहीं कपट क्या करो सठ

कितरोक रैवणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो पारख्यातो करो बहतेलारे नहीं बैवणो, ९, श्राव-करे तीन करण तीन जोग त्याग हुवा भगवती सूत्र मांहे वीरजी वतायो है, अंबडजी श्रावकरा सातसेही शिष्य लारे तीन करण तीन जोग पाप बोसरायो है, श्रावकनें दशाश्रुतस्कंधमें श्रमण भूत कह्यो उबाईमें जिन सुसाहु बुलायो है, ज्ञाताजी सुत्रमांह ज्ञानी दीयो फुरमाय श्रा-वकनी समाव्रत श्रावक नांम पायो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो श्रावकने जहर वटको कहणो कठै आयो है, १०, कवाड देहेडी जिणमांहे नहीं साध-पणो उत्तराध्ययन अध्ययन पैंतीसमों वतावेहै, जिहां नहीं कवाड देहेडी एहवो नाम जिहां मनोहर इत्यादिक रह्यां दोष थावे है, बृहदकल्पमांहे रहणो साधुनें अभंग दुवार आर ज्यांनें रहणो जठै पडदो बंधावै है, गोचरीकी पटीकरो नामले निखेधे ज्यांने कहणो गोचरीमें साधु आर ज्यांजी जावे है, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नाम दीनो कवाड निखेधी चटा कबाड्या जमावे है, ११ भगवती सतक पनरमे केरोनाम लेई चोवीसमा महावीर ज्यांनें चूका केवे है, अणुकंपा करी जिन आपरो वचायो शिक्ष अछता ओगण बोली माथे आल देवे है, समणा-समणी कोई नदीमांहे वहता हुवै आज्ञानें उल्लंघ साधु आप काढलेवै है, अनुकंपा कीजै जिनपारको मिटायो दुःख उत्तराध्ययन अध्ययन पनरमे जेवैहै, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो ज्यांको खेवो पार जिन वचनामें रैवै है, १२, कालादिक वारकरो मरण वतायो वीर सोमल मरण जिननेमजी वतायो है, तिल-छोडमांहें तिल वीर जीवतायो अर मरण गोसालेकेरो वीर-

जीजतायो है, दवारकारो दाह नेम जिणभाख्योसें सुख ना-
गश्रीरीहीला निंधा ज्ञाताभांही आयोहै, महाशतक श्रावक
रेवतीको मर्ण कह्यो गौतमजी मूंकी जिन प्रायच्छित्त दि-
रायो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो आगम
विहारी देख्यो जिम फुरमांयो है, १३, पुन्यपाप आज्ञामें नहीं
आज्ञा बार नहीं छंद वारो कीयो तेरे दुवारमें युं गावै है,
मनमें तो श्रधा एम लोकां आगे कहे केम आज्ञा माहे पुन्य
आज्ञा बाहिर पाप थावै है, उवाई सुत्रमांहि ज्ञानी दीनो
फुरमाय आज्ञा बाहिर पुन्यबंधे देवतामें जावे है, गोसा-
लोजमाली जाण तापसादि तज प्राण देव हुवै आराधक
पद नहीं पावै है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम
दीनो आज्ञाका आराधक सुख मुगतीका पावे है, १४,
साधु आर ज्यांरे महाव्रत नववाड मांहे ओछे अधकेरो
पाठ कठेही न आयो है, आर ज्यांनें पहलो व्रत भांग
चोथो राखणेको वीतराग देव ऐसो धर्म न वतायो है,
आर ज्यांने कवाड देवण खोलणेको नाम साधुविना
न्यारो सठ मुंढेसुं उठायो है, कवाड देवण खोलणेको
नांम आयो जठे साधु आर ज्यांरो पाठ भेलोइ बोलायो
है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो बृहत्क-
ल्पमें आर ज्यांनें पडदो बंधायो है, १५, थाप दोष लगावै
जिणांमें नहीं साधपणो कपटसुं वोले सठ ज्यांनैं इम
केवणो, आडंबरकाज इणभांत पचक्खाण देवै दरशन-
विना थे आश्रव नहीं सेवणो, केई गांम जावै इम सोगन
करावै दुपचक्खाण उपदेश साधूनें नहीं देवणो, दरशण
आवै केई आरंभ करावै आय भाव नाही भावै यूं साधूनें
नहीं लेवणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो
पारक्षातो करो वहतेलारे नहीं वेवणो, १६, रायप्रसेणीमैं

परदेशी राजा मुनीपासे समझ्यांनें व्रत लिया पीछे दान दियो है, आरंभसहित दानादिक प्रश्न पूछै सुयगडांग मांहै मुनिराज मूंन लीयोहै, दशमें अंगमें दान देवणो निषेधे जैनें वीतरागदेव झूठा बोलो चोर कह्यो है, दान-दया सुत्रांमांहि ठांम २ कही जिन दांन दया निषेधे जिणा-को फूटो हीयो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो दांन दया रसकेई पुन्यवांन पीयो है; १७, केसी समणनें चित्र प्रधान कह्यो परदेशी धर्म सुण्यां घणीदया पालसी, समणभिक्षारी सुख डंडकर थोडो लेसी दोपद चोपद घणां जीवानें उबारसी, आगम विहारी चित्र परधान सेती कह्यो जाके हाथे धर्म आवै चार बोल धा-रसो, उपावसुं राजानें प्रधान लायो मुनिपासे वाणी सुणी राजा जांण्यो येही गुरु तारसी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो राजनें असार जांण्यो देखी ज्ञान आरसी, १८, अनंत चौवीसी सव दांन दे संजम लीधो देवे देसी अनंती चौवीसी जिन कयो है, दांन दियो वीर ज्यांनें परीसह ऊपना कहै सठ ज्यांनें कहणो दांन मल्लि जिन दियो है, पहर छदमस्थ रही केवल ज्ञान लही आठूंही करम दही शिवसुख लीयो है, चवदे प्रकार दांन पडी लाभ कयो जिन नवभांत पुन्य न्यारो समुच्चयमें रयो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो निह्नव गा-डर जेम भइयेलारे भइयो है,१९,बालकनी बोली बोल बांरी सुद्ध नहीं जिम निह्नवनें वेस्या भांड तीनूं लज्यार हितरे भांड बोले विकल वेस्याके नहीं शील शर्म निह्नव कहे चूकादेव गुरुमांहे केहतरे, चोरादिक सुतनें सीखावै चोरी तरवानो जिम निह्नवाके दयारहित बाण देतरे, मूंजीपणो कपटपन दयारहित हुवे कुसंग निह्नवाको

मत झाले एता बोले सहितरे, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो निह्नव कोयल जिम नहीं हुवै खेतरे, २०, अभिग्रहोधारी मुनिराज काया बोसराई आगकोपरी सहो हुवै तोही नहीं निकलणो, कोई काढबांने आय मुनीतणो तन सहाय सागारी निकाल बंछै उनींको उबरणों, जीवको बचावणो निशीथमांहे दूजेपद बारमें सतरमें उद्देसे मांहे निरणो, ठाणांग मांहे कलह मिटायांको लाभ कह्यो जीवणो वंछणो कह्यो भगवतीमें वरणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो जींको खेवो पार दया धरमको सरणो, २१, कपट करीनें सठ सुत्रांको नांम लेई जीवणो मरणो नहीं बंछणो बतावे है, आहारादिक लाय आछीतरे पोखे शरीरनें ढांढांदिक देखी झटकेसुंटल जावे है, इम कह्यां कहे हमे संजम जीवण बंछा कपटकी कही जड आगे पलटावे है, कोई अनारज आय साधांनें परीसहो देवै श्रावक बचावै। जीनें पाप किम थावे है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो संथारेको नांम गोपी बोघांनें बहकावे है, २२, साधुनें छकारणांसुं आहार करणो छोडणो कह्यो उत्तराध्ययन अध्ययन छावीशमें वखाणियै, आहार करबाको न्याय ज्ञानी दियो फुरमाय ज्ञाता अध्ययन दूजे अठारेमें जाणिये, दशमीकालक बत्तीस बंध आजीवकानो आहार कर्‌यां धर्मकेवै सुत्र अणजानिये, धर्मक्षयोपशमभाव मांहे कह्यो जिनमुख आहारादिक उदय भाव हिरदेमें आणिये, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो ममता उतारी जीयां शिवसुख माणिये, २३, दूजे अंगजिन कह्यो प्राक्रमनो इधकार अज्ञानीको अशुद्ध ज्ञानीकों शुद्ध भाखियो, तेवीशमी गाथा पद चोथे मांहे दी-

काबाले पुन्यबंध कयो निर्जराको नहीं दाखियो, सुयगडांगमें कह्यो मिथ्या कर मास २ संसारमें रुले कपटाईसल्य राखियो, निह्नव कपटकर बोघां आगे इम कहे मिथ्यात्वी आज्ञाके बारै करणीमें नाखियो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो मिथ्यात्वी मिथ्यात एक अनुयो गद्वारसाखियो २४ सुत्रसिद्धांतसार चाहदिरदेमें धार निन्हवांको मत जाणो झूठकपटाई है, छोडनिन्हवाको संग ज्ञानरूप लागो रंग दयादान रुचि जांकी वडीही पुन्याई है, गुरुगीतारथ भेटी मिथ्यामतदियो मेटी क्षमाका सागर गुरुभेटया सुखदाई है, छतीऋद्धिछिटकाय संजमसुं मनलाय सुगणासगनमुनि वडा गुरुभाई है, सवइयो सवायोकीनो घनासरी नाम दीनो कृपाराम दयावान कीरत सवाई है २५ उगणीसे साल बत्तीस सवइया कीना छवीश सुणमतीकीजोरीस हिरदेमें धारजो, चार वोले नरके जाय कह्यो ठाणा अंगमांय ओरही सिद्धांत सुणहिरदे विचारजो, जीवके वचायामांही ज्ञानी पाप कह्यो नांहीं अज्ञानीके वचनांनें दूरांइं निवारजो, अनंते चौवीसे जिन धर्म कह्यो भिन भिन इम नहीं कह्यो मतजीवांने उचार जो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो कृपाराम कहै जीव दया नित्त पाल जों २६.

अथ कुंडलिया लिख्यते ।

गृहस्थीके घर साधनें, वैठणवर ज्यो वीर, कारलोप वैठेकदा, वधे पापकी सीर १ वधे पापकी सीर, भृष्ट संजम सुंभाख्यो, दशमी काल अध्ययन, छट्ठेमें जिनवर दाख्यो सुद्धसंजम आराधतां, पहुंचै भवजलतीर, गृहस्थीके घर

साधनें, वैठणवर ज्यो वीर १ जरा रोग तपस्या करी, दुर-बल थयो शरीर, तिण कारण वैठणतणी, आज्ञादी महा-वीर १ आज्ञादी महावीर, मानतजसुत्र देखो; विनकारण नहीं कह्यो, वैठणो सुत्रपेखो, मद्वावीसे जिनतणा, कल्पातीतगुण धीर, जरारोग तपस्या करी, दुरबल थयो शरीर, तिण कारण वैठण तणी, आज्ञादी माहावीर २ नि-न्हवकाढी भावना, बोलाबांने आय, लीधा झोली पातरा, लारे चाल्या जाय ३ लारे चाल्या जाय, पूठ दो नारी ऊठी पूछयांक है निरदोष, कपटसूं बोले झूठी, रसनारा गृद्धी-थका, जिहां लावै जिहां खाय, निह्नवकाढी भावना, बोला बानें आय ३ दोषवतावैपारका, पोते घोर अंधार, रोगान-सपेतो हींगळू, चित्राम बहोत प्रकार १ चित्राम बहोत प्रकार, थाप बोघाभर मावै, पूछयां नहीं देजुआव, नहीं सिद्धांत वतावै, वोघागुर चेला मिल्या, नहीं पूछे निरधार, दोष वतावै पारका, पोते घोर अंधार ४ गृह-स्थीके घर जायनें, निह्नवकथा सुणाय, बृहत्कल्पमें वर-जियो, तीजे उद्देशामांय १ तीजे उद्देसेमांह, एक गाथाको भाख्यो, उहां नहीं विस्तार, बोही कारण सुंदाख्यो, कथा भट्टज्यूं मांडीयो, नहीं सुत्रको न्याय, बडे घरांमें जायनें, निह्नव कथा सुणाय ५ निह्नव महासत्यां कहै, वैठी राखे पास, उत्तराध्ययनमें जिन कह्यो, होवै शील विनाश १ होवै शील विनाश, लोकमें अपजस थावै, विनभायां वह पास, राखतांलाजन आवै, बोघा गुरुचेला मिल्या, नहीं पूछनें त्रास, निह्नव कैवै महास त्यां, वैठी राखे पास ६ जिन-कल्पीनें बरजिया, चार बोल जिन आप, निह्नव तीन छिपायनें, देवे वाड उथाप, १ देवै वाड उथाप कपट बोघाभरमावै, समझ्या करै पिछान, अजाण्या

गोता खावै, निह्नव करता कपटसूं, एक बोल उत्थाप, जिन कल्पीनें वरजिया, चार बोल जिन आप, ७ जंगलमैं लै आतापना, नहीं समणी आचार, उपासरेमें रैवणो, कपडो बांधी बार १ कपडो बांधी बार, बृहत्कल्पमें आयो, पांचमें उद्देसेमांहि, श्रीमुख आपवतायो, कबाड जडबोनां कह्यो, लोहिरदेमें धार, आर ज्यांने रहवणो, कपडो बांधी बार ८ महासत्यांनांम धरायनें, संजाव पटली देव, दो झोल्यां ले हाथमें, धव २ करती बेव १ धव २ करती बेव सीखले भेला जावै, साधुस्वांगवणाय, जिणांको लायो खावै, व्यवहार सूत्रमें वरजियो, विनकारण नहीं लेव महासत्यां नांम धरायनें, संजाव पटली देव ९, निह्नवाकूं पहुंचायबा, गृहस्थी जावै लार, आगे जाय त्यारी करै भोजन बहोत प्रकार १ भोजन बहोत प्रकार, त्यारकर भावना भावै, बोलाबानें जाय, तुरत पातर ले आवै, रसनारा गृद्धिथका, जिहां लावै जिहां खाय, निह्नवाकूं पोहचायबा, गृहस्थी लारे जाय १०.

भट्टारक श्रामरकहै, जती खमासण बोल, निह्नव कै वै भावना, ये तीनूं समतोल १ ये तीनूं समतोल, बुलायां तीनूं जावै, निह्नव साध केवाय, सांग लेई भेख लजावै बोधागुरुचेला मिल्या, नहीं आचारको तोल, भट्टारक श्रामरक है, जतीखमासण बोल ११ गोसालांने दिखियां अन्यमत वध्या अनेक, जमालीनें क्यूं दियो, ज्ञानी प्रतक्ष देख १ ज्ञानी प्रत्यक्ष देख, तिलांको छोडवतायो, बोधाने इम कहै, इणीमें स्यो गुणथायो, जिन सोमल ब्राह्मण तणो, मरणो कह्यो विशेष, जो जो कारण जिन कह्या आगम ज्ञानी देख १२ आहार देवै भावसुं, थांनैं पासे आण, रजी आदिक देखनें, देवै फूंक अजाण १ देवै फूंक अ-

जाण, देख पाछा घिर जावो, आडा फिर कहेलो, तुरत अ-
शुद्ध वतावो, मारगादि करे कारणे, बतलावो बहु बार, थां
कारण हिंसा हुई, केम रहे आचार १३ काठा बंधन वांधिया
भातकरी अंतराय, इत्यादि करियां कह्या, अतीचार
जिनराय १ अतीचार जिनराय, भात अधि केरो दीयो
गाढा बंधन देख, तेहढीलाकर लीयो, अतीचार लागो
किसो, थे निरखधो किस न्याय, काठा बंधन बांधिया, भात
करी अंतराय १४ कह्यो लगाणे पातरे, तीन पसली
तेल, चंदरस देणो किहां कह्यो, कहो मांनकूं मेल
१ कहो मांनकूं मेल, रात राखण किहां आयो
दशमी काल अध्ययन छठे, गृहस्थी समोवतायो
निह्नव वोघां आगले, यूंही चलावै फैल, कह्यो
लगाणो पातरे, तीन पसली तेल १५ जनम गांठ आदिक
करी, महोच्छव मांड्यो कूड, निह्नव साध कहवाय कर,
करै जमारो धूड १ करे जमारो धूड, वीरनें चूका भाखे, पो-
ताको निरदोष, पणो बोघांनें दाखै, झूट कपट निह्नवतणो,
जांणी रह ज्यो दूर, जनम गांठ आदिक करी, महोच्छव
मांड्यो कूड १६ वारी पाणी आहारकी, बांधी भर २ लाय
निह्नव साध केवायनें, आधाकर्मी खाय १ आधाकर्मी खाय,
हियेमें इतीन आणे, निरदोषण लै आहार, जिणांसुं
झूटीताणे, रसनारा गृद्धीथका, आहारादिकनें जाय,
वारी पाणी आहारकी, बांधी भर २ लाय १७ बाहर
दिसा अरु गोचरी, गृहस्थी राखै लार, आचारांग
निशीथमें, बरज्यो ते दिलधार १ बरज्यो ते दिलधार,
तइयादिकमांहे वहरै, जो सुत्रमांहि निषेध, करे ते
आपणे महरै, वोघा गुरुचेल्या मिल्या, नहीं पूछे निरधार
बाहर दिशा अरु गोचरी, गृहस्थी राखै लार १८ करे जा-

बतो घरतणो, खोली देखो चीत, लेख करावै हाजरी, यातो कूडी रीत १ आतो कूडी रीत, केम परतीत न आवै जो होवै परतीत, नित्त क्यूं लेख करावै, आगे जिनकीधी नहीं, नहीं वताई रीत, करे जावतो घरतणो, खोली देखो चीत १९ आधाकर्मी आहारको, परतिख दीसे दोख, हीयाफूट भेला हुवै, पूजै बोघा लोक १ पूजै बोघा लोक, हिये एतीनहीं आणे, निरदोषण जल आहार, किणीतरे लेतो जाणे, मीठो पाणी राखनो, आहारादिकदे लोक, आधाकर्मी आहारको, परतक्ष दीषै दोष २० बोघानें भरमायवा, निह्नव मांडी जार, कह कोडी कह कांकरा, पाटी रीगटकार १ पाटी रीगटकार, लेख ऊंधाहीं वचावै, जो देखणनें जाय, रागरंग करीं रींझावै, अण समझ्यो भरमी पडै, समझू करे विचार, बोघानें भरमायवा, निह्नव मांडी जार २१ विन कारण नहीं सुधपणो, निग्रंथी साथ विहार, तुच्छपलेवण नहीं राखणो, नहीं उद्देसादिक आहार १ नहीं उद्देसादिक आहार, भलोकर भूंडोगेरे दोय घडी दिन रह्यां, उच्चारादिकनें पडिलेरे, साध आर ज्यां साथ रहे, नहीं निशीत अधिकार, विन कारण नहीं सुधपणो, निग्रंथी साथ विहार २२.

नित लावै जो एकण घरसें, वारामें एक आहारजी, दशमीकालिकती जेमें कह्यो, साधु नहीं अणाचारजी १ गाथा १०, श्री वीरजिनंद अनुकंपा कीधी, फोरी लब्धिगो सालो वचायो, छ लेश्या छद्मस्थके होती, मोहकर्म वस रागज आयो १, जीव उठाय छांयां मेले तो, जाय महाव्रत पांचूही भागी, या गाथा १९ मी बोल ४९ मां, वहा मन जिमायां तमतमा पोहचावै साख उत्ताध्ययन १४ में संजतीरी वेयावच्च लागियां अणुकंपा साध करे ३, पहला

महाव्रत पूरा पडिया, आडा जडै किवाडजी, कूंटा आगल होडा अटकावै, ते निश्चै नहीं अणगारजी १, निह्नवारा लेख है ॥

जबाब ।

मोलमें जो दांम देई जोरसुं बचायो कोई उपदेश दै समझाय जीव बचावियो, कारण चारमेंसुं एक कारज कियो किणमांहे नफो किणमांहे दोष थावियो, इम कह्यां कहै एक उपदेशमांहे धर्म्म तीनमांहै पाप इम उत्तर बतावियो, इम कहे ज्यांनें केणो कारणमें पाप हेके कारजमें पाप हे के दोनांमांहे आवियो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो उपदेश आसरो ले बोधानें बहकावियो २७ भगवती शतक पहले उद्देसे दूजामें कह्यो साधुजीमें तीन भली लेश्याका उच्चारजी, आचारांग श्रुतस्कंध दूजे अध्ययन पनरमें भली लेश्या आयां जिन हुवै अण गारजी, भगवती शतक नवमें उद्देसे इगतीसमांहे भली-तीन लेश्या आगममें अधिकारजी, ठाणाअंग ठाणे तीजे दूजे उद्देसेमें घणो पन्नवणापद उत्तराध्ययन विस्तारजी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो लेश्याका लक्षण सुणहिरदे विचारजी २८ गोसालाने वीरजी बचायो जीसुं चूका केवै कुहेत लगावे सठ झूठा देवे आलजी, निह्नव कपट कर बोधां आगे इम कहै उवाऱ्यां हो लाभ क्योंनीराख्या अणगारजी, इम कहे ज्यांनें केणो केवली त्रिकाल जांणे सावत्थी क्यों आया कर जावता विहारजी, आउखो निमत्त आयो जांणीलियो जिन-राज मेल्या नहीं दूर वर्ज्या राखियो व्यवहारजी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो वीरजीनें चूका क

है डूबा कालीधारजी, २९, निशीथ उद्देसे ग्यारमांमें वीर भांगा चार कह्या साधु ओर आर ज्यांनें भेला नहीं रेवणो, व्यवहार उद्देसे पांचमांमें साधु छतांमुनिः आर ज्यांकै पासवचन प्रायश्चित्त नहीं लेवणो, निशीथ उद्देसे चोथे साधु संज्ञा कियांबिना आरज्यांरे उपास रे प्रवेश न कैवणो, साधु आर ज्यांनें एक उपासरे आहारादिकमनें बृहत्कल्पमें उद्देसे तीजे केवणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो कारणसुं आहारादिक लेवणो नदेवणो, ३०, निह्नव कपट कर बोघानें बतावे पाठ साधु आर ज्यांनें भेलो भोगणोनैं रैवणो, व्यवहार उद्देसे सातमांमें एसो पाठ नांहीं दीखै कठे किम बोलो पाठ देखावोयूं कैवणो, उत्तराध्ययन सोलमें अध्ययन तीजी वाडमां है स्त्री बैठे घडी दोय जिहां नहीं ठैवणो, उत्तराध्ययन निशीथ व्यवहार बृहत्कल्प आदि स्त्रीको परचो वरज्यो पाठ देख लेवणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो स्त्रीको कर फरसे ज्यांनें डंडकाई कैवणो ३१ अचित्त द्रव्यादिक सेती कोई पुन्यवांन आप आपको तो पाप टारे दूजाको टरायो है, अशुभ योग आश्रवमांहि लियो कह्यो शुभयोग संबरमें ईमें किस्यो पायो है, सनत कुमार तीजे देव लोक ऋद्धि पाई चारोंही तीरथनें सुख शाता उपजायो है, नेमजिन वागमें विराज्या तिण अवसर किसन साहायदे संजमदिरायो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो ज्ञाता अंतगडमांहे एसो पाठ आयो है ३२, अनुकंपा निरवद्य सावद्य कहीनें सठ बोघलांके घट घोचो झूठोही फसायो है, अनुकंपा निरवद्य सावद्य हुवांथी सठ घरमदलालीमांहे पिण फेर थायो है, नंदिषेण उपदेश देइनें दिक्षादिराई

चित्र परदेशी केशी स्वांमि समझायो है, कोई मुख जयणा करी मारग वतायो शुद्ध कोई अजयणासुं मारग दिखायो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो मारग सावद्य निरवद्य किम थायो है ३३, भगवती सतक सोलमें उद्देसे छठामांहे रतनांकी माला जोडा देख्यो जगन्नाथजी,चोथा सुपनारेमांहे छोटी वडी कही नहीं झूठी ढालां जोड सठ बोघानें वहकातजी, समकित रतन आवश्यकमें जिन कह्यो सम्यक्त रत्न ज्ञाता सूत्रमांहे वातजी, सम्यक्त रत्न ले दोई धर्म सम कह्या व्रतरतनाको जो वहोत पखपातजी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो समकित पायां निश्चै मुगतीमें जातजी ३४ अन्नवस्त्रादिक दियां अव्रत सेवाई कहे अव्रत तो दीधी लीधी आवै नहीं पारकी, निह्नवांके श्रद्धाएम अव्रत अरूपी जीव खावे देवै पुद्गलरूपी वात ये विचारकी, भगवती शतक पहले उद्देसे नवमेंमें कह्यो अव्रतकी क्रिया क्षत्री राजारंक सारखी, चोरादिक वित्त ग्रह्यो आकुल व्याकुल थयो थोडी क्रिया लाधां या है वाणी अणगारकी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो पारखातो करो सठ खबर न पारकी, ३५, मूल दृष्टांत कुण आत्मा जीव अरूपी निरवद्य भाव द्रव्य गुण पर्यायी है, द्रव्यादि अज्ञान ज्ञान तलावतेमें कियो हिसाब निह्नवाकी आसुणो कपटाई है, मूल नव नांम कहेय दूजो दृष्टांत देय आश्रवजीव एक जुगल मिलाई है, तलावनें नालो एक उत्तर यूं देणो देख पुद्गल तलाव नालो एक कहवाई है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो यूं नांम हवेलीको उत्तर देखाई है ३६ तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्याग किया वर्णना गिणती भ-

गवतीमें जाणीयो, तीन कर्ण तीन योग अठारे पापरा त्याग किया अंबडजीका चेला उवाई पिछाणीयो, तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्यागकिया आनंदादि श्रावग उपासक दसा आणीयो, तीन कर्ण तीन योग अठारा पापरा त्याग किया संखादिक भगवती मांहि जिनवाणीयो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो अव्रतरी किसी देखोतेज पखताणीयो, ३७, श्रावकरो खाणो पीणो कपडो आदि सबांनें अव्रतमें गिणे ज्यांनें इण भांत कैवणो, राख्यांपापदियांपाप भलोजाणैतैमैंपाप तीनां मांहेजिनसाधूनेंक्यासेवणो, कोईतोआगेडालेवै कोईपाडीहारासेवै इत्यादिपापकेवोथांनेंकलपेनहींरेवणो, भगवतीसतकवारमें उद्देसेपांचमांमें पापनेंचोफरसी कह्यो पाठदेखलेवणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो पारख्यातोकरो वहतेलारे नहीं वैवणो ३८ भगवती सतकवीसमें उद्देसे आठमांमें श्रावकनें तीरथमें लीनोयाजिनवाणी है, पालतजी श्रावकनें महात्मा कह्या जिन सीक्षकह्या उत्राध्ययन इकीसमें जांणीहै, धम्मिया धम्माणुया धर्मइष्ट आद देई सुसीला सुव्वयागुण उवाई पिछाणीहै, सुयगडांगमांहे धर्माधर्म पक्ष दोय तींहां धर्मपक्षमांहै साधुश्रावक दो आणीहै, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो साधुनें श्रावकगुणव्रतासुंवखाणीहै, ३९, दशमीकालिक छठे अध्ययन आठमी गाथा अठारे थानक जुदा जुदा किया जाणजी, सोलमाथानकमांहे गृहस्थी घर बैठे ताकूं अनाचार मिथ्यात अब्रह्म प्राणहाणजी, आधाकर्मी दोष थाय जाचकादी अंतराय क्रोधवधे अपूठी कूशीलब्रतहाणजी, इत्यादिक दोष घणा वैठा कह्या तीनजणा तपसी जरानें रोगादी हुसुर ठाणजी, सवइयो

सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो दशमीकालिक देखो तजपखताणजी ४० बृहत्कल्प कह्यो तीजे उद्देसे अंतर घरमांहि सतरे बोलकरणा वीतराग पालीया, अंतर घरको खोटो अर्थ करीनें निह्नव सठ रसोडादिक घरकह बोघांनें बहकालिया, अंतरघरमें तपसीनें जरारोगी थांने सतरे बोल करणा कह्या ईमें आगेचालीया, दशमीकालिक सुयगडां-गबृहत्कल्प ओर सुत्रांमें वरज्यो पिणदेखे नहींवालीया, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो अज्ञानमें खू-ताजिणां अज्ञानी सरणालिया, ४१ छठे गुणठाणे मनपर जब कषाय कुशील छद्मस्थ रागसहित करी चूका कैवैहै, चारित्रनियंठायोग हेतु आदिककेतापावै भवकेताकरे संसारमें केता रैवैहै, लारे पांचे तेतो भगवंतमें बतावो सब इम पूछयां मूढ सफा जुबाब नहीं देवैहै, भगवंत जीवदया ऊपरें अध्ययन देख परिक्षातो करे नांही बह-तांलारेवैवैहै, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो कल्पातीत जिनकी बराबरी लेवैहै ४२ जानु परिमांणे नदी उतरे धर्म कहै पाणी संघट्टासुं आहार देखी टल जावे है, कमाड निखेधी अने किवाडिया जडावैसठ जि-नकै उपर एसी कुजुगत मिलावै है, लडकी वापकी केई गर्भवंतीको नामलेय षट्मासवध्यां उभ्यां वैठां दोषथा-वैहै, इमकहे ज्यांनें केणो याको परमाण किसो किवाड किमाडी केता हाथको कहवावै है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो निन्हवकपटकरी बोघानें बहका वैहै ४३ इसाभद्र श्रावकानें श्रावकां वंदनाकीनी भगवंत अ-रूबरु जिन नहीं पालिया, पोष्कलीजी संखजीरी हवेलीमें आया जिहां उपलाजी वंदना कीनी आसणादि दियालिया, संखजीनें पुष्कलीजी पोसामांह वंदनाकीनी कह्यो चालो

आहार करो संखजी नहीं हालिया, भगवतीमें बहुभाव ज्ञानी दिया फुर माव वंदना करी लियां पछे अपराध खमालिया, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो अंबडने सिष्यां वंदनाकीनी उवाईमें चालिया ४४ उत्तराध्ययन अध्ययन छावीसमें छकारणसुं आहार करणो कह्यो नाम न्यारा २ धारजी, वेदना वेयावच्च चैत्य इर ज्यांने संजमठाये जीतवनें अर्थ छठी धर्मनो विस्तारजी छकारण छोडणा वतायो वीतराग देव ज्यांरा न्यारा २ नांम करत उच्चारजी, रोगनें परीषह जीवदया ब्रह्मचर्य अर्थ तपहेत शरीरत्याग कर दे संथारजी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो खाणेमें धर्म होतो क्यों तजे अणगारजी ४५ इति ऋषि कृपारामजीकृत सवइया संपूर्णम् ॥

अथ भावनाविलास लिख्यते ।

प्रणमी चरण युग पासजिनराज जूके विघनके चूरण पूरण है आसके, दृढ दिलमांझि ध्यांनधर श्रुत देवताको सेवेतें संपूरत है मनोरथ दासके, ज्ञान दृगदाता गुरु वडे उपगारी मेरे दिन कर जैसे दीपे ज्ञान परकासके, इनके प्रशाद कविराज सदासुख साज सबीए वनावत है भावना विलासके १ प्रथम द्वादश भावना नामानि, प्रथम अनित्य भाव दूजो असरण पुन तीजो है संसार चोथो एकत्व अत्यंत है, अन्य भाव पांचमो अशुचि भाव छठो जांनि सातमो आश्रवसुनि महादुर दंत है, आठमो संबर भाव निर्जरा है नवमो जुदशमो है धर्मभाव मानत महंत है, लोकको स्वरूप राज इग्यारमो भाव पुन

बोधि दुर्लभ भाव बारमो सुतंत है २, अथ प्रथम अनित्य भावना कथन ॥ दोहरा ॥ जितेक पुद्गल मूरती, उतपति विपति सुधर्म्म, थितिधर चेतन विनु अनित्य, यहै जैन मत मर्म्म ३ सवइया इकतीसा, सांझको सो फूलिबोरे फूलि बोरे कहा फूल्यो फूल ज्यूं दिनेक फूलि फिर कुमलाई है, रूपको स्वरूप सुतो राजसुर चापकोसो देखत अनूप अति छिनमें विलाई है, कुस अणी परबणी ओसकी कणीसी आय वायकी झकोर लगेकेसैंठहराईहै, खेहके वनापगेह धांम लगे होतखेह खेहहीते भई देह खेहमें समाई है ४ मेरूगिरि सिरपर धराकर धडधडै अेसे भगवांन बली तेइ काल छले हैं, बारेचक्क आप वस कीनें राज एक छत्र चक्रधर गिरिधर हलधर दले हैं आगम समुद्र केजू आरपार पैरवार गणधर वेद धाता तेई काल बले हैं, रूईके पहल ऊडै ताकी बूझै कोनवात लीनीतो अनिल वडे दंताबल चले है, ५ कोट-गढ देशगांम उत्तम आनूपधांम सुरधाम सोभाहीतें सोभे जे विशेषतैं, गजवाजि साज राजकों ताहर जवाहर कुटंबको परबार पार नहीं पेखतें, विविध विसात आथ आवत कछून साथ छूटे हाथ चलत है आये आयू लेखतें, देखत हमारे आगे खलक ज्यूं चली जात हमही चलेंगें एसे खलकके देखतें, ६, अथ दूसरी असरण भावना कथन, । चौपई । जीवद्रव्य पुद्गलमें रत्ता, आउ करमथिति जवलौं सत्ता, थिति पूरण भये कहिये मरणा, वादिन कोईनांही है सरणा ७ सवइया ३१, मंत्र तंत्र यंत्र जरी धरीहे रहत धरी धरी कंही होत न वचाउंकहूं प्राणको, दौडधाव औषध उपा वकछु चलेनांहि दीप ज्यूं उल्हाय जात पेर्‍यो पवमांनको, इनहीतें देखतही रोयरहे

खगकुल पडत अचिंत्यो आय दाव ज्यों सींचानको, छार सब आर जार राजमाया मोहजार अंतकाल सरण भजन भगवानको, ८ पवनके पूतसे प्रभूतजो सपूतपूत कहातात तारेंगेकी तिन्हों तात तारे हैं, चक्रधर सगरके तनय हजारसाठ निमित्तके आये देख पलमें प्रजारेहैं, द-रबकी कोडाकोडी अरब खरब जोडी नंदराजजूकूं कहा मौततैं निवारेहैं, अजर अमरराज महाराज सुखकाज जप्पजगदीश जिन्हें पतित उधारेहैं ९, हंसगति गामनीजू देहदुति दामनीजू कामकीसी कामनीजू निरुपम नागरी-नमिराजजूके प्यारी अेसी धुहजार नारी रूपकी समारी एक एकहूं ते आगरी, निवार्‍यो न दाघ जोर चंदनकी कीनी खोर कंकनको सुण्यो सोर उपज्यो वैरागरी, मिथु लाको राजछोर मोहकेजू बंधतोर नमें इंदकर जोर अेसो धर्मलागरी, १०, अथ तृतीय संसारभावना कथन। दोहा। लखचोरासी चोहटा, व्यापारी तहां जीव, लाभ अलाभ है शुभ अशुभ, पुरशंसार सदीव ११ सवइया ३१ सा-जलथल पादप पावक पवमांन पुन नर तिरि नारक अमर अव तारीहै, विकलकी कुलजाति जीवकी अनेक भांति असी चार लाख जोनी विविध विचारी है, यामें गति आगति अनंत वेर करै जीव नांमयूं संसारको अर्थ अनु-सारीहै, भ्रमत करम भाय रहतचरीके न्याय कबहुकरी तो जीव कबहूक भारीहै १२ चार गति चक्रवार धमत नपावै पार जीवकर्म्मचालमें अनंतकाल गयोहै, विषयक-षाय मदमोह सुरा मतवारो जडतैं नहोत न्यारो जडगुण लह्योहै,कितहून ठहरात अधहै उरधजात पालज्यूं वघूलाको अथिर परिणयो है, याहीतें संसार भाव धरहुचेतनराव अपनो सुभावगहि जोति रूप जयो है, २३ कबही उतंग

अंग होत है मतंग चंग कबहु पतंग भृंग कीटक अकार जू, कबहुक धनी निरधनी सुखी दुखी जीव कबहुक वेद्विप्र कबहु चमारजू, जेसें नट एक भेष थटत अनेक थाट तेसें एक जीवके अनेक अवतार जू, धन्नधन्नाशालि भद्र थूलभद्र जंबू वडा त्यागी जे संसारकेजू अभय कुमार जू १४ अथ चतुर्थ एकत्व भाव कथन ॥ दोहरा ॥ जडतो करताहे नहीं, करता चेतनराव, जो करता सोइ भोगता, यह एकत्व स्वभाव १५ सवइया ३१ सा, कौन तेरे माततात कौन तेरे अंगजात कौन भ्रात जात तेरे सब है सबारथी, अरथ खटाऊ परलोकके वटाऊहोतधनकूं वटाय लेत मिलके धनारथी, ताकी गति कोन बूझे स्वारथके मोह बूझें भवमें अरूझे कोऊ नांही परमारथी, चेतन विचार चित्त इकेलोतो तूंहेमित्त उवट चलत आप आप होऊ सारथी १६ एक असहाई आप करत है पुन्य पाप करमकूं मेले आप आपही प्रमाथीजू, स्वारथके काज सब मिलत समाजराज वेद्नीके उपजत न को संग साथी जू, अंतकाल आवै जब आखर इकेले सब कहा भयो काहूके जू बहु रथहाथी जू, एक भाव मनधर माया लोभ परिहर भयेजू वैरागी त्यागी अतिथि अनाथीजू १७ तेरोतो न कोऊजीव तूंहिपैनकाको यांहि आयो है इकेलो तूं इकेलो फिर जाइवो, काहेकूं विराणेकाज निघट कपटराज रहत है आठोंयाम धंधेहीमें धाइवो, दुकृत सुकृत दोऊं साथिहौहे तेरो सोऊ और केनकोऊ पुन्यपाप फल पाइवो, करेहैं हरेहैं आप इकेलोही पुण्यपाप जीव असहाई एक वहै ध्यांन ध्याइवो १८, अथ पंचम अन्यत्व भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ न्यारो पे पुद्गलबंध्यो, संसारी जियद्रव्य, ज्ञानी यूं न्यारो लखै, दूध

दही घृतगव्य १९ सवइया ३१ सा, पुद्गलजीव काल धर्म अधर्म्म नभ एईषट्द्रव्यजू अखंडरूप जानीयै, पुद्गलमूर्त्तिक और है अमूर्त्तिक जीव द्रव्य चेतन अजीव पांच मानीयै, अपने स्वभाव धरि रहेहै सबेही द्रव्य यद्यपि मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीयै, योंही अन्य भाव जान राजजीव न्यारो मांन निहचे निगमबां न संसय न आनीयै २० न्यारो धन धाम गांमठांम कांम सब मात तात भ्रात न्यारा अंतकाल पाइकै, राज अविनासी लख चोरासीको वासी कहूं होत न उदासी जगवासी सद्भाइकै, मिथ्या मत छक्यो वक्यो मिथ्या मेरी २ सब ढक्यो है विवेकरवि तमो घनठाइकै, बाजीकूं संकेलि जैसें वाजीगर ऊठजात पल एक खलककूं ख्यालसो दिखाइकै २१ संध्याकालि तरुडार वैठे आय खग कुल राति बसि प्रात ऊठि न्यारे २ जात है, लेतहै वसेरा रातपंथी ज्यूं सराहवीच जोरत है प्रीतजोलूं होत न प्रभात है, गइयानके संग ग्वाल डोलत है सबदिन आवत प्रदोष गेह इकेलो दिखात है, ऐसें अन्यभाव मन आनियेतो राजकवि ज्ञानके उद्योत होत अज्ञान विलात है २२ अथ अशुचि भावना षष्टम कथन, ॥ दोहरा ॥ अशुचि मिले यह ऊपजे, अशुचिहि वंध्यो पिंड, जेसी माटी होइहै, तैसोही हे भंड २३ सवइया ३१ सा, मांस ह्वाडचामनस मेद्गुदरसवस मज्जा केस शुक्र रेतयहै पिंड रच्यो है, शुचिको न अंस परसंस याकी करे कोन चामको सामेला घेला मैलहीसूं मच्यो है, महारूठो झूठो दूठ छिनमें अपूठ होत लंपट निपट लोभी लालचमें लच्यो है, ऐसो राजदेह यांसूं कीजिये कहा सनेह यांसूं नेहकर नर कहो कोन वच्यो है, २४ अंबर अनूप

मृगनाभिघनसारघस कुंकम चंदनघोर खोल आछी कीजियै, चोवा मैदा जवादिसुं चरचित चारुचित्र अरगजा संगचंग नास सुख दीजियै, चंबेली चंपेल तेल मोगरेल केवरेल तिलौंछि अंगोछि आछे सौंधि राजभी जियै, छिनक सुगंध गंध फिरहोत है दुगंध पिंडया अपावनसूं केसेंधू पतीजियै २५ सरस आहार सार कीनें चार परकार षट्रस सुखकार प्रीतकर पोखीहै, आछे २ अंबर अनूप आच्छादन कीजै तोष जो न राखिये तरतीकमैं रोखीहै, नरके हैं नवद्वार नारीकै इग्यार हुजु वहति अशुचि जेसें मंदिरकी मोखी है, मलहीसुं मंढी गढी काचकीसी कुंपी किधुं अरंडकी झूंपी ऐसी काय पर घोखी है, २६ अथ सप्तम आश्रव भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ कारण जोहे पापको, जाकर आवत आप, तासो आश्रव कहतु है, दे आतमकूं ताप २७ सवइया ३१ सा, प्राणीको संहार मृषा वाणीको उचार पर द्रव्यकोजू अपहार दूर परि हरिये, नीके २ कांम नीके काम सुख दुख हेतु फीके होत छिन मांझ धोखे विनुधरिये, सचित्त अचित्त पुन बाहिर अंतरंग निबंध हेतु परिग्रह दुहनतें डरिये, पाप नीर पूरके प्रवाहमग आश्रव ए इनहिसुं प्राणीनिके पिंडसर भरिये २८ वडे २ वारण हरावण एरावणके फरसके बसधस फसति है फंदमैं, दमकि कर-तदौर वनिवनि चिहुं ओर हिरण श्रवणवस पडत पुलिं-दमें, लीन जे अगाध जल ऐसै मीन माहाबल रसनाके रसभरे गिरे दुख धंदमें, जरत पतंग दृग रंग दीप ज्योति-संग बधमरे नासास्वाद अलि अरविंदमें २९ विषम विपाक कटु विरसविरूप अति विषतरुकैसै फल विषय विलास है, क्रोध मांन माया लोभ करत चढे न शोभ चौगुनै

कषाय चार दोषके निवास है, राज देश भोजन त्रियाकी वात विकथाए अविरति क्रियायोग मिथ्याकर्म्म पास है, आश्रवकी भावनाए भाव हुभविकराज इनके निवारतही ज्ञानको प्रकाश है ३० अथ अष्टम संबर भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ ज्यूं कुल आगम राहुसिर, रुके पालके बंध, त्यूंही आश्रवरो किये, संबर भाव सुसंध ३१ सा, चरण धरण धरे जीवको यतन करे बोलत वचन असे रागरोषना वढै, भोजन विशुद्धि गृद्ध होय वो नरसनाके ग्रहन धरत वस्तु मन दयामें मढै, कफ मल मूत्र विट् श्लेषमको डारिवो जु अैसी भांति डारे जेसें जंतु तामें नागढै, मनवच काय तीनूं गुपत करत नित इनहि निश्रेणी साधु मोक्षधांम जे चढै ३२ प्राणि बध मृषावच अदत्त मैथुनरुचि परिग्रह लोभमूल पातिकको पोषहै, इनको निरोध सोउ संबर वखानियतु इह सुखहेतु जांनि संबर संतोष है, संबरसुं प्रीति जाकै सोऊ ऊपदेश योग ओरनकूं उपदेश वृथा कंठशोषहै, मोक्षपुरगोनविच संबलसो संबरकै सेवतही प्राणीगण जीवतही मोषहै, ३३, संबरकूं तिर करकिते जीव गयेतिरं तारेगें कितही आगे अब धुतरतुहै, संबर समान और ज्ञानविज्ञान कछु धरमीहै सोऊ जोऊ संबर तरतुहै, संबरको वकतर सुदृढ कस्यो है तन तासुंतो करम अरि कहुं नलरतुहै, दवदंत मेतारिज धर्म्मरुचि मुनिराज गजसुकमालजेसे पातक दलतुहै ३४ अथ नवमी निर्जराभावना स्वरूप कथन, दोहरा, तासुंकहियेनिर्जरा कर्म्मजुआलमकीन तप जप खपकर आपवस जीर्णकरे प्राचीन ३५ सवइया ३१ सा, कसकै लंगोट कटितट सुलपेट चाम घांम शीत काटतुहै ओटहै पहारिकै, एकासन आठोंयाम बैठतहै डीठिसांधि जारतहै पीठ पांच

पावक प्रजारिकै, ऊरधचरण अधोवदनहै मौनग्रहि नगन रहत चीर वसन सुडारिकै, ज्ञानकै संयोगविन निर्जरा अकामयह ज्ञानविनुहेतुनांही होत निसतारकै, ३६ जिते जगवासी जीव थावरजंगम जांनि अज्ञानीकूं होत वही निर्जरा अकाममें, रोगसोग आधिव्याधि विपत्त वियोग-दुख भूखप्यास तापशीत घुमरेट घांममें, इत्यादिक कष्ट-कर सहसवरसमांझि निर्जरा अज्ञानी करे ज्ञानी इकया-ममें आपवस त्यागीसहै सकलकर म, द है छिनकतूं मि-लहै, शिवगति धांममैं ३७ प्रायश्चित्त विनय सिज्झाय ध्यांन, का उसग्ग वे यावच्च नीकी भांति कीजै साधुजनकूं, अंतरंग तप खट्भेदके वपानीयत करत विमल यह सदा निज मनकुं, उपवास ऊनोदरी वृत्तिको संक्षेप पुन काय क्लेस रसत्याग लीन भावतनकूं षट् यह ब्रह्मतप उभय मिलै द्वादश निर्जरा पावक शम पातकके वनकूं, ३८, अथ धर्म्मभावना दशमी कथन, दोहरा, शुद्धधर्म पदको अरथ पंडित बूझे मर्म भवजलमें यह जीवकूं धारत सोही धर्म्म ३९ सवइया ३१ सा, दानशील तप भाव चारोंही विराजै पाउ विमल विज्ञानदृग दयामुख दाखीहै, सो-भाको समूहजाको विसद विवेक पूंछ निश्चय व्यवहार सार उभै श्रृंगसाखी है, संपदाको हेतु दुहुं लोकनमें सुख देत अमृत श्रवतधार संत वच्छ चाखीहै, अेसी कामधेनु चरत विपततृण राज तेरे चोर नितें नीकी भांति राखीहै ४० धरम अरथ काम तीनूंवर्ग हितकाम उत्तम उदार सुविचार मनठानी यै, चारू गतिमां झिसार मानवको अवतार साधन त्रिवर्गको चतुर चित्त आनीयै, तीनोंमें प्रधान बुद्ध कहत धरम शुद्ध अर्थकांमको जुधर्म्म कारण पिछानीयै, राजनर भव पाय धर्म्म जो करत नांहि

पशु ज्यूं विफलताको जियत बजानीयै ४१ मांनी जिन-
वांनी जिन्हीनीके जाण पहचानी ज्ञानी धम्मध्यांनी
जिन्हें तृसनाकूं तोरीहै, जिनोंकी अमूढता नगूढा है न-
वोढाजेसें समिति आरूढ प्रौढा जैसी प्रौढा गौरीहै, ले-
तन अदत्ता अभैदांन सुंजूरत्ता मत्ता कबहूं नहोत तत्ता
मायाकूं मरोरीहै, धर्म्म भावधारी असे धन २ नरनारी
इला पुत्र भरतसे धम्मरथ धोरीहै, ४२ अथ इग्या-
रमी लोकस्वरूपभावना कथन, दोहरा, नांयहकाहूनें
धस्रो, काहू धस्रोन आहि, स्वयंसिद्ध यह लोकहै, देखे
ज्ञानीताहि ४३ सातराज ऊरध पाताल सातराज पुन
चौद राजलोक गती आगत है। जीयकी, चौद राजलो-
ककी सुथिति भांति अैसी आहि उभय हाथ टेके कटि
प्रति जेसे तियकी, यांमें अैसी ठौर कहूं नांही, जहां आ-
तमकों नहींभई पराभूति जरा मृत्यु भीयकी, जाति
जोति कुलथान फरसे अनंत वेर दीव्यदृष्टि देखे ज्यूं वि-
लोकदृष्टि हीयकी, ४४, देवर भतीजो भ्रात काका सुत
न्याती पुन एक बालसंग षट्संबंध सहाते हैं, भ्रात तात
सुत भरतार दादो सुसरसु षट्ही पुरुष साथ तातके
सुतांते है, बंधव वधू सौति सासू बधू दादी जननी जु
इतेतो संबंध निजमातहीके भांते हैं, वैस्या सुतासुत
जायो कर्म्म वस, सो उब्याह्यो मातसुता सुत जायो कर्म्म
वसिसो ऊब्याह्यो मातसुत सुताराज अठारह नातेहै ४५
अर्थः कुबेरसेन बालकसें ६ नाता देवर लगे भर्तारका
भाईके नाते १ भतीजा लगे भाईका बेटा होणेसें २ भाई
लगे सगीमाका जन्मा हुआ इस नाते ३ काका लगे बा-
पका भाई होणेसें ४ बेटा लगे शोकका बेटा होणेसें ५
पोता लगे सो सोकके जणे बेटेका बेटा होणेसें ६, अथ

६ कुबेरदत्तसें नाता, भाई लगे एकमासें दोनूंही जन्मे इसवास्ते १ बाप लगे माकापती होणेसें २ शोकका पुत्र होणेसें बेटा लगे ३ आपइससें परणे गई इस नाते भ-र्त्तार लगे ४ काकेका बाप होणेसें दादा लगे ५ देवरका बाप होणेसें सुसरा लगे ६, अब ६ नाते कुबेरसे नासें, सो संबंध दिखाते हैं, भाईकी बहू होणेसें भोजाई लगे १ दोनों एकभर्तारकी स्त्री होणेसें सोक लगे २ पतीकी माहोणेसें सासू लगे ३ सोकके बेटेकी बहू होणेसें बहू लगे ४ काकेरी माहोणेसें दादी लगे ५ इसके पेटसें पैदा हुई इस संबंधसें मालगे ६ इसतरे १८ नातेकी कथा जं-बूचरित्रमेंहै इस लोकका ये स्वरूप है स्वारथही भाई विन स्वारथ है शत्रुनांई माता विनुस्वारथ असाताकी जोदाताहै, आपसमें राजकाज भिडे गजराजजेसें भर-तरु बाहूबल काहू कोन भ्राताहै, चुलनी जलायो लाख मंदिरमें ब्रह्मदत्त विरतंत ऐसोतो सिद्धांतमें विक्षाता है, लोकको स्वरूप ऐसो ज्ञाता चित्त मांझि भाई दुनियांकूं छार यार कहायामें राताहै ४६ द्वादशमी दुर्लभ भावना कथन, दोहरा, मणिमाणिक सुतमानिनी भोगसंयोगअ-नेक ये दुरलभ नहीं जीवकूं दुरलभ समकित एक ४७ सवइया ३१ सा, थलभयो जलभयो अनिल अगनिभयो तरु पशु पंखीभयो कलभ कुरंगरे, देवभयो दानव भयो नारकी निगोद्भयो जलथल नारीभयो भीषण भुयंगरे, नरभव धरम श्रवण जिन वचरुचि, व्रत धरवेकूं धीर सकति अभंगरे, अेऊचार सुविचार दुरलभ राजसार शिवसुख साधनके उत्तमहै अंगरे ४८ अरे नर नर भव पायवोन, वेर २पायो है तो प्रीतिकर वोधि दुरलंभसु, देव गुरु धर्म्मकूं परखनीके लीजीयत देखियत दरशण रुचि

रहै दंभसु, निरंजन देव देव गुरु निरगंथ सेव दयामूल धर्म्म सदा देख निरारंभसुं, ज्ञानकी जंजीर जर जकर पकर करि बंधमन गजराज समकित थंभसुं ४९ देव गुरु धर्म्मको संयोग अंग चंग अति पायोतो प्रमाद एक पल-हीनकी जियै, चवद पूरवधारी ताहूकी जो होतख्वारी बहुल संसारीकौं निगोद मांझि दीजियै कोडी काज हारियै नकनककी कोडि कहुं वेचिकै मतंग तुंग कहा खर लीजियै, मिथ्या मत विषपान कीजियै नराज कवि बोधि सुधारस श्रुति संपुटकै पीजियै ५० द्वीपयुगज मुनि शशि वरष जादिन जनमें पास तादिनकीनो राजकवि यह भावना विलास ५१ यह नीकै कह जानियै पढियै भाषा शुद्ध सुखसंतोष अति संपजै बुद्धि नहोय विरुद्ध ५२ इति श्री भावना विलास पंडित राजसिंह मुनिकृतं संपूर्णं ॥

तीतर व्याल विलार चिरी मकरा मकरी इन मांझि फसेहैं, घूस छिछूंदर यूं छविमां कण मूष दिवारण मांहि धसेहैं, तैंजु कियो अपणे रसकुं अपणे २ रसते हुरसेहैं, जाघर कुंजु कहै अपणा घर ता घरमें घरके ऊवसे हैं, १,

---

अथ पांच एक पक्षवादीयोंका मत, छठा सर्वज्ञस्याद्वादीका सिद्धांत स्वरूप वर्णन चरचा लिख्यते ।

अरिहंत सिद्धसूरि नमूं उपाध्याय मुनिराज पंचपर-मेष्टी नित नमूं सारे आतमकाज १ जिनवरवांणी सर-स्वती मतिविस्तारणमाय तिहुलोकहितकारणी प्रभु बांणी सुखदाय २, गुरुगुणसागर आगरू नागर नवल अनूप कृपा करी मुझ तारियै, पायो जैनस्वरूप ३ प्रणमुं गुरुपदकमलकूं स्याद्वादको भेद पंचवादी चरचा कहूं

श्रोता सुणो उमेद ४, अथ सवइया ३१ सा, केवलीको मारग अनूप भूप रूपसम ससनय वैणनैण अंतर खुलत है, काहूकोन पक्षपात मिथ्या मत होत घात मत मतांतर जेसें कांटेमें तुलत है, निर्वध्यबाण सुखदान भव्य जीवनके सुणत हृदय बीच अमृत घुलत है, मनमें विलोक यह तिलोकके भव्यनके सुत्रके आराधेविन चिहुंगति रुलत है, १, सुणे नहीं वाणी मिथ्या मतचित्त आणी मोह मदरामें अंध होय, रह्यो सटसो, खेंचत है पक्षपात मांने मिथ्या मत साच होय रह्यो एसे जेसे अरककी लटसो, काहूकै बदन मांहि होत पील्यो रोग जब सब रंग पीलो दीखै सत मांने झटसो, कहत है तिलोक सोध बोध बीज समकित स्यादवाद मांने सोहीलहे भव नटसो, २, अथ कालवादीके वचन, काउकहै कालवस सकल द्रव्य न भाव कालहीतें होत पूत नहीं मात तातको, कालहीतें नारी जुगर्भधरै जनत पूतकालहीतें बोले चाले काल करै वातकों, कालसें जुवान पुन कालहीतें वृद्ध होत कालहीतें मरकर भ्रम जात २ कों, एकजिन मतनय जांनेविन जगजीव कहत है तिलोक लोक खेंचे पक्ष पातको, ३, कालहीतें दरखत होत है पतंग पण कालहीतें जीवपण रहे पात पातको, कालहीतें फूलखिरे फल परिपाक होय कालहीतें रसफेर होत भांत भांतको, कालेजिन चक्रवर्त्ति वासुदेव बलदेव बेहुंरुत कालचक्र भिन्न दिनरातको, एक जिनमत नय जांनेंविन जगजीव कहत है तिलोक लोक खेंचे पक्षपात कों, ४, अथ स्वभाव वादीके वचन, कहत है स्वभाववादी कहा करसके कालविनांही स्वभाव कोऊ वसतन जगमें, महिलाकै मूंछ नहीं वांझण जणे बाल रोम नहीं

करताल। हीवु नहीं रगमें, जात जात दरखत पांनफूल भांत २ थलचर थलपरे पंखी ऊडे खगमें, एकजिन मतनय जाणेविन जगजीव कहत है तिलोक लोक भूले पग २ में, ५, कांटे बोर बंबूलके कोण करै तीक्षणता। हंसकी सरलता कपटाई वगमें, विनांही स्वभाव मोर पंखकोण चित्तरता कोकिलाको सादवर खरभंगकगमें, विषधर सिरमणी विष हरै ततकाल पवनको चलभाव थिरभावनगमें, एक जिनमतनय जाणेविन जगजीव कहत तिलोक लोक भूले पग २ में, ६, पृथवी कठिन पुन शीतलता जलमांहि तुंवति रै ऊंठ डूबै झाल उठै आगमें, सूंठ उपशमें वाय हरडविरेच करे रवितपे शशी सील सुखन नरकमें, षट् द्रव्य छऊं काय भावादिक भाव सब विनांही स्वभाव कोउ होत नवरगमें, एक जिनमतनय जांणे विन जगजीव कहत तिलोक लोक भूले पग २ में, ७, अथ भवितव्यता वादीके वचन, भवितव्यवादीकहै सुणरे स्वभाव मूढ भवितव्य विन कोऊ काज न सरत है, अंव मोर वसंतमें लागत है केई लाख केई खिरे केई ढांके अंबके परत है, उदत तिरत पुन भ्रमत जंगलविच करत जतन कोड भावी नाटरत है, एकजिनमतनय जांनेविन जगजीव कहत तिलोक लोकपचके मरत है, ८, होत वके बसविन चिंतव्यो मिलत आय विनाही जतन होनहार नट रत है, ब्रह्मदत्तचक्री नैण फोडा है गुवाल तव सोले सहस देवसें काजन सरत है, झटका लागत केई रण मांहे वचे नर नियतके वससास धीरन धरत है, एक जिनमतनय जांणे विन जगजीव कहत तिलोक लोक पचके मरतहै, ९, कोकह सकत है कोयल केसें रहे प्राण, पारधी

तान्यो है तीर सींचाण फिरत हैं, पारधीकों नागडस्यो सींचाणेके लागो बाण उडगई कोयल सो नियत करत है, जनम मरण जरा व्याधी रोग सोग जोग सुख दुख भूखादिक नियत धरत है, एक जिनमतनय जांणे विन जगजीव कहत तिलोकलोक पचकै मरतहै १०, अथ कर्मवादीके वचन, नियत स्वभाव काल तीनूंही जुगनी ताल कर्मका अजब ख्याल कर्म्म बलवान है, कर्मथी नरक तिरयंच नर सुरगति कर्म्मके वस त्रिहुं लोकही हैरान है, कर्म्महीतें बुद्धिवंत कर्म्महीतें ऋद्धिमंत कर्म्महीतें बुद्धिहीन मुरख अजान है, कर्म्महीतें निरधन फिरत है वन २ जन २ पास जीव मांगे मुनिथान है, ११ कोउक पृथवी जल अगन अनिल काय कोउक वनसपती फल फूल पान है, कोउ पोराज लोकमें किरमा अलस्या कीडी धनेस्या जूं लीख टीडी होत विकलान है, कोऊखर करी हरी रिच्छ कच्छ मच्छ खग स्याल व्याल नोल कोल कर्म्म सेती स्वानहै, एक जिनमतनय जाणे विन जगजीव कहतति लोकलोक भ्रमत अज्ञान है १२ कोउ महा सुंदर अनूपरूप तेजवंत कोउ कुष्ठीकूबडो सो कुसीयोकुस्वान है, कोउच्छत्रपती राजा सेठ साहूकार लोक कोउ दलदरी नीचलोक चोर खांनहै, कोउक सीतल पुनवांन लोक आणमांने कोउअक क्रोधी लोक मांनतन बान है, एक जिनमतनय जांणेविन जगजीव कहत तिलोक लोक भ्रमत अज्ञान है, १३, कोउक पहरतहीर चीर जरी साल जोडी कोऊक फाटे टूटे पटहीन पान है, कोउक आरोगे मेवा क्षीर खांड मिसटांन सीरो पूडी सीरणी अनेक पकवान है, कोउकूं मिलेन कुटी कोदराकी राब खाटी सूखा लूखा टुकडा न मिले भाजी पान है, एक

जिनमतनय जांणे विन सब जीव कहत तिलोक लोक भ्रमत अज्ञान है, १४, कर्म्महीतें आदेसर जीकूं दुवादस मास अंतराय रही नहीं मिल्यो अन्नपान है, वर्धमान स्वामीजीके पगपर रांधी खीर करकै गुवालेरीस खीला रोप्याकान है, तीर्थंकर चक्रवर्त्ति हरीहर हलधर मंडलीक तलवर खांन सुलतान है, एक जिनमतनय जांणेविन सब जीव कहत तिलोक लोक भ्रमत अज्ञान है, १५, अथ उद्यमवादी वचन, कहत उद्यमवादी कर्म्मसें न होत कछु होत है उद्यम कांम उद्यमही सार है, उद्यमथी शुभाशुभ कर्म्म सुख दुख होत उद्यमथी नया चेला सीखत तइयार है, लिखत गिणतगीत नाद चित्र उद्यमथी हाट खाट पाट पट सरब तइयार है एक जिनमतनय जांणे विन सब जीव कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १६, लेउ धातू तिल्ली तेल दधी लूणी पटमेल उद्यमथी भिन्न होत धातुनको खार है, उद्यमथी हलखडै नाज वोवे धरतीमें उद्यमथी काट खला मांही दैतडार है, उद्यमथी तुस दूर करके पीसत पुन उद्यम रसोईकर खाय नरनार है, एक जिनमतनय जांणेविन सब जीव कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १७, उद्यमथी तपजप नित्तनेम पांनध्यांन गृह। वास छांडकर होत अणगार है, घन घाती दूर होत तात है उद्यम कर्म्म अंगज कहीं जै तास कर्म्म किरतार है, उद्यमसें रंकराव धनधान्य योग भोग गढकोट सबकांम उद्यम प्रचार है, एक जिनमतनय जांणेविन जीव सब कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १८, अथ सर्वज्ञ स्याद्वादीके वचन, खेंचाताण करत है पांचों वादी भिन्न २ जाणतन नयज्ञान कौनतंत सार है, खेंचे कोउ एक पक्ष

जाणियै न दक्षताको सुद्धनय जांणेविना जाणे जो गमा रहै, किसी भांत झूठो नर कहीं जै गुरूजीवाको ताहिको द्रष्टांत कहो होत निसता रहै, एक जिनमतनय जांणे विन सब जीव कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है,१९, जेसें काउ अंधलानें हाथी देखवाद गिण्यो पांव जिण ग्रह्यो तिणथंभ जैसो दाख्यो है, सूंड ग्राही तिण कह्यो दगल्लकी बांह जेसो पूंछ ग्राही कहे नाग कान सूप भाख्यो है, दंत ग्राही मूसलसो पेट देख चोतारेसो कहत है तिलोक लोक एक पक्ष राख्यो है, आप मन साच कहै सूझतेके भाव झूठ एसें ज्ञानी एक पक्ष वाद दूर नाख्यो है, २०, सुणके द्रष्टांत शिक्ष करत प्रश्न एसो आगे पीछे छोटो वडो कोन इनमें ठानिये, गुरु कहे सांकडी सेरीमें चले पांच नर आघे पीछै छोटो वडो यांमें नहीं जाणिये, रवि शसी जीवा जीव सासू बहु बाप बेटा पहली पीछै पक्ष इंडो केसें पहला मानियै, आगे पीछे छोटा वडा तिलोक कही जे केम एकेकी वडाई कर पक्ष नहीं ताणिये, २१, जेसें पांच अंगलीसें लेते हैं कवलमुख टेक आणी एकवाद दैणी नाभिडाइके, सेना मिले सर्वही रणांगण मांडेजिम सुभट समूह मिल तीतत पडाइकै, धनुष पणछ तीर न्यारी रहै जबलग तबलग मारे नहीं खेंचेंना चढाइके, एसें पांच मिल्यांविन काम नहीं होत कछु कहत तिलोक एक दीजै नवडाइकै २२ तंतु समभाव पटकाल अनुक्रम होत नीपजै नियतवस विघन अनेक है, उद्यम हीते तंतुवाय भुक्तादिक भोगे कर्म्म पांचुं पदारथ मिल्यां होतकाज एक है, नियतीके वस हलुकर्म्मी हुईनें जीव निकल्यो निगोद सेती पुन्यको विशेक है, मानुष जन्म पाय सदगुरु पास

जाय कहत तिलोक वैण सुणत विवेक है, २३, भवथित तणो परिपाक भयो चेतनके पंडित वीरज उल्लसियों तिणवार है, भव्यके स्वभाव शिवगत गामी मुनिवर तपस्या करत अति धौतकर्म्म खार है, सूर वीर धीर मीर तुरत भौजलतीर केवल द्रसनकर टाले अंधकार है, कहत है तिलोक ऋषि पांचु पदारथ जोग शिवपुर जावै जीव होत जैजैकार है, २४, सम्वत एकोनवीस ऊपर गुणतीस वैशाख कृष्ण दशमी तिथ दिन गुरुवार कै, नियत स्वभावकाल कर्म्मको उद्यमवाद पांचोंहीको मतपक्ष कह्यासु विचार कै, आज्ञाविरुद्ध होय मिथ्यामें दुष्कृत तस्य सुरतायामें चूक जाणो लीजोथे सुधारके, कहत है तिलोक ऋषि स्याद्वादपचीसी कथी निर्मल होय मती सुणविसतारकै, २५, इति पंचवादी एकांत पक्ष निराकरण स्याद्वादस्वरूपवर्णन जैनधर्म न्यायानुसार संपूर्ण ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः अथ मध्यमंगलाचरण ॥

अरिहंत बारागुण सिद्ध आठ मूलगुण सूरिःके छत्तीस गुण शोभाकर राजे हैं, उवझाय शोभते पचीसगुण दु-निवीच साधु मुनिराज गुण सत्तावीस छाजे हैं, सबके मिलाय वेतें एकसो जु आठ भये थापना इनोंकी कर माला सुख साजे हैं, ज्ञानादिक तीनका सुमेरू वणाय भवि राम ऋद्धि सारक है सरब पाप भाजे हैं १,

अथ २४ तीर्थंकरोंका गुणवर्णन सवइया ३१ सा नाभि मरु देवानंद छोडदिया सवी फंद योगधारी जिन-चंद ममता मिटाई है, करीनें करमहाण पांम्याहै अनंत

ज्ञान भविक विमल भाण कुमति उडाईहै, तरण तारण स्वांम पोहता शिवपुर ठांम तीन लोक ठांम २ कीरत सवाईहै, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान आदि अरिहंत ध्यांन महा सुखदाई है, १, छोडीनें सरब आथ जोग लियो जगनाथ सीयल चलायो साथ अमी रसवाणीहै, सुण २ रावराण साचो मतलीयो जाण आया निस जिनआण किरिया प्रनाणी है, बालनाख्या कर्म्म बंस मूल नहीं राख्यो अंस उत्तर परमहंस पांम्या निरबाणी है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान अजित जिनंद ध्यांन महा सुखदानी है, २, वीमण वीमणजेम आगनामें गिणेएम ततखिण कियो नेम तजे राजकाज है, घातिया करम घाव केवल गिनान पाय उपगारी जिनराज बांधी धर्म्म पाजहै, जीव घणा कीया रढ क्षपकनिश्रेणी चढ पांमिया मुगत गढ अविचल राजहै, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान संभव जिनंद ध्यांन अखूट जिहाज है, ३, देखीनें अधिकरूप पर संसाधरी भूप करी चितध रचूंप वार वार बंदणा, जगनें अथिर जाण सुपनो सींझ्यारो भाण भयहर भगवांन तोडा मोह फंदणा, अखंड चारित्र पाल मोक्ष गया कर्म्म टाल साश्वता सदाई काल लिया सुखकंदणा, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान अंगमें हुलास आण वंदो अभिनंदणा ४ सुमति सुमतिधार कुमतने दीवी टार सुमति भजन सार जिम गुण पातहै, सुमतिमें रह्या झूल सुमतिरा फल्या फूल सुमति भूषण सूल दीठां दुखजात है, सुमति दातार सूर अंधकार कियो दूर सुमतिरा रणतूर बाजे दिनरात है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान सुमतिरा किया थान सुमतही आतहै, ५, हींगलू वरण

गात लाल मणी दिनरात जोगलियो जगतात तजी-
राजरिद्धहै, तप जप खपकर षटमास जिनवर पांमि-
याकेवलवर हुवा पर सिद्धहै, सुरनर इंद्रपास कीयो
ज्ञानपर कास क्लेस करम नास करी, आप थया सिद्धहै,
भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान पद्म जिनंद
ध्यांन किया नवनिद्ध है, ६, लोकांतिकसुर आय प्रति-
बोधे जिनराय बैठा कर्म्म घरमांय जगत बबूल है, काम
भोग तज कीच मार लियो मोह नीच बारेई पर खदा-
वीच गाजै ज्यूं सादूल है, रावरंक कर मुख काहू कीन
राखै रुख शिवपुर पांम्या सुख शाश्वता अतूल है, भणे
मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान सुपास जिनंद ध्यांन
महासुख मूल है ७, चंद्रसी बरण देह लागे दीठां धर्म-
नेह उत्तम चारित्र लेह तजे लाभ वैरीहै, मार लिया मोह
आप भारी तेजपर ताप तीनूंही भवन व्याप निज आंण
फेरीहै, सुरनर करै सेव रातदिन नित्तमेव हुवा निरंजन
देव बाजे जसभेरी है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवे-
कवान चंदाप्रभु जिन ध्यांन मुगतिकी सेरी है ८, सुग-
सीवरायनंद देही फूल अरीविंद परहरे सहू फंद थया
अणगार है करीनें करणी हद्द मारलियो मोह मद्द पां-
मिया केवल पद्द जगत आधार है, उपगार कियो अति
मेट दियो मिथ्यामति पांम्या अविचल गति सुखकोन
पार है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान सुविध
जिनंद ध्यान कियो सुखकार है ९ दाघज्वर रोगतात
गयो मातातणे हाथ नांमदियो शीतल नाथ दियो
माबाप है, जगत दुखासुंडर मनमें वैराग धर कांम-
भोग परिहर तजे सब पापहै, भलो उपदेश दीधो
जगनें शीतलकीधो अविचल गढलीधो मेटिया संताप

है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवांन शीतल जिनंद ध्यांन टाले भवताप है १०, ज्ञान घोडे भगवांन चढ्या महा बलवान शील शैन्या सावधान समकित शेल है, धीरज कटारी धार तपसारी तरवार गुणारी गुरज सार पाप दिया पेलहै, जीत हुई जिनराय सुर नर लागा पाय मुगति विराज्या जाय सदा सुख रेलहै, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान श्रेयांस जिनंद ध्यान आप सुख बेलहै, ११, वासुपूज्य जायापूत शिवपुर दिया सूत आप घणा अद्भूत संबर कषाय है, अठ लख दशवास ली-लामणि गृहवास परहरे मोहफास तजे लोभ लायहै, धरीनें शुकल ध्यांन पांम्यापद निरबाण सुरनर रावराण बंदेसिर नाय है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान वासुपूज्य जायेपूत महा सुखदाय है १२, विमल विमल वैण अमल कमलनैण सकल जीवांरा सैण दीठां जागेपे-महै, सुमता सिरेहै शोभ लाभै नहीं मूल लोभ समुद्र जुं अण क्षोभ निरमल नेमहै, सुरनर काज सार जनम मरण जार निरमल निराकार लिया सुखपेम है, भणे मु-निचंद्र भाण सुणहो विवेकवान विमल विमल वैण चिं-तामणि जेमहै, १३, अजोध्या पुरीना ईस आयु वरस लक्षतीस जोगलियो जगदीश दयादिल आणीहै, काम कुंभ जेम साम सारी या जगत काम जीव घणा ठांम २ किया गुणबाणी है, सुखदाई सुरतर पारसज्यु गुणकर अजर अमरपुर थया निरबाणी है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान अणंत जिनंद ध्यांन शिवकी निसाणी है १४, धर्मनाथ धर्म्मधार कीयो घणो उपगार उपदेश दियो धार मोटा किर पालहै, उघाड्या अंतर नेत किया घणा सावचेत पर उपगारहेत बांधी धरमपाल है, धर्मखे

वो पारकी धो अदभूत लाभ लीधो अनोपम ज्ञान दीधो दीनके दयाल है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान धर्मनाथ ध्यान धरो तिरे भवजाल है, १५, खट खंड सिरदार चोसठ हजार नार हयगय परवार अखूट भंडार है, अनुत्तर कांमभोग आय मिले पुन्ययोग क्षमा २ करे लोग कीरत अपार है, एसी ऋद्धि- तणो थाट तजलीनी शिव वाट आठूही करमकाट हुवा सिद्धसार है, चंद्रभाण चितधार शिक्षकहै, हितकार संतनाथ तंतसार जपो जैजैकार है, १६, चवदै रतनसार अदभुत गुणकार नरवर अज्ञाकार बत्तीस हजार है, षोडस हजार सुर अज्ञाकारी तंतपुर षटखंड नरवर साराही सिरदार है नाटक बत्तीसविध रिद्ध सिद्ध नवनिद्ध सहु छोडी हुवा सिद्ध लीया सुख प्यार है, भणे मुनि चंद्रभाण सुण हो विवेकवांन कुंथुजिनंद- ध्यांन तारत संसार है, १७, चउअसील खबाज इतारूडा गजराज पियादल सबसाज छिनवैक रोड है, छिनवैक- रोडगांम चोसठ हजार वांम पासवान दूणीतांम रहे कर जोड है, एसी ऋद्धितजकर जोगलिया जिनवर अ- जर अमर पुर गये करम तोड है, भणे मुनिचंद्रभाण सुण हो विवेकवान अरिनाथ ध्यांन कियां मिटे करम कोड है, १८, विरकत रह्या आप जगको न लागो पाप परि हरै सहूताप बैठा धरम पोत है, दयावंत खंतदंत गुण तणो नहीं अंत उपगारी अरिहंत, टाली मिथ्या छोत है, घटमें गिनान घाल काढीया करमसाल धरममें रहै लाल लीनी शिव जोत है,भणे मुनि चंद्रभाण सुणहो विवेकवान मल्लि जिन ध्यांन किया निरमल होत है १९, वीसमा जिनंद राय सांवलीसूरतकाय चारित्रसुं चित्तलाय तजेठाट है,

अरीसंसु यथा तत्त जिनमत परमत उपदेश जगपत मायातणोमाट है, पातक पिंडलहर घटमें उद्योतकर जीवघणा जिनवर घाला शिववाट है भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान मुनि सुव्रत ध्यांन कियां मिटै करम काट है, २०, राजरिद्धि परिहर जोगलियो जिनवर डिग्या नहीं तिलभर मेरु जूं अडिग्ग है, मिथ्या मत अति घोर फैल रह्यो चिहुं ओर ताहीको काटण जोर निरमल खग्ग है, थापि याती रथ चार तारथा घणा नरनार शिवपुर पांम्यासार सुखको नथग्ग है, भणे मुनिच्चंद्र भांण सुणहो विवेकवान नेमि जिन ध्यांन कियां नासेकरम ठग्गहै, २१, समुद्र विजैनंद बाई समाजिन चंद सांवली सुरत इंद बाल ब्रह्मचारी है, पशुवांनी सुणीकांन ततखिण बाली जान वार २ कह्यो कांन एसी क्या विचारी है, नारी तणो मारे नेम मुगतसुं लागोपेम राजीमती रहनेम हुवा जोगधारी है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान नेम जिन ध्यांन कियां महा सुखकारी है, २२, नोकाररत्नमांन समरता सुरत भान षटकाया दियो दांन तजी धनरास है, वडभागी वीतराग गुण तणो नहीं थाग यथातथ्य जिन माग कीयो परकास है, मोक्षगया कर्म्म तोड जगमें कीरत कोड सुरनर ठोड ठोड समरत पासहै, भणे मुनिचंद्र भांण सुणहो विवेकवांन पारसजिनंद ध्यांन कीयां शिववास है, २३, चोईसमा महाबीर सूरबीर महाधीर बाणी मीठी खांडखीर सिद्धारथनंद है नागणीसी नार जांण घटमें वैराग आण जोग लीयो जगभांण छोडा मोह फंद है, चवदे हजार संत तार दियो भगवंत करमोंका किया अंत पांम्या सुखकंद है, भणे मुनि चंद्रभाण सुणहो विवेकवान महावीर जपै जन उपजै आनंद है,२४, तीर्थंकरवी-

सधार गुण तणो नहीं पार मेरी बुद्धि अनुसार कीया थे बखाण है, सवइया पचवीस गाया गुण जगदीशभ- भणें गुणे निसदीस करत कल्याण है, संबत अठारेवास पचावन माघमास सुदि पांचम फले आस बार भला भाण है, भणे मुनि चंद्रभाण सुणहो विवेकवान चोवीस जिनंद ध्यान महासुख खाण है. इति चउवीस जिन- स्तुति भीष्मपंथी चंद्रभाणजीकृत संपूर्णम् ॥

[अथ मुनिगुण ३२ सवइया ३१ सा]

॥ पापपंथ परिहरे मोक्षपंथ पगधरे अभिमांन नहीं करे निंद्याकूं निवारी है, संसारको छोड्यो संग आलस नहीं है अंग कर्मासुं करे जंग मोटा उपगारी है, मनमांहे नि- रमल जेहवो गंगाको जल काटे है करम दल नवतत्व धारी है, संजमकी करे खप बारे भेदे तपेतप एसे अण- गारताकूं वंदना हमारी है १ ज्ञानकरी भरपूर विकथासुं रहे दूर तपस्या करण सूर मोटा अणगारी है, तारण तरण ज्याज आतमाका सारे काज दोष सेती आंणे लाज गुणांरा भंडारी है, छोड़ी सब खोटी मत चोखी राखे समकित निरवद्य बोले सत्त झूट परिहारी है, देई सुद्ध उपदेश घालत हे दया में रेस एसा अणगार ताकूं वंदना हमारी है, २ तन सहे शीतताप जिन जीरो जपे जाप कर्म्म मल देवै काप बहुत विचारी है, छोडदियो धन धांन ध्यावे हे शुकल ध्यांन सूधार है सावधान कु- मति विडारी है, सुनाघर समधार नकरे देही की सार शील पाले खड्ग धार विषय दूरवारी है, राग द्वेष मल दोय निरमल होवै धोय एसा अणगारताकूं वंदना ह- मारी है, ३ क्रियाको कबाण कीध दयातणा बंध दीध

साचरी पणछ सीध बहोत करारी है, तपस्याका किया बाण इर्ष्या निशाण जाण बाज्या हे मधुरी वाण ध्यांन की कटारी है, समकित सेल झाल ज्ञांन घोडे चढया लाल धीरज की करी ढाल क्षमा तरबारी है शीलसे न्यालई लार कर्म्मांसुं करे राड एसे अणगारताकूं वंदना हमारी है, ४ परीसा ऊपनां धीर हुवै नहीं दिलगीर सैठां रहै सूरबीर द्वेषन लिगारी है, ममता नांही शरीर पर जीवां जांणे पीर सचित्त न पीवै नीर पाप परिहारी है, मारण कर्म्म मीर तपस्याका वावै तीर राखे नहीं तक-सीर आतमाकूं तारी है, मांन पेचे राखी मीर कोड़ी नही राखे तीर एसे अणगारताकूं वंदना हमारी है, ५ अखंड आचार पाले दोष सब दूरे टाले जामण मरण जाले ममताकूं मारी है, तप करी तनगाले नारी सांमो नहीं नाले विषे दृष्टि पाछी वाले विशुद्ध विचारी है, छोडदियो रंग नाद करे नहीं परमाद चखे अनुभो को स्वाद उद्यत विहारी है, बस करे तन मन बाले हे करम बन एसे अणगारताकूं वंदणा हमारी है, ६ ज्ञांन ध्यांन रहै लीन जमुनाके मांहे मीन प्रवचन रस पीन शुद्ध गु-णधारी है, इंद्री पांच वसकीनडाह्या घणा परवीन देव गुरु धर्म्म तीन विशुद्ध विचारी है, देहीनें पाडत क्षीण हुवै नहीं खिण दीन कर्म्म काटे छीन छीन धर्म्मके बेपारी है, यथातथ्य पंथ जिन मुगतका सुत दिन एसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, ७ जिन जीको लीयो धम्म मेट दियो मिथ्या तम कांम भोग दिया वम तजी ऋद्धि सारी है, साकर काकर सम गाल बोल्यां खावै गम दीना है आतम दम क्षमा गुण भारी है, वाईस परीसा सम सहे मुनि एकदम जाको कासूं करे जम कुगति विड़ारी

है सिद्धांतमें रहे रम चाले नहीं धम धम एसा मुनिराज ताकूं वंदना हमारी है, ८ सुगति कालेइ मग जोय२मेले पग तन मन राखे दृग तजी सब जारी है, ज्ञान ध्यांन रहे लग गुणांरो नहीं छैथग्ग उपदेश देवे जग कुमति विसारी है, दुर्जन नर वग गालवोल्यां मुख अग हुवै नहीं धग धग खमता अपारी है, तपस्याको झेल्यो खग्ग मारण करम ठग अेसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, ९ निरवद्य बोले बैण सकल जीवारां सैण चारत्रमें पावै चैन आतमा सुधारी है, निरवद्य सेवे लेण वसराखे नि-जनेण नारी सब जाणे वैण शुद्ध ब्रह्मचारी है, साचो जाणो मत जैन बीजा सहू मांने फेन उपदेश देवै ऐन जग हितकारी है, ध्यांन धरे दिन रैण समजांणे वैरी सैण ऐसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है १० करणी करै कठिन दुरवल करे तन तिरे है कर मरन चोकडी घटारी है, अशुद्ध न लेवै अन्न कुकथा न देवै कन्न धूड समजाणे धन्न समता तो सारी है, मारिये दुसट मन गावे सब शुद्ध गण हटे नांही कीर्त्ति धन महिमा वधारी है विलंवन करे खिन ज्ञान भणे भिन भिन एसे अण-गार ताकूं वंदना हमारी है, ११ अकल बहोत ऊंडी साचो पंथ लियो ढूंढी रात दिन ताकी हुंडी प्रभुजी सि-कारी है, ज्ञान तरणी घणी पीक भिन्न२पाडे तीक सदा रहै निरभीक माया सब डारी है, वया लीस दोष टार निरदोष लेवे अहार संजम रो वहे भार लडे नलिगारी है, तप तेज रहे दीप परीषहकूं लेवै जीप अेसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, १२ दिलसाफ निसदिन भजंत है भगवन मिथ्या सेती दूर मन मुनि गुणधारी है, अशुद्ध न खावै अन तप कर दहेतन कोडी नहीं राखे धन छती

ऋद्धि छांडी है, धरत धरम धन छांडे नहीं एक छिन
गौतम ओपमगिन धीर गुणधारी है, भलो उपदेश भन
जुगतिसुं तारे जन एसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है,
१३ तजय चंपेल तेल मांन सब दियो मेल विषरूप विषे
वेल उपरथी उपाडी है,. वधारे धर्म देल परीसाकूं लेवे
झेल खेलत उत्तम खेल साचा सुविचारी है, इंद्रियांकूं
देवे गोप क्षमासुं रह्या है ओप करे नहीं मूलकोप गिरवा
अपारी है, सदा रहै निरलेप कर्म्मांकूं देवे खेप ऐसे अ-
णागार ताकूं वंदना हमारी है, १४ भगवंत ज्ञांनभेट,
सुरत लगाई ठेट, मिथ्या मत दीयो मेट, अखंड आचारी
है, शशि जिम दीसे सोम हुवै नांही प्रति लोम संथारों
करे छै भोम दया अधिकारी है, दिखाडत सुद्धराह स-
कल जीवानां नाह मेट देवे भवदाह आतमा सुधारी है,
बिरकत रहे सदा लोभ न धरे कदा एसे अणगार ताकूं
वंदना हमारी है, १५ दिलसाफ निसदिन भजत है भ-
गवन मिथ्या सुर नाणे मन एसी इकतारी है, अधिक
न खावै अन तप करी दहै तन कोडी एक नहीं कन
छती ऋद्धि छारी है, धारत धरम धन छोडे नहीं एक
छिन गोसुत ओपमगिन धीर गुणधारी है, भलो उपदेश
भन जुगत सुंतारै जन ऐसे अणगार० १६ मिथ्या मोह
उनमूल हिंसा तजी लघु थूल झूठ नहीं बोलै मूल तजी
सब चोरी है, परिहर्यो मैथुन, नवविध तज्यो धन राते
नहीं भखे अन धरमका धोरी है, सुगुरूकी पाले सीख
कुपैंडै न भरे बीख भमरा ज्यूं लेवै भीख तजी सब जोरी
है, भिन्न२भाखै भेद मूल नहीं करै खेद, एसे अण० १७
पर छन परगट मारे नहीं काय षट कूडरूख देत कट
सत समसेरी है, बरजीने मनवट उनमूले मद अटकायासै

तजी कपट ग्रंथरासगेरी है, विचरत योगवट नभपर जे मनट तपैं लही भवतट आतमा उजेरी है, घणो साफ करी घट रहै जिन नामरट, ऐसा अण० १८, ज्ञांन घोडे असवार हूवा सन्त अणगार सिझायना बाजासार विधि-सुं बजायनैं, संजम सिनाह टोप अधिक रह्या छै ओप दया आउध अनोप कर मैं संभायनैं, दांन शील तप भाव चारों मोटा अमराव साथे हवा सम भाव मन मैं उमायनैं, मुगति किल्लारे मांय जंगकरी बैसे जाय, ऐसा अण० १९, काटत करमदल छोडदीया सब छल परिहरै फूल फल जोवै नहीं आरसी अनुकूल प्रतिकूल परीसहा पर बल ऊपना रहे अचल सोही काज सारसी, मेटे मोह मिथ्या मल ग्यानतणी अटकल सीखाई ने परघल संसा सब टारसी, आणीनें संतोष जल मेट दीवी लोभ झल ऐसा गुरुधारो जीव तिरे सोही तारसी, २० संसार नीत जीलील सिद्धांतमें करी झील साचै मन पालै सील, नहीं जोवै नारसी, दुरबल करी देह गिरवा गुणारा गेह न्याती हूं ती तज्यो नेह माया जांणै छारसी, आतमांरा टालै दोष कर मांरो करै शोष मगतराडक मुनी बेगाइ बजारसी दातासूंम रंकराव सहू सेती समभाव एसा अणगार सही तिरे सोही तारसी, २१, भाव नींद गई भाग जंबू जेम उठया जाग विधि सुंलीयो वैराग छती ऋद्धि छोडनैं, निमी यणी तजी नाग रंचक न धरै राग तेम जगदियो त्याग मायादल मोडनैं, अन्तर बुझाई आग लवलेस नहीं लाग दिलरा मेटण दाग तपैतन तोडना, वास करी मन वाग मालत मुगत माग ऐसा अणगार इस जपुं कर जोडनें, २२, झीणो जिन मत झाल सोधि-या भीतर साल मुनी भए तज माल चित जांणै चन्दणं,

लग्यो ज्ञान रंगलाल चालै ऋषतणी चाल सखरा लेवै
सवाल नखरनि कंदणं, अनोपम ज्ञान आल खेलत उ-
त्तम ख्याल वेग शिव करे भाल नमी नाभिनंदणं, घण
दृढ घाव घाल पापरिपु दैतपाल ऐसा अणगार ताकूं
बार२वंदणं, २३ अङ्गे धरी उछरंग सुंदरी को तजै संग
भाव नहीं करै भंग कुल सोभ करसी, आगम अरथ
अंग चित मांहै धरै चंग ज्ञान जिसो तोय गंग दया मग
दरसी, राचत सञ्जम रंग अरिहंत धरै अंग जोरावर करी
जंग पाप पर हरसी, लीयां फिरै जैनलिंग रहै सदा एक-
रंग एसा अणगार इस वेग शिववरसी, २४, सिद्धान्त
का बैणसुणी माया तज हुआ मुनी गिरवा बहोत गुनी
अंगमें उल्लासता, भिन्न२ज्ञान भणी चोखा गुण लेतचुनी
दया करतारै दुनी भला बैण भासता, हरखत पाप हनी
घटमें अकल घणी, धारै जिन राजधणी दुरमति त्रासता,
गीत नाद तुछ गिणी, बाल दैतकाम भणी ऐसा अण-
गार एसे सुख लहै सासता, २५, उरसें गयो अन्धेर ग्र-
न्थरा सदीवी गेर फाहि नांहि धरै फेर सूर बीर सतमें,
मन दृढ जेममेर शत्रुअघ पर सेर हणत है हेर हेर मुनी
जिन मत मैं, साही सत्त समसेर घोर काल लीयो घेर
जमहूकूं कियो जेर चतुराई चित्तमें, भगवंत बैण भेर
बजाबत्त बेर बेर एसा अणगार इस गछै शिवगत मैं,
२६, परम धरम पांम वरजत भाव वाम हणने हियारी
हांम ओर तजै दांमकूं, गच्छत नगर गांम ठहरै नहीं
एकठांम जतना सूं राखै जाम कामी करै कामकूं, घोर
नार कीरी धांम तप करी टालै तांम निसदिन सिरनाम
समरत सांमकूं, सूरपणे संगराम करीनैं सुधारै काम
ऐसा अणगार थे सिधावै शिव धामकूं, २७, कुमत जं-

जीरकाट वहै शिवपुर वाट आंणै नहीं मद आठ निरमल नेम है, व्रत धर तजी खाट परदत्त सेवै पाट आणै नहीं अब चाट सुर अन्त सीम है, दुरमत दीवी दाट मया दया तणा माट थिर करै नरथाट हीयो ठाढो हेम है क्षमता खजाना खाट कर्म रिपु देवै काट ऐसा अणगार ताकूं मेरी तसलीम है, २८, सहु मेट दीवी संक फीही कारी फक फक वर जीनें मन वक रेड दीवी रीसकूं, पर हर काम पक करै नांही फेर कंख रागद्वेष करी रंक काट दे कलीसकूं, अरीतणो खोवै अंक टालो नहीं करैटंक देतहै मुग तडंक जपैजगदीसकूं, अंजे मंजे नहीं अंख सोहै जेम दूध संख नमो सहू नर नार ऐसे मुनी ईसकूं, २९, समकित हिय शुद्ध वहुत घट भई वुद्ध रीट जेम तजी रिद्ध ममता मिटायनें, दिलसाफ जेम दूध निरमल गुणनिध विद्या भणै विध विध आलस उडायनैं, मार दैत मोह मद कार नहीं लोपे कद हेत कथा कहै हद कापी है कपायनैं, पूजीने परम पद रिपुकर देतरद ऐसा अणगार ताकूं वंदू सिर नांयवैं, ३०; वुझाई भीतर झाल कापदीयो मोहजाल सिद्धन्तर चल ढाल खुली ज्ञान जोत है, माया नहीं राखै मूल किमही मैं बोलै कूड भवि जीवतणी दूर टालै मिथ्या छोत है, अंगथी आलस छोड गांमपुर ठोर ठोर जिनवर तणो जोर करत उद्योत है, सुरत सुगत मांहि और वंछा करै नांहि ऐसे अणगार ताकूं हमारी डंडोत है, ३१ जगतरी तजी वुद्ध आतमासें करै युद्ध तार वानें भवोदद्ध अखंडत पोत है, सण जेम देतसीख मीठो जेम दूध ईख तंतवात तहतीक मिथ्या तम खोत है, रातदिन रूडी रीत प्रभुजीसुं धरी प्रीत गावै रूडा गुणगीत तज्या सव तोत है, विचरै ज-

गत मांहि प्रतिबंध करै नांहि ऐसा अणगार ताकूं ह-
मारी डंडोत है, ३२, ऐसा सन्त अणगार तरण तारण
हार नमो सहू नरनार पूरा गुणपात है, साची सिख
दैतसूल कुपंथ न पडै भूल सुमत मैं रहै झूल समकित
आत है, सवइया बत्तीस सार गाया गुण अणगार आ-
गमकै अनुसार यथातथ्य वात है, भणै मुनि चन्द्रभाण
सुणोहो विवेकवान बत्तीसी उत्कृट आण भणियां दुख
जात है, ३३ इति पदं ॥

[अथ सीख कुंडलिया]

॥ दया२सब कोईक है, दया न जांणे मर्म्म साठ दयाके
नांम है, दशम अंगमें शर्म्म, १, दशम अंगमें शर्म्म द्रव्य
और भावदया है, स्वदया परदया जांण निश्चय व्यवहार
लया है, हैस्वरूप अनुबंध दयाके आठही भंगा, समझ
करै जो दया लहै वो मुक्ति प्रशंगा १ तप जप संजम
व्रत नियम क्रिया कष्ट भरपूर जिन वचलोपक पुरुषकै
मोक्ष नगर है दूर १ मोक्षनगर है दूर जमाली संजम
पाला गौतम जैसी क्रिया दोष सब दूरे टाला कहै राम
ऋद्धिसार एक जिन वचन उठाया फिरा बहुल संसार
त्याग कोई कांम न आया, २

साधू उसका नांम है सूधादै उपदेश नयनिक्षेपे सरद
है फिर सामान्य विशेष १ फिर सामान्य विशेष, भक्ति
जिनवर की सारे, मन कल्पित नहीं कहै, पंचागी दिलमें
धारे, भगवती अंगप्रमाण होय नहीं मतका दंभी, शुभ-
योगमें परवर्त्त पुरुषवो निरआरंभी, ३,

[अथ वैराग्न स्तवन]

॥ यो जुगलाल सुपनकी माया इणपर क्या गरबाणारे, थारी घटगई आय रहण नहीं पावै क्या राजाक्या राणारे यो० १ करमका चराचर मुख निरखै रूप देख हरखाणारे सुंदरनार खडी मुख आगे छेवटवास मसाणारे यो० २ गादी वैसगरब अतितोले वोले मगज भराणारे अंतर-ज्ञान इतो नहीं सूझै आखर निपट पयाणारे यो० ३, कर २ कपट निपट धन जोडयो संच२इकदाणारे मद छ कियो मनमें न विचारे छेवट माल विराणारे यो० ४, थोडा दिव-समें कर्म बहु बांध्या कर २ नें कमठाणारे पोढणकाले पोहतो परभव ठाली पड्या ठिकाणारे यो० ५, विवखित पुरुष सीसतल छाणा जांणे घेवर पेट भराणारे उडगई नींद खुलगई अंखिया अंतछाणाका छाणारे यो० ६ सुप ने राजलियो सव जगको सिरपर छत्र ढुलाणारे योगी छत्रपति रंक जाग्यो मांग२अन्न खाणारे यो० ७ रतनचंद जुग देख ये थिरता निजगुण मन ठहराणारे अलपलख्यो सदगुरु वचनासूं पुदगल भरम मिटाणारे यो० ८ इतिपदं॥

[चौवीस तीर्थंकर स्तवन लिख्यते]

॥ जैजिन ओंकारा प्रभुरट जिन ओंकारा जामण मरण मिटावो प्रभुजी कर भवोदधि पारा [जैजिन ओंकारा०] केवल लोक अलोकं प्रभु तीर्थंकर पद धारा प्रभु ती० तिलोक दयालं जग प्रतिपालं गंभीरं भारा [जैजिन ओं-कारा० १,] कर्म्मदल खंडण सिवमग मंडण चंदण जिम शीलं प्रभुचं० छवकायाना रक्षण मनरूपी भक्षण ततक्षण अमीलं, जैजिन० श्रीऋषभ अजित शंभव अ-

भिनंदन शांती करतारा प्रभुशांतिक० सुमति पदमसु पास चंदा प्रभु चंद्र जतहारा जैजि० ३, सुविध शीतल श्रेयांस वासुपूज्यस्वामी प्रभुवासुपूज्यसामी विमल अनंत श्रीधरम शांतजी सायर गंभीरा जैजिन० ४ कुंथु अरि मल्ली मुनि सुव्रतजी तीन भवन स्वामी प्रभु तीन० नमि नेम पारस महावीरजी पंचम गति गांमी जैजिन ओं० ५, गोतमादिक गणधर गणधर मुनिसेवा प्रभु गण० वखाण सुणंता मन आनंदा जोनर ले मेवा जैजिन० ६, जीव आराधे जिनमत साधे पामे सुखठामं प्रभु पांमे-सु० नंदलाल तेही गुण गावै जोजिन लै नामं जैजिन० ७ इति पदं ॥

[अथ नेमनाथजीकी लावणी लंगडी चालमें,]

॥ प्रभु नेमनाथ त्रिभुवनतात जगमें विख्यात महिमा भारी, राजुलसी नार दीवी पलमें छार लिया संजम भार आतमतारी, टेर, सिवा देवी मात समुद्र विजै तात जादवकी जातमें अवतारी, महोछवकी वात इंद्रादिक आत क्या मंगल गात छप्पन क्वांरी, द्वारकाके नाथ कि-रसनसे भ्रात दिलमें हर खात जो अतिभारी, घर घरकी नार गाये मंगलाचार करकै शृंगार सखियां सारी, दिन २वधाय जोबनमें आय ठाढा कहाय है सुखकारी राजु-लसी नार० १, एक रोजकी वात किलोलमें आत लिया, धनुष हाथ किया टनकारी, सुणीकृष्ण वाज आये झटके भाज वल देखूं आज ये दिलधारी, नेमीकी बांय मरोडी आय मुसकी जो नांय करे विचारी, लेवेगा राज नहीं संका आज क्या करणा काज हैचल भारी, बलदेव कहै नहीं राज लेवै शिववाट वहै है ब्रह्मचारी, राजुलसी नार०

२, बलदेवकी वाय सुणी कृष्णराय सखीयनसें जाय यह फुर माया, परणावो नेम कृष्ण बोलाएम सखीधरके पेम मन हुलसाया, किरसनकी बान किये परमान नेमीकूं आणकै बिलमाया, होलीमें फाग खेले धरके राग सब सखी लाग व्याह मनाया, उग्रसेण राय जोकी कीना लाय क्या जान सझाई हद्भारी राजुलसी ना० ३, मिल छपन कोड जादवकी जोड नेमी बांध मोड रथपर चढिया, बांदे तोरण जाय सुण पशुवोंकी हाय दया चितमें लाय रथ फेर दिया, तजके संसार चढगये गिरनार सुमतीकूं धार सुधरस पीया कहे राजुलसती नवभवके पती तुम छोडो मती क्या गुना किया, मत छोडो हाथ मुझै लेवो साथ तुम दीनानाथ हो उपगारी राजुलसी नार० ४, वरसी दांन दिया वनमें संजम लीया काया सफल कीया अपणाजीया, धनराजुल नार संजमकूं धार रहे नेमि तार समझाय दिया, इंद्रियोंकूं जीत तज जगकी रीत प्रभूसूं प्रीत कर ज्ञान लिया, चोपन दिन जान प्रभु पहली आन लहै शिवथान शुद्ध कांम किया, कहै कनीराम भज आठूं याम प्रभूका नांम ले चितधारी राजुलसी नार दीवी० ५, इति पदं ॥

[श्रीपार्श्वनाथजीरी लावणी टेर अलखके लावणीमें,]

॥ पास जिन ऐसा हेहो पास जिन ऐसा हेवोहो सचा देव मेरा पास पास नितरटुं धरूंमें ध्यान सदा तेरा, टेर अश्वसेन हेराजा हेहो अश्वसेन राजा हेवो वडे तप धारी सकलकला गुण खान जिनों घर वामादे नारी, तीन ज्ञानोंसें हेहो तीन ज्ञानोंसें आये उदर मातारे सुपना दश और चार देख माता हरखी भारे राणी राजासें हेहो राणी

राजासें कहती सुपनातिण बेला पास पास नितरहूं धरूं में ध्यांन सदा तेरा १ टेर, वनारस नगरी हेहोव० हेहो प्रभु आप जनम लीया, चोसठ इंद्र छपन कुमारी जनम महोछव कीया, नीलवरण काया हेहोनी० देखीनें हुलसे मेरा हीया, कमठ विडार नागकूं तास्यो धरणेंद्र कीया, सबी मन मोहे होकांइ द्रस पास केरा, पास० २, तीस वरसां लग हेहो तीस वरसां लग प्रभु रहै घरमांही, वरसी दांन प्रभु देकर लीनो संजम सुखदाई, बाईस प-रीसा हेहोबा० प्रभु खचित लाये, तप जप करणी करकै प्रभु केवल पद पाये, करम खपाकर दिया शिवपुरमें डेरा पास० ३, दासकी अरजी हेहोदा०, प्रभु सुणियो जिन राया, किरपा करकै दीजो मुझकूं शिवरूपी माया, जि-नंद गुणगाया हेहोजि० सब काहूके मन भाया, ओर देव सब दिया छोड़ पारस चित लाया, कनीराम कहता प्रभु मेटो भवफेरा, पास० ४, इति पदं ॥

[लावणी दूसरी नेमनाथजीकी]

॥ प्रभुनेमनाथ तजगये साथ मेंकहुं कबलग बात सखी कहै राजुलनार मेरे जिनसें प्यार में जाऊं नेमके साथ सखी, टेर, थे आठ भवोंके सजन मेरे करगये गमन उत पात सखी, ना आप आये ना पाती लिखीना रखी कुछ लोकात सखी, हुये बारेमास करै सबी; हास जा दिनसें चढी बरातसखी, फेरोंकी बार तजगये प्यार मन मार मार पिसतात सखी, चुप कहांसें रहुं, दुखकासे कहूं मन देखत बात लजात सखी, कहै राजुलनार मेरे जि-णसें प्यार में जांऊं नेमके साथ सखी, १, मोहोकी झडी में सूती पडी थी जोबनमें मदमात सखी, अब आपा

सुझा मेरे दिलकुं वुझा अव निसंक गिरिकूं जात सखी, रस्तेके वीच मच रह्याकीच थी विर खारुत वरसात सखी, भीजे हैं चीर वरसे हैं नीर सती चीर सुकाणे जात सखी रहनेम भुला ज्ञान ध्यांन झुला यो देखे उघाडा गात सखी कहेरा० २ रह नेम बोल नहीं तेरे तोल है अद्भुत रूप विक्षात सखी, घरमांही रहो फिर कांसुच हो सुख विलसो मेरे साथ सखी, कहै सती पिछाण सुणहो सुजाण तेरे दिलकूं तूं समझातो जती, संजमकूं धार फिर वंछे नार धिक्कार तुझे हैं सात जती, सुण सती वैण खुलगये नैण रहनेम ठिकाणे आत सखी राजु० ३, रहनेमि वीर होगये धीर तैं तार दिया मुझ मात सखी केवल उपाय शिवपुरकुं जाय करगये नांम विक्षात सखी, सती भव सुधार रहनेमि तार हुई ब्रह्मरूप साक्षात सखी, दाखला दिया धन उसका जिया सुण समझे उत्तम जात सखी, वीकानेर गुलजार सेहर ये राम मुनि छंद गात सखी राजु० ४, इति पदं ॥

[अथ श्रीसीमंधर स्वामीका स्तवन लिख्यते].

॥ महा विदेहमें चोथो आरो जिहां विराजो आप भरत क्षेत्रमें करूंजीवंदना जप सुं थांरोजाप मैं तो दरसणकरसूंजी मैं तो सेवा करसूंजी म्हांरेरे सतगुरूजीरीमैंतो सेवा करसूंजी, १, सेवाकरसुं दरशणकरसुं जिकोदि हाडो धन्न, क्यातो जांणे केवल ज्ञानी, के जांणे मारोमन्न म्हेंतोद० २, हंस घणादि नारी हूंती मुझहि वडेमें तेज आवणरी मारी आसंग होती, तो ईन करतो जेज म्हेंतोद०३, स्वामीजीतो माहरो साहब म्हें स्वामीजीरोदास वस रह्या मारे हिवडे भीतर ज्यूं फूलनमें वास, म्हेंतोद०, ४, स्वामी

जीरी सूरत मूरत बाली लागे मोय निर खंतारा नैणन धापै, बाणी मीठी होय म्हेंतोद० ५, स्वामी जीतो सोवन वरणा दिप २ करती देह नैणा दीठां लागे मीठा ज्यांरीकर सुंसैव, म्हेंतोद० ६, अंतर जामीरा बारणा लेऊं थ्याडामें लखवार करुणा सागर किरपाकी जो भवसागरथी तार म्हेंतोद० ७, स्वामीजीतो म्हारे मनमें, व्याप्या सगली देह, रूंम रूंममें वस रह्यामारे, ज्यूं बादलमें मेह, म्हेंतोद० ८, दूर दिसावर म्हारा साहब, मिलियां चावै मन्न, पपइयो पाणीनें तरसे जूंतरसे म्हारो मन्न, म्हेंतोद० ९, म्हारो मनडो आवै जावै, जहां बैठा जगनाथ, भाखर भीतर कोही न गिणुं, नहीं गिणुं दिनरात, म्हेंतोद० १०, स्वामीजी तो मिलियां पीछै, रंगमें पडगयो पास, स्वामी जीरे आगल करता, सुणसी सब अरदास, म्हेंतोद० ११, म्हारेनें जिनवरजी सरखा नहीं कोइ जगमें देव, जिनवरजी तो साचा साहब ज्यांरीकरसुं सेव म्हेंतोद० १२, ओर देव म्हारे दाय न आवै, जीता रागनें द्वेष ऋषि रायचंद इम कहे, केवल ज्ञानी एक म्हेंतोद० १३, समत अठारे वरस छतीसे रेवाड रह्या च्यार रात सीमंधर मिंदरजी आगे जोड्या दोनूं हाथ म्हेंतोद० १४, इति पदं ॥

[अथ सीमंधरजीरो दूसरो स्तवन लिख्यते]

॥ श्रीसीमंधरसांम इकचित बंदू हो बेकर जोडनें पूरबदेसे हो प्रभुजी परवरया नगरी पुंडरपुर सुख ठाम बेकर जोडी हो श्रावक वीनवै श्रीसीमंधर स्वाम इकचित बंदू हो बेकर जोडनें, १, चौतीस अतिशय हो प्रभुजी शोभता बाणीपन रे ऊपर बीश एक सहस लक्षण हो प्रभुजी आगला जीता रागनेंरीस इकचि० २, काया

थांरी हो धनुष पांचसे आउखो पूर्व चोरासी लाख निर बधवाणी हो श्रीवीतरागनी ज्ञानी अग्गम गया छै भाख इकचि० ३, सेवा सारे होथांरी देवता, सुरपति थोडा तो एक कीरोड, मुझमन मांहे हो होंस वसे घणी बंदू वेकर जोड इकचि० ४, आडापरवत हो नदियां अति घणी विचमें विकट विद्याधर गांम इण भव मांहे हो आयसकूं नहीं, लेसुं नित उठथांरो नांम इकचि० ५, कागद लिखूं हो प्रभु थांने वीनती वंदणा बारंवार कुंदन सागर हो किरपाकीजियें वीनतडी अवधार इकचि० ६, इति पदं ॥

[अथ जंबूकुमारजी रीसिझाय लिख्यते]

॥ राजगृहीना वासी याजी जंबू नांमक वार ऋषभ दत्त-राडी कराजी भद्रा ज्यांरी मांय जंबू कह्यो मान लै जाया मतलै संजम भार, १, सुधर्मा स्वामी पधारीयाजी राज-गृहीरे माय कोणक बांदण चालियोजी जंबू वांदण जाय जंबूक० २, भगवत वाणी वागरीजी बरसै अमृतधार वाणी सुणी वैरागियाजी जांण्यो अथिरसंसार जंबू० ३, घर आया माता कनेजी वंदे वारमबार अनुमत दीजो मारी मातजी मातालेसुं संजम भार जंबू० ४, माता मोरी सांभलो जननीलेसूं संजम भार जंबू० ये आठूंही कामणी जंबू अपछररे उणीदार परणीनें किमपरिहरो ज्यांरो किम निकले जम वार जंबू० ५, ये आठूंही का-मणी जंबू तुझविना विलखी थाय रमियां ठमियां सुंनी सरे जांरो वदन कमल विलखाय जंबू० ६, मत हीणो कोई मानवी माता मिथ्या मत भरपूर रूप रमणी सूं राचिया ज्यांरा नहीं हुवा दुरगत दूर माता मोरी सां-

भलो जननो लेसूं संजम भार, ७, पाल पोस मोटो कियो जंबू इम किम दे छिट काय मातपिता मेले झूरता थानें दया नहीं आवै मांय जंबू० ८, एक लोटो पांणी पीयो माता मायर बाप अनेक सगलांरी दया पालसूं माता आणीनें चित्त विवेक माता मोरी सांभ० ९, ज्यूं आधारे लाकडी जंबू तूंह्मारे प्राण आधार, तुझविना म्हारे जग सूनो जाया जननी जीत बराख जंबू० १०, रतन जडतरो पीं-जरो माता सुओ जाणे सही फंद, काम भोग संसारना माता ज्ञानी जाणे झूठा फंद जंबू० ११, पंच महाव्रत पालणो जंबू, पांचूं ही मेरू समान, दोष बयालीस टा-लणो जंबू, लेणो सूझतो आहार, जंबू० १२, पंच महा-व्रत पालसूं माता पांचूं ही सुख सामान दोष बयालीस टालसूं माता लेसूं सूझतो आहार माता मो० १३, संजम मारग दोहिलो जंबू चलणो खांडेरी धार नदी किनारे रूखडो जंबू जद तद होय विनास, जंबू० १४, चांद विना किसी चांदणी जंबू तारां विना किसी रात बीर विना किसी वैनडी जंबू झुरसी बारतिबार जंबू० १५, दीपक विना मिंदर सूनो कंता पुत्रविना परवार कंत-विना किसी कामनी कंता झुरसी बारूंही मास वालमजी कह्यो मांनलो थेतो मतलो संजमभार १६, मात पितामे लो मिल्यो गोरी मिल्यो अनंतीवार तारण समरथ कोई नहीं गोरी पुत्र पिता परिवार सुंदर कह्यो सांभलो म्हेले सूं संजमभार १७, मोह मत करो मोरी मातजी माता मोह कियां वंधे कर्म्म हालर हूलर क्या करो माता मोह कियां बांधे कर्म्म माता० १८, ये आठूं ही कामणी जंबू सुख विलसो संसार दिन पाछो पडियां पछे थेतोली जो संजमभार जंबू० १९, ए आठूं ही कामणी माता सम-

झाई एकण रात जिनजीरो धर्म्म पिछाणियो माता संज-मलेसी म्हांरे साथ मातामो० २०, मात पितानें तारिया जंबू तारी छे आठूं ही नार सासू सुसरानें तारिया जंबू पांचसे प्रभव परिवार जंबू भलो चेतीयो थेतोली जो संजमभार २१, पांचसेनें सत्ताईस जणासूं जंबू लीनो संजमभार इझारे जीव मुगते गया साधू बाकी स्वर्ग मझार जं० २२, इति पदं

[अथ माहासती चंदनवालारी लावणी]

॥ सतानीक ओर दधीवाहन दोनूं राजोंके आंट पडी एसी जब तकरार होय गई दोनूं तरफसें फोज चढी दधि बाहन राजाजी हारगये रणसे भागे उसी घडी सतानीक राजानें लूंटी चंपा नगरी खडी खडी, सुण प्यारे चंपा नगरीकों लोक लूंटणे लागे, सुण प्यारे फोजोंके लोक धनमाल लूंट कर भागे, सुण प्यारे इक पायक महलोंमें जो घुस गया आगे, [झेला,] इक तो राजाकी बाई, इक राणी वैठी पाई, पायकके मनमें आई, ले चलूं दोनोंके तांई, नहीं लिया धनमाल वैठाय रथमें दोनोंकूं हो गया पार जिनके जनमी महासती चंदनबाला गुण अपरंपार, [टेर,] रस्ता दीया छोड अजी ऊबट रस्ते रथकूं हांक्यो, घणी जो देख ऊजाड वनीके विचमें रथ ऊभो राख्यो, वो पायक पापकी निजर करी राणीजी ऊपर झांख्यो, कोप ऊठी राणीजी मनमें आज जोग कैसो पाक्यो, सुण प्यारे राणीजी अपणो अवसर तुरत विचारो, सुण प्यारे अठारा पापकूं त्याग कियो संथारो सुण प्यारे कर लिया त्याग पचखाण यों कारज सारो, [झेला,] राणीजीको मन सुरो यों चढ्यो तेज भरपूरो,

जीभ काट कीयो चूरो, करदियो आऊखो पूरो, करम करे सो करे न कोई सवी बंधे करमोंकी लार, जिनके० २, राणीकी दाह किरीया करी, पायक कन्याकूं वचन कयो, राखूं तुझें बेटीके बरावर, कन्याकूं विसवास दियो, मती रोय तूं मेरी पुत्री आंसुकूं पूंछ अव थांभ हियो, चंदण बालाजीकूं पायक इण रीते समझायरयो सुण प्यारे ओ नगरी कोसंबीमें जद पायक आया, सुण प्यारे चंदण वालाजीकूं अपणे घर लाया, सुण प्यारे कन्याकूं देख पाय कणी फैल मचाया, [झेला,] कन्या है रूपकी भारी, या होगी शोक हमारी, पाय कणी एसी धारी, कन्याकूं बाहर निकारी, पायक कन्या वेच नहीं वेचेतो राजमें करूं पुकार, जिनके ज० ३, चंदणबालाजीकूं वेचणे, पायक बजारमें आया, रूप देख चंदन बालाका, सबकाही मन ललचाया, मोल बताय कन्याका लोक कहै तूं कन्या वेचण लाया, वीस लाख सोनइया लेऊंगा एसा मोल इण बतलाया सुण प्यारे वैश्या बोली कन्याकूं मोलमें लूंगा सुण प्यारे ये वीस लाख सोनइया तेरेकूं दूंगा, सुण प्यारे कन्या का मोल मेनें खरचा वड़ा जो मुंहगा, [झेला,] चंदण वाला पूछेरी, तेरी जांत पांत कह देरी, ये जात है वेस्या मेरी, मैं नगर नायका ठैरी, चंदण वाला वोली वैस्या से में नहीं आउं तेरे लार, जिनकेज० ४, हाथ पकड चंदण बालाका, वैस्या कररही खेंचा ताण, मोल खरीदी मेनें तुझकूं अब क्यूं खाली करे डफाण, मेरे घर ले जाउं तुझकों ये कन्या अब साची जाण, रतन जडतका गहणा पहरो सुख भोगो अर मोजामाण सुण प्यारे, चंदन वाला पर वैस्या जोरज माया, सुण प्यारे, नवकार मंत्रका इक मन ध्यांन ल-

गाया, सुण प्यारे जद शील अधिष्ठायक देवता तुरत ही आया, [झेला,] देवता तुरत जब आये, बंदरका रूप बणाये, वैस्याके संगही धाये, कन्याका फंद छोडाये, लगेल बूरण वैस्या तांई नाक कान कीया लोही झार, जिसकेज० ५, वैस्या को तो रूप विगडियो, पायक रह्यो बहोत पिस्ताय, अब कन्या मैं किसकूं वेचूं लेनेवाला एक न आय, कन्या मोल जो लेणे आया धन्ना सेठ एक मोटा साह, धन्ना सेठजी उस कन्याका पायकसे रहे मोल कराय, सुण प्यारे धन्नाजी कहै कन्याका मोल सुणावो, सुण प्यारे पायक कहै सोनइया वीस लाख तुम लावो, सुण प्यारे एक लाख सोन इया देउं जो लेतो आवो, [झेला,] कन्याकूं सेठ लेजारे झट लाख सोनइया लारे; कन्या यों वचन उचारे, आचार सेठ क्या थांरे, सेठ कहे कन्या हम श्रावक मेरे धरमका है इधकार, जिसकेज० ६, चंदणवाला जीकूं लेकर सेठ हवेली आया है, लाख सोनइया उस पायककूं सेठनें तुरत चूकाया है, जात न्यात ओर कुटम कवीला सेठनें तुरत वुलाया है, में इसकूं पूतरी कर मांनी सवकूं वचन सुणाया है, सुण प्यारे चंदणवाला कूं पूत्री सेठ वणाई, सुण प्यारे सेठाणी मनमें घणी खुसी जदलाई, सुण प्यारे सुखें सुखें ये वरते घरके मांही, [झेला,] सांपडरही चंदणवाला, है गले रतनकी माला, मुख ऊपर चंदऊ जाला, सिर लंबे केस हे काला, धन्ना सेठजी आया हवेली, पग धोवणका करे विचार, जिनकेज० ७ ऊनो पाणी वधियो होय तो, चंदणबाला इहां ले आय, ऊने पाणीसे अब पुत्री, मेरा आकर पांव धोवाय, ऊनो पाणी हाजर पिताजी, मारे हाथसूं धोऊं पाय, चरण पिताजी धोउं थारा, म्हारे मनमें लग रही

चाय, सुण प्यारे खोले हे पिताका मैल चरण हाथोंका, सुण प्यारे मैल खोलते छूटाकेस माथाका, सुण प्यारे माथासें केस लटका दो दो हाथोंका झेला, धन्नाजी केस सवारा, आंख्या आडे सुंटारा, सेठाणी पाप विचारा, धनदत्तजी सामाभारा, ये मेरी सोकडली होगा मने निकालै घर सुंबार, जिनकेज० ८, सेठसिधाया गांम अजी, सेठाणी मन उठियो पाप, रीस करी चंदनबाला पर, मूंढा पर दी एक दो थाप, पकड कतरणी माथो मूंड्यो, सभी केस कर डाल्या साफ, हाथ हथकडी पांवोंमें बेडी मूंद दई कोठामें आप, सुण, प्यारै चंदणबालाकूं मूंदी कोठा मांही, सुण प्यारे सेठाणी तो वा अपणेपी हरसि धाई, सुण प्यारे चंदणवाला पर एसी आफत आई, [झेला], म्हें केसी करी कमाई,आ पूर्व जनमके मांही, म्हेंथी राजाकी बाई, अव हाटोहाट विकाई, जेसा बांधा जेसा भोगे जीव, अब क्यूं झांके आल जंजाल, जिनकेज० ९, घणाजी वांसें बैरमें बांध्यो, घणाजी वोकूं दुखी करा वैर भाव ये जीव समझले, येतो टाला नहीं टरा, महा अघोरमें पाप कीया था वृक्ष सताया हराहरा, रतन हींडोलेमें झूलेथी वहतो सुख सब रह्या धरा, सुण प्यारे चंदनबालाजी अपणा मन समझाती सुण प्यारे करते लाखों पचखाण ज्ञान गुण गाती, सुण प्यारे, इस संकटमें वो जरान हींघभराती, [झेला,] जद सेठ गांमसे आया, घरताला जडिया पाया, जद ताला सेठ खोलाया पाडोसण हाल सुनाया, सेठाणी तो पीहर गई चंदणवाला पर कर तकरार, जिनकेज० १०, माहावीर सामी प्रभूजी एसो अभिग्रह लीनो धार तेरा जोग मिले इक ठोडां, जिनके हाथसें बहरूं अहार, रा-

जाकीतो कन्या होवै, मोल विकाणी वीच वजार, हाथ हथकडी पांवों वैडी, सिर मूंडा हो एसी नार, सुण प्यारे काछडो लग्यो तेलेको पारणो होवै, सुण प्यारे सूपडे आहार उडदोंका बाकला जोवै सुण प्यारे सुद्ध परणामें देहलीमें बैठी रोवै, एक तो पग देहली माई, इक पग वाहर हो भाई, आ अैसी मिले जोगवाई, नहीं मिले तो लेणो नांई: इतना जोग नहीं जो मिल छव महीना भुग ते लेसूं आहार जिनकेज० ११, धनजी कहै चंदणवाला तेलेका पारना ले तूं कर, हाजर है उडदोंका बाकला, बिन वरतण लाउं क्यों कर, आमा सामा लग्या देखनें, ओर वरतण नहीं आयो निजर पड्यो सूपडो देख्यो धनजी लिया वाकला उसमें भर सुण प्यारे सूपडे मांहे उडदोंका वाकला लीना सुण प्यारे धन्नाजी जाके चंदणबालाकूं दीना, सुण प्यारे, चंदणबाला हाथोंमें सूपडा लीना, [झेला,] बंधन तेरा तोडाऊ जाकर लुहारकूं लांऊ मेरे मनमें में पिस्ताउं, क्या गुण मूलाका गाऊं, महावीर स्वामी प्रभु करते गोचरी आनिकले धनजीके द्वार जिनकेज० १२, आया देख्या सती मुनीकूं, मन इनका हो गया हरिया, आहार वहरावण लगी मुनीकूं महा सती सुंदर तिरिया, ओर जोग तो सब मिला पिण नेणोंमें जल नहीं भरिया, एक जोग नहीं मिला जिणीसुं वीर प्रभू पाछा फिरिया, सुण प्यारे मुनिराज फिर गया आहार आप नहीं लीना सुण प्यारे चंदनबाला जिस घडी रोदन कीना सुण प्यारे पीछा तो फिरो म्हाराज यूं हेला दीना, [झेला,] चंदणबालाजी रोई, ये नैण वरस रहे दोई, पीछा तो फिरो निर मोही, मारे तो संको नहीं सोई, दयावंत पर उपगारी भगवान

सतीकी सुणी पुकार, जिनकेज० १३, सुण करुणाका बचन फिरै भगवान सती पर निजर पडी, देख रह्या भगवान सतीके दोनुं नेणसें लगी झडी, जो धारासो जोग मिल गया आहार बहिराया उसी घडी, धन २ चंदणवाला महा सतीयोंमें आप हो सती वड़ी, सुण प्यारे उस वख्त सतीका देवत कारज सारा, सुण प्यारे उसी वख्त सती सिणगार एसा ले धारा, सुण प्यारे सिंहासण वैठी दोनूं हाथ पसारा, [झेला,] धोवांसुं दांन लगी देणें, भगवान लगे हैं लेणे, देवता लगे हैं केणे, शुभ दान लगा है बैणै, भला दान दिया भला दान दिया करे देवता जैजैकार जिनकेज० १४, साढाबारे कोड रतनोंकी विरखा हुई घणी भारी, वाजा बजा देव दुंदुभी ओर पुष्प वनकी वृष्टि हुइ न्यारी, घणा वांन कपडा बरसाया खुसी हुई दुनिया सारी, शोभा अपरंपार सतीके द्वार आये सब नरनारी, सुण प्यारे भगवान अभिग्रह कीयो देवता जाणे, सुण प्यारे सबके सुणंताहितरे जोग वखाणे, सुण प्यारे देवताके कहणेसे जाणे भव्य पिराणे, [झेला,] धन्नाजी पीछा आया, घरे वडाहगाम पाया, मन मांहे अचरज लाया, एसा क्या दांन दि-राया, आनेलगे दरशणकरणे धनजीकेघरसवसंसार, जिनकेज० १५, चंदणवाला कखो पारणो अपणा कारज सार दिया, धन २ पुत्री हे वडभागन धनजीकानांमउ-जाल दिया, हे वड भागण कीना थेतो अपणे कुलकूं तार दिया, राग द्वेष अहंकार ईरखा चंदणवाला मार दिया सुणप्यारे चंदणबाला कहै अरजी एक सुणाऊं, सुणप्यारे पहली मेरी माताका दरशण पाऊं, सुण प्यारे दरशण कर पहली पीछै आहार चुकाऊं, [झेला,] माता है

धर्म्म संघाती, म्हें मूलाका गुण गाती, मुझकूं नहीं कष्ट बताती हुआ कैद पदवी पाती, सेठाणीकूं सेठ बुलाई आई मूला हो लाचार, जिनकेज० १६, आवत देखी मूलाकूं चंदणबाला सांहमी दोडा, करी वंदना पडी चरणमें ऊभी भई हाथ न जोडा, तेरा गुन नहीं भूलूं माता करमोंका बंधन तोडा, क्षमा धरममें धारन कीना राग द्वेष सारा छोडा, सुण प्यारे, मैं ओगण गारी तूं गुणकी सागर है, सुण प्यारे. अब करो पारणो तूं सब गुनकी आगर है सुण प्यारे नगरीयाकोसंबी करदी उजागर है, झेला हुई मनमें घणी खुसाली, जद मूलाकै संग चाली, भोजनकी पुरसी थाली, पारणो करो गुणवाली, कर्खो पारणो चंदणबाला धनजीकैघर मंगलाचार जिनकेज० १७, खोल ओरा देखे मूला रतनोंका भरिया भंडार उछव चंदणबालाका मूलाकर रही बारमवार, वोही पायक ओर बोही वैस्या फेर आया धनजीकेद्वार, इस कन्याकूं मोल लईमें इसधनपर मेरा इखत्यार सुण प्यारे पायक यै धनजीकूं वचन सुनाया, सुण प्यारे, ए रतनवर सिया जिस पर मेरा दाया, सुण प्यारे इस कन्याकूं तो मेंई जहरके लाया, झेला] मूलाक है वैस्या झूठी, तने मिले न कोडी फूटी, पायक तेरी किस्मत रूठी क्यूंपिये जहरकी घूंटी, मूला ओर पायक वैस्या इन तीनोंके होरही तकरार, जिनकेज० १८, इतनेमें हलकारा राजका धनजीकैघर पहुंचो आय, छिपकरकै ऊभा हलकारा सब सुणी बात यह कान लगाय, वैस्या ओर पायककूं पकडकै ले गया देख कचेडी मांय, लगे पूछने राजा इनकूं कैसें खडा किया है लाय, सुण प्यारे, चंपा नगरीका राजाजीकी बाई, सुण प्यारे, मैं हरलाया वैची धनजीकै

ताई, सुणप्यारे, पायक राजाकूं एसी बात सुणाई, [झेला,] कन्या भाणेजी हमारी, पायक आसंग क्या थारी, इतनेमें भीड भई भारी, गई वैस्या निजर चोरारी पायक अपणो ओसर देखकै निजर चोर कै भग गयो बार, जिनकेज० १९, दधिबाहन राजाजी पाछा आया है चंपा नगरी, नहीं राणी नहीं पुत्री महलमें भूप करी चिंता जबरी, राजाजी परजाकूं कहै अब बात सुणो परजासगरी, म्हारो दुखतो भूल गयो पिण थांरी घणी चिंता लगरी, सुण प्यारे, नहीं मेरी चंदणबाला नहीं मेरी राणी, सुण प्यारे, वो गई किधर थेबी कोई जाती जाणी सुण प्यारे परजा कहै राजा राणीकी खबर कराणी, [झेला,] एक सेठ कहै चिठी आई, राजाकूं बांच सुणाई, धन चंदणबालाबाई, है नगरकोसंबीमांही, चंदनबालाजीकै हाथ भगवान दान बहयो ततकार जिनकेज० २०, चंदणबाला दान दियो आ खबर पोहचगई बडी २ दूर, दधिवाहनराजा बोला, कन्यासुंमिलणो जाय जरूर, नगरकोशांबी आयाराजा हरख हुआ मनमें भरपूर, जाय मिला पुत्रीसें चंदणबालाके मुखवरसे नूर, सुण प्यारे, पुत्रीको देख राजाकोहीयो भर आयो सुण प्यारे, गदगद वाणी हो गई नैणजलछायो, सुण प्यारे, राजा कहै पुत्री अब जीव सुख पायो, [झेला,] सुण चंदणबाला प्यारी, पदमावती माता थारी, थे सांभल रहीके न्यारी, सोसाची वात वतारी, वर्त्तमान वरतोसो पुत्री राजाकहे कहो ततकार जिनकेज० २१, पुत्री कहै सुणो पिताजी होणहार है समरथवान, आप कठै हूं कठै मेरीमातानें तजदिया वनमें प्राण, वीच वजारे हूं वेचाणी कठै रह्यो यो मांन गुमान धन्ना सेठ पुत्री कर

लाया घणो वधायो म्हारो मान सुण प्यारे राजा पुत्रीसें सुणी हकीगत सारी, सुणप्यारे, राजा कहे चंपापुरीकूं चलो मेरी पियारी सुणप्यारे पुत्री राजासें एसी अरज-गुजारी, [झेला,] में एसो अभि ग्रहलीनो, संसार सवी तज दीनो, ओ जोग मिल्यो रंगभीनो, म्हारो मन मैं दृढकीनो, जद केवल भगवतकूं ऊपजै जद में लूंगा संज-मभार, जिनके ज० २२, धन्ना सेठजी धनका थेला, भर राजाकी भेट करी, चंदण बाला मिली पितासें, मनकी वातें कही सगरी, धन्य भाग मिलगई पितासें म्हांरे मन एसी लगरी, दधिवाहन राजाजी पीछा आय गया चंपानगरी सुणप्यारे, राजाजी कहै चिंताथी म्हारे मनमें सुणप्यारे राणीकी चिंता घणी लगी थी तनमें, सुण-प्यारे पुत्रीसें मिला जब चिंता मिटगई छिनमें, [झेला,] पुत्री तो हुई वडभागी, वैरागमें इछालागी संसार तुरत जिन त्यागी धन पिरालव दया जागी, दधिवाहन राजा कहै पुत्री मातपिताकूं दिया उजार जिनके ज० २३, बारा बरस साडाछव महीना छद मसत भगवांन रया इग्यारे वर्ष पचवीस दिन इतना तपस्या में वीत गया, इग्यारा मास उगणीस दिनोंका इतरा आप पारणा कीया, फिर केवल भगवानकूं उपजा घणा जीवांकूं तार दिया, सुणप्यारे, चंदण वाला भगवानके लागी चरणा, सुण-प्यारे मोहे दिक्षादो म्हाराज देर नहीं करणा, सुणप्यारे संसार छोड मैं लीया आपका सरणा, [झेला,] दीक्षा लै जनम सुधारा, ये पंच माहा व्रत धारा, सुत्तरकी रीतसें पारा, महा सतीज कारज सारा, छत्तीस हजार सत्योंनें चंदण वालासें लीया संजमभार जिनके ज० २४, उग-णीसे गुण चास साल भादू महीना एकम बुधवार, सु-

रतरांम विरामण गाया चंदण बालाजीका अधकार, पांच महा व्रतधारी मुनीकूं करूं वंदणा बारमबार, धन जावदकी रत भोमका जैन धरमका भरा भंडार, सुण-प्यारे अठारे पापोंकूं त्यागे बडा वो त्यागी, सुणप्यारे ए पंच महाव्रत पाले वोही वैरागी, सुणप्यारे ये बाईस परीसा सहै सोही वडभागी, [झेला,]ये महासती वडभा-गन, चंदण बाला वैरागन, यो तवन सतीको धन धन, मुनीपेमसें कियो वरनन, धनवो है जैन धरमकूं धार लेवै अपणा जनम सुधार जिनके ज० २५, इति पदं ॥

[अथ वैराग्न लावणी लिख्यते]

॥ देखत भूली ख्याल तमासा बाजी गरका है खलका यो संसार धूं वेंसा बादल ओस बूंद बिजली चमका, [टेर,] सतगुरु शीखतूं मांने क्युंनी जनम मरणका, दुख मिटता, दांनशील तपभाव आराधो, संसार समदका फंद कटता, संबर पोसा करो सामायक सुत्रसिद्धंतप-रचित्त धरता; वखाण बांणी सुणोरे सरधा पाप घटे जब पुन्य बधता, तवनसिझायां बोलो थोकडा नउं पदारथ मुखकरता, जांणपणे आ समकित फरस्यां पापकरमसुं रहै डरता इती बुद्ध जो नहीं हुवे तो नोकार मंत्रहिरदे धरता, भाव चढायां भवने छेदे मन बंछित सब सिद्ध करता [उडावणी] चवदै पूरव विद्यासारी, भगवंत भाख्यो यो अधिकारी, अनंत तिरयंच तिरिया नरनारी, सरधा शुद्ध पांमे हितकारी, नोकार जप्यां उंचीगत पांमें सिवरमणी सुख है तबका, यो संसार धुं० १, पृ-थवी अप वा तेऊ वाऊ वनस्पती वा त्रस काया, छउं कायानें मार रह्यो है आरंभ कर २ हरखाया, छेदन भे-

दन फरस आसना गालीदे दे धमकाया, जिकेजिकेनें दुख तूं देवै बैर जीवासुं विसाया, झूठ चोरी मैथुन सेवा परनारीसुं विलमाया, स्वाद भोग सुखरसना पोखी पर- भव चिंता नहीं लाया, कोडी २ माया जोडी लालच लोभमें वहु छाया, आसा तृष्णा मेटी नांही करता है माया माया, (उडावणी) कूड कपट छल छेद्र करता कोडीसटे तूं जा लडता, जोड २ घरमें धन धरता भायां कुडुंवसें खोटा करता, जनममरण ये वुरा जगतमें ज्यूं कंपैजीया हमका, यो संसार० २, क्रोधमान अहंकार भरा है, रागद्वेषमें रंगराता, जालफासी दगारे फटका अनेक हुन्नर तूं चल्लाता, मैणा मोसा देवै लोकांनें सा- चेनें कूडा करता, वडो आदमी वजे लोकांमें मिथ्यात तुझकों सुहावता, पाप अठारे रुचरुच वांधे मोह करममें मदमाता, अनेक वस्त तूं लेवै करावै पापकी पोट साथे धरता, मातपिता सब कुटंब कवीला बेटा लुगाई तेरा धन खाता, पापकरम तूं वांधे एकलो नरक निगोदमें पड- जाता, [उडावणी] सब मुतलबकी प्रीत सगाई, विना- सवारथ करै लडाई, घणा वल्लभ जो घाले घाई, पाप- उदे फेर नहीं कोई साई, सागर पल्योपम होता आउखा खूट जाय आतम दमका योसंसार० ३, म्हारा म्हारा कररह्यो मूरख थारा सब पेखणका है, कनककामनी कु- टमकबीला जमीघर देखणका है, ज्यूंवटाउ वासो लियो पंखी पंथपयाणा है, खरची होतो खारे मूरख आखर परभव जाणा है, मातपिता सब कुटम कवीला मिलीया जूं अयाणा है, विछड जाय सब जूआ २ मोहजाल मुर- झाणा है, जरदा सुपारी खानपांनसें मूंढां दिन हलाणा है, खावै पीवै गप्पां मारे योंही जनम गमाणा है [उडा-

वणी] सोस शब्द कुछ कीनो नांही, ढोर चरे ज्यों चरियो यांही मिथ्या दृष्टकै खूतो मांही. जैनधरम तुझ रुचियो नांही, मनुष्य जमारो फेर नहीं छै लोकलाज सु सैधमका यो संसार० ४, मिनख देवगत दुरलभ पामें तिर जंचगतिमें जावोला, छवंकायामें भमता डुलतां जनममरण वधावोला, लोह वांणियो घणो पिसतायो ज्यों तूं फेर पिस्तावेला, अल्प आउखो भूख तृषाशीत धूप दुख पावेला, नर्कनिगोदमें दुख घणा है समझ जीव ढेठेवाला, सागर पल्योपम मार नरकमें छेदन भेदन बहु ज्वाला, आंखमींच खोले तिलमातर सुख नहीं इतना काला, ससतरसूली अगन बछाडा जहर छांटमारे भाला [उडावणी] पछाड २ जम पकडे चोटा, विकराल मुदगर मारे सोटा, टुकडाकर २ मारे खोटा, ज्यूंदडी परलागे दोटा, काल अनंतो हुओरे रुलतां छाती नानूकी करे धबका यो संसार धुं० ५, इति पदं ॥

[अथ कर्मोंकी लावणी]

॥ करम नचावै ज्यूंही नाचै उंची हुवणनें सवी खसता नकसी हुवणसुं कोई न राजी निंद्या विकथा क्यूं करता [टेर,] ओगण बादतूं बोले लोकांरा चेतन भूल है तुझमांही, थारे करममें कांई लिखी है, थारी तुझैं सूझै नांही, चवदै पूरब च्यार ज्ञानथा करमोंसें छूटा नांही उंचो चढकै पडे कीचडमें ज्ञांनी वचन झूठा नांही, पाप उदेमें आवै चेतन फिर संभणी आवै नांही, पुंडरीक गोसालो देख जमाली खोटी व्यापै घटमांही, [उडावणी] मोह छाकमोटो मदपीसे, ओगण ओरोंका तूं क्यों घींसे, थारा ओगण तुझकों नहीं दीसे, अनेक ओगण या थारी

आतमा ज्ञानीवचन पकडो रस्ता, नकसी हु० १, पाच
प्रकारे काम भोगतूं सेवे सेवावै सारा करता, शब्दवरण
गंधरूप फरसतूं जहर खायकै क्यूं मरता, आछी भूंडी
कथा लोकांरी करतां आतम भारी करता, केने सरावै
केने विसरावै हरख २ आनंद धरता, आंबवंछै ओर बं-
वूल बावै, आंबरस मुखकिम पडता, रोग सोग दुख
कलह दालिदर दुखमें दुख पैदा करता, [उडावणी]
थारी म्हारी करतां दिन जावै, आमा सामा भाठा भि-
डावै, सुखमें दुखतूं बैर घलावै, ज्यूं दीपकमें पडे पतंगा
चेतन दुरगति क्यूं पडता, नकसी० २, हूंतरो तूं क्या
सरावै, अणहूंतका विसराता है, पुन्यपाप जो बांधा जी-
वनें वैसाही फल पाता है, किणनें माया दीवी भोगणने
कोई रुखवाली करता है, जस अपजस जो लिखा कर-
ममें जैसा करज बनाता है, पाप अठारे सेंधाजीवरे इणमें
सवही फसता है, स्वाद वाद सुखकांम भोगमें कूचापु-
ओंका करता है, [उडावणी] रुच २ पाप बांधे तूं सोरा,
उदे आयां भोगंता दोरा, लखचोरासी भुगते फोडा,
आकथोर ओर तुंबा निबोली पापफल कडवा लगता,
नकसी० ३, विपाक सूत्रमें मिरगा लोढो देखो पाप उदै
आया, हाथ पांव मुख आकार नांही राजा घर बेटा
जाया, जीमण पाणी एकही सुरमें झाडा नाडा उणमें
लाया, जों नदीको टोल सुमारे इनखा खेडन धकाया,
नरक सरीखा दुख जिनभाख्या मलमूत्रमें लपट रहा,
अत्यंत दुर्गंध जगा गंधावै भवरे मांही ढकारहा, [उडा-
वणी] गाडी भरियो आहार करावै, उण भवरेमें कोई
ग्यन जावै, जो जावै तो मुरछा आवै, विचित्रगति कर-
मोंकी भाखी ज्ञानीवचन तूं रहडरता, नकसी० ४, क्रो-

घमांन ओर मायालोभमें बोलरतणी गततैंपाई खायै रगड तुझथूका चेतन पगोमें ठोकर खाई, विवधप्रकारे साग चोहटे ओडीमें मालण लाई, एक कोडीरेकेई भागसें अनंतीवार तूं विकीयायो, चारगती छवकाया मांही दडीदोटे ज्यूंभमी आयो, काल अनंतो वीत्यो हे चेतन नरक निगोद झोकों खायो [उडावणी] उठे मांनथैं क्यों कीनोनी, हणे बोले ज्यूं बोल्यो क्यूंनी अनंत जीवांरो तूं जोखूनी, नानुचवाण ओकीयो उपदेश चतुर अरथहिरदे धरता, नकसीहु० ५, इति पदं ॥

[अथ उपदेश ढाल लिख्यते]

॥ श्रीजिनवर दीधाजी ये उपदेशकै, जे कोई राखे जो धरम नीरेसकै, दयाभाव दिल आदरो, मसतक आवै छै धोलाजीकेसकै, बूडापो आण कख्यो परवेसकै आठकर मांनेदो थे पेसकै, साधपणो सुध आदरो, पांच महाव्रतके मेरुसमानकै, मारग लीजोथेपाधरो, मीठीज बोलीधे अमरत वाणकै, सांभल चेतियांसूं निरवाण कै, चेतहो चेतहो मानवी १, पुन्यरे जोगे मिल्या तूने साधकै, वाणी सुनतां तूं मत करै वादकै, तहत करीनें तुमे सरधजो, उत्तम कुल मानवभव लाधकै, सतगुरु देवे छे सरले सादकै, भिन्न २ भावजभाखिया, सगलाई कह्याकरे ते भविजीवकै, तिणरेतो सेंठीहो समकित नींवकै, कइंकतो हिरदेमें राखजे, सोंस सगत व्रत माफक धारकै, मानवभव अेलोमती हारकै, मतवात मनमें करोनी विचारकै, चेतहो चेतहो मानवी २, साधतो कहेछै पर उपगारकै, वसतवनाय देवै तंतसारकै, थारी परनिख जोय पटावली नहीं तरनैण उघाडले दोयकै, उतपत थारी तूं इणविध

जोयकै, ज्ञानी देवपिण इम कह्यो तिणमें मत जाणरे तिलभर झूठकै, प्राण पाराथा तूं मती लूंटकै, जैसुख चावै थारे जीवनो, खिण २ आऊखो जावे छे खूटकै, तिण २ को कर जावसी छूटकै, चेतहो चेतहो मानवी ३, सुखम भाव सुणावै सत्यकै, आदि अनादरो लोनहीं अंतकै, भव २ मांहे तूं भटकियो, नवघाटी उलांघीनें आयो दुर्लभ मांनव भव पायकै, ऊंचनीच कुल ऊपनो सुलरमें चाली घणी बातकै, ओ म्हारो बापनें याम्हारी मायकै, मोह मायामें फस रह्यो, मोड़ मिल्या घणा रागने द्वेषकै, लारली उतपत इण विधतूं देखकै, चेतहो चेतहो मांनवी ४, नरनें नारीनो हुवोरे संजोगकै, भोगवतां संसारना भोगकै, उतपत जोय जीव आंपणी, विस्तार भाखसी पेटरे मांहिकै, जिण जगामें तूं ऊपनो आयकै, सांकड सरीररो बांधणो, नीचो है मस्तक ऊंचा है पायकै, छाती कने है गोड़ समायकै, नेत्र कने रहै मूठियां, आयनें ऊपनो उदरमझार शुक्र निरू धरंणरो कीयोतैं आहारकै, अबतो सेखी करे रे हजारकै, धार रे धार दयाधर्म्म सारके, चेतहो चेतहो मानवी ५, अशुचि जगामें ऊपनो जीवकै, झाझेरो नवमास तणी न्यायकै, चमचेड ज्यूं लटकी रयो, मातानें क्षुधाकै बेटानै भूखकै, निसदिन भोगियो है घणो दुखकै, सुत्र आचारांगमें कह्यो, गरभनें दुखरो कियोरे निचोडकै सुई सांमठी साढातीन करोडकै, अगनवरण कीवी आकरी, चांपदीवी तेतो सकल शरीरकै, तेसुं गरभमें हुवै अठगुणी पीडकै, सुत्तरमें भाखगया महावीरकै, चेतहो चेतहो मानवी ६, सीझारे बालक चामडे डाटकै, चवडे चोवटे नांखियो वाटकै, अठगुणी वेदनागरभमें जनमतां पिण कोडगुणी बले

जांणकै, ज्यूं जंत्रडीमें सोनी काढेजी तांणकै, तूं जनमपाथनें मोटो थयो, बलवंत हुवोरे जोवन पायकै, जनमतणी जागा मन जायकै, दुख पड्यां सागे आवै नहीं, मोह रह्यो तूं तो रमणीरे रूपकै, राखै घणी चतुराईमें चूंपकै, धरम विना पडसी अंधकूपकै, चेतहो चेतहो मानवी ७, ऊजली राखतो आपणी देहकै, किंचित् मातर लागती खेहकै, झटकै झाटकनाखतो, मैलरीक दैन सुहावती रेसकै, थारे तोहुंतीरे अधिकसनावकै, अब पाटियै बैठ पीठी करूं, अणगल नीररे तूं कररे सिनानकै, लाग रह्यो थारे आरत ध्यांनकै, चोवानें चंदन चरचतो, खावतो खोपरा खारक दाखकै, देही हुय जासीरे बल जल राखकै, चेतहो चेतहो मानवी, ८, कालारे भमर हूंता थारा केसकै, निसदिन पहरतो नवलाजी वैसकै, छेलायां करतो घणी निरखंतो चालतो आपणी पागकै, तीज तमासा देखतो वागकै, आडा आरीसावले जावतो, वात करेसुं मांही नैं पूछकै, तावदेने मरोडतो मूंछकै, मदमांहै नहीं मावतो तेल चंपेलनें अतरगुलाबकै, जग सगलो न्यारो इथारो फावकै, चावतो वीडानें सुंघतो फूलकै, धरमविनां आगे काई होसी सूलकै, चेतहो चेतहो मानवी ९, हाथामें कडा कानामांही मोतीकै, लाग रही थारे झिगमिग जोतकै, उंचो लपेटो तूं बांधतो, ऊपर निरादेतो घणा बंधकै, बांकी वो गरदनकै आंखियां अंधकै, ऊंठनें गोट हिवे नहीं निरखंतो चालतो पारकी नारकै, भव २ मांहै तूं हुसी खराबकै, जनम जरा घणी पांमसी पापरी बांधी है वहुलीरे पोटकै, थारी नेडी है नरक कमाईने खोटकै, काल इक दिनकर जावसी चोटकै, धरमीनें धन धनकै पापीने फोटकै, चेतहो चेतहो मानवी १०, सोनेरा पि-

याला रूपेराथालकै, मोंहगी मिठाईनें चावल दालकै, भोजन नव २ भांतरां, गींधीयो दाखपाणी पीयो ठारकै, मनवांरा बले पेलीजी पारकै, वसतमंगावै तिका तुरत तइयारकै, कमी नहीं कोई वातरी, केलगर्भ हुंती ज्यांरी कायकै, बादल जिमगई बिलायकै, सुख जो भोगीयाहै भरपूरकै, देही ज्यांरी देखतां हुयगई धूडकै, चेतहो चेतहो मानवी १२, सोवनरा सिंहासण हींडोलाजी खाटकै, विरदावली देवेछै चारण भाटकै, गिदरा दुले चाथुरमांनी ओटकै, जां नर नरानें काल करगयो चोटकै, पोहचा नरक दुवारे धूजै होठकै, लीजो सील दयातणी ओटकै, चोवाने चंदण तेल चंपेलकै, नारी मिली जांणे मोहन वैलके, चालती चालै हंसगज गेलकै, भरतार जोडी मिली तो भणी कंचनवरणी हुती ज्यांरी देहकै, तिणमांहे बल जल होयगई खेहकै, प्रीतम पदमणीनें दे गयो छेहकै, साहिब राखता अधकोस नेहकै, कारमो जोबनकारमी देहकै, इमजांणी धरमसुं तूं राखजे नेहकै, चेतहो चेतहो मानवी १३, रमणी पिणराचरही संसारकै, नितनया करती सिणगारकै, इंद्रतणी जांणे अपछरा, दासी उभी रहती बे कर जोडकै, एक बुलावै तो दश आवै दोडकै, सेज वैठी रहती सुंदरी चाबती बीडानें सूंघती फूलकै, कंतनें बालीजी वसमानकै, हुकम घरमें हलावती, बेटा बहूनें कुटुंब परवारकै, लोपे नहीं कोई तेनी कारकै, पूरबलादेखो रे पुन्यपर कारकै, पांम्या सुख संसारना, नितनव करती कपडां रीज लूसकै, गहणांरा डब्बा कपडांरी मंजूसकै, कामणीकनें गिणती नहीं इतीसदाई लीलविलासकै, एक दिन समान जाणती मासकै, तिण बाईरो निकल गयो सासकै, जाय मसाणामें कर-

दियो वासकै, मिलगई माटी ऊपर ऊगो घासकै, इम-
जाणी धरम करोथे मन हुलासकै, ज्यों टल जाय थारो
गरभाजी वासकै, सतगुरुनें दीजो साबासकै चेतहो०
१४, भारी करमा हुवै केई जीवकै, नरक जावणरीदीधी
है नींवकै, आंगूंच येह नाण येहुवा सुणैं नहीं भगवंतनी
बांणकै साधूरे ऊपर दुष्ट परणामकै, जिन मारग ऊपर
तपतो रहै, कूडो कलंकदे बोलतो झूठकै, मारनैं मोड़
ऊपाडतो मूठकै, चार बोलबले चालिया, तीनसे तेसठ
चालिया मत्तकै, झालमिली मिथ्यात्वनीलत्तकै पाहुणों
फिरसी तूं चारोंई गत्तकै चेत० १५, परनारी सूं तो लग
रह्यौपेम खोटा तें करदिया सोंसनें नेमकै, परणीरे दायन
आवती रहती घणी थारी माठीरे द्दष्टकै, काछ लपेटी
तूं होगयो भृष्टकै, अह नाण जोय इह लोकना, परगट
पंचनदेवैजी साखकै, भूपत डंडलै काटसी नाककै, लोका
मांहि फिट २ हुवै परभवमें पडसीरे थारीरे ठीककै, जठे
पडसीवले जम्मनी झीककै, मानरे मानरे तूं सतगुरुनी
सीखकै चेत० १६, जनकरी बेटीनें लेगयो लंक रावण
रावहुओ घणो वंककै, तिको लछमण हाथ मास्यो गयो,
दशातो तेहना हूंताजी सीसकै, वैक्रिय भुजवणावतो
वीसकै, पदमोत्तर द्रोपदानें लेगयो तिणतो बांधिया
माठाजी करमकै, कृष्ण गमायदी तेहनी सरमकै, पदमो-
त्तरपापीरो निकलगयो भरमकै, इम जाणी सीयलमें
जांणजो धरमकै चेत० १७, मयणरेहा तो मोहियो रूपकै,
मनोरथ राव गयो अंधकूपकै, पांच जणा हुया कोढीया
चार जणा घाल्या पईरे खंडकै, भूंडा कांमथकी हुया
घणा भंडकै, शीलवती पालियो शील अखंडकै, कवले
विशेषबहुजणा बंधुमती हुंतीजी नारकै, माली अरजुन

तेना भरतारकै, जक्षरी जज्ञामें गया, निर्जरा देखतां भोगवी नारकै, छवतो पुरुष एकया नारकै, सातोंईज-णारो हुवोरे संहारकै, नरक गया घणा जावसी, परनारी रोमोटोरे पापकै, जीवनें जोखो परभव खराबकै, चेतहो० १८, इसडी सांभल भगवतनी बाणकै, केइयक चेतिया चतुर सुजाणकै, परनारी धुर परिहरे श्रावक व्रत लीधाछै बारकै, साचीजी पांमेछै समकित सारकै, पडिक्कमणानें पोसाकरै, सूधीजी पालेछै जिनवर आणकै, तनेहुसी देवविमाणकै, चेतहो० १९, केइयक साधांरा करै गुणग्रामकै, केहीक करै दरसणसूं कामकै, केहीक वखाणसुणे सदा केहीक नहीं सकेछै आय पिणभावना राखेछै मनरे मांहिकै, तो पण गरज सरै घणी, केहीक छोड दिया घरबारकै, केहीयक लीनोछै संजम भारकै, मुगत गया घणा जावसी, इम परूपियो श्रीवृद्धमानकै, शालभद्दरनें संभालो जो सुख विपाकमें चाल्योछै पाठकै, कुमर सुबाहू बांध्या पुन्यरा ठाठकै, चेतहो० २०, अथर जांणजो आऊखो इसकै, अथिर जाण जो कारमी देहकै, अथिर जोबन धन जांणजो, अथिर जाण जो यो परवारकै, इम जांणीनें लाहो लीजो थैलारकै, दीजीयै दांन तजिये अभिमांनकै, ममता टालीनें ध्याइयै ध्यानकै, ज्ञान रतन जतन राखियै, मांन टालनें विनय जोकीजकै, सीयलपालीनें सोजस लीजकै, तपस्या करीनें करम क्षय करो, करमांरो बंधछै फिर धन लोभकै, तेहने जीतीयांसु हुवै मोखकै चेतहो० २१, धरमपर भावे जावै देवलोककै, मन गमता जठे मिले, थोककै रतन जडत घर आंगणो, नाटक पड रह्या बत्तीस प्रकारकै, कोडगमे देहीतणा सुख भोगवै, करेजेथथारे थेइ थेई करे घणा, चोसठ

मणरा हुवैजठै मोतीकैं, लाग रही जठै, झिगमिग जोतकैं, पल सागरना आऊखा जुज लग रही जरानें भूखकै, आवागमण आगलगी इसी लगाद्रूं थारे हेत जुगततो वेगी मिल जावैतनें मुगतकै, जठेरे सुखसै सासता चवद राज लोक ऊपर जांणकै, सिद्धसिल्लाछै तेहनो नांमकै, आवा गमण जठै नहीं ओ उपदेश कह्योछै एमकै, शुभ चित्त तूं राखजे पेमकै, गुण उपजसी अति घणा नरनारी मति कर-जो द्वेषकै, जो तुमें चावोछो जीवनें चैनकै, सीख साचकर मांन जो एमकै, चेतहो चेतहो मानवी २२, इतिपदं ॥

[अथ सात विसनकी लावणी]

॥ सात विसनमत सेवो कोइ, सब शुण ज्यो नरनार, इण सेव्यां कुण २ दुखपाया, सो कहूं एक तार, एक चि-त्तसुं शुणिया सेती, जब निकलेगा सारजी, मतसेवो कोइ विसन बुराछे परतिख देखलो, [टेर,] पांडव राजा मोटा राजवी, सूरवीर जोधार कृष्णशारीखा सायक वांहरै, पोतै बल अपार, जूवै रमणरै, मांह नैस कांइ, हारी द्रोपदा नारजी, मत २, तीनखंडरा साहवास कांइ, रावण राज माहाराय, सती सीताकुं लेकर आयो, वै ठो लंक गमाय, फीट २ हूवो मुल करै मांही, धका नर-कमें खायजी, मत ३, सेठ माकंदीतणाडीकरा, जिन रखनै जिनपाल, मदत कीवीजक्ष देवता, लिया आपरी लार, देवी देख जिनरिख डिगीयो तव, नाख दीयो तत-कालजी मत० ४, मांस आहारी नरवै पापी, करै जीवांरी घात, ढांडा ज्युं चरतारहैसकांइ, नही गिणै दीनरात, परभवमांहैं, हूसी खरावी नहीं, चालै कोइ साथजी, मत० ५, विषय विकाररा विकल हूवोडा, रखै वेस्यासुं

प्यार, नरकामांहैं घणीज पड़सी, ज्युं जूत्यांरीमार, अग्नि वरणी पूतलीसथारैं, चांपसी हीयै मझार मत० ६, मदरापान पीयनै उल्लू, हो ज्यावै मनमांहै, लाज बीहूणा मानवीस फीरै, गली २ के मांह, सातविसन इह सेवै जिनोंका, जनम अक्यारथ जायजी, मत० ७, चोरी करै पारकीस कांइ, कुलनै दाग लगावै, राजाडंडै लोकीक भंडै, फिट्ट २, घणो वोथावै, बांह पकड वैश्यामें नाखै, कोरडांरी मार लगावै जी, मत० ८, संवत उगणीसै गुणतालीसै, माहावदीमझार, उदयचंदगुरु आज्ञासेती, जोडकरी चितलाय, ऋषिहजारी वीनवैस कांई विसन तज्यां सुख थायजी, मत० ९, इतिपदं ॥

[अथ धर्म्म बजाजकी लावणी]

॥ कह्यो मांन वजाजी सद्गुरुदे पूंजी मांड दुकानजी, [टेर,] काया रूप नगरकै मांही, वैरागमालमो जाय रज मिथ्यामत बाहर कढावो, शुद्धभाव पाल विछाय हो कह्यो० १, जिनबाणीको गजलै भारी, जरा फर्क मत जाण, माप २ तनें सतगुरुदेवै, मतकर खेंचाताणहो कह्यो० २, जीवदयाका मुखमलभारी, रेसमहै संतोष, डव्वल जीणसमता तणोसरे, ज्ञान दांमदे रोकरे कह्यो० ३, तपस्याको बंदागरभारी, साडी शीलकी जांण, एसा व्यापार करो चेतनजी, मिले तुझें निर्वाणजी कह्यो० ४, इतिपदं ॥

[तेरा पंथीयोंके चरचाकी लावणी]

॥ सदाशिव पारवती प्यारा जटाविचवहत गंगधारा ये चाल ॥

॥ सदा मोहे सूत्र लगे प्यारा जिनोंसें होता निसतारा,

सदामुझ सुगुरु लगे प्यारा कुगुरुका करियै मूंकारा, [टेर,] जीववचायां पापवतावै, बोले मूढ अन्याय, प्रत्यक्ष गोसालो वीरवचायो, सतकपनरमें माय, उत्तर दैणकों ठोरनपाई वीरनें चूका बताय, उनके मोह राग वतावै प्रभूकों पाप लगावै, नीचवै निगोदजासी, ऊंचाफेर कबहू न आसी, धक्कागतचारमें खासीवे, सदा० १, सूत्र आचारंग देखलोसरे, नवमाध्ययन मझार, गौतमस्वामी पूछियोसरे, भाखी दीनदयार, तीनकरण तीन जोगसूंस, नहीं कीधो पाप लिगार, देखलो सूत्रसाखी, श्रीजिन मुखसें भाखी, संका मत इसमें जाणो, तहतकर वचन प्रमाणो, कुगुरु तज सुगुरु पिछाणो, बे सदा० २, दांन दियो श्रीवीरजिनंदजी लागो कहै बहु पाप, अनारज बहु ऊपना परीसा, करता एहवी थापतो मल्लिजिनंदकों एक पोहरमें, केवल ज्ञान समाप, सूत्र श्रीज्ञातामांही, झूठ रती इसमें नांहीं, अष्टकर्म्म दूर खपाया, जन्म ओर मरण मिटाया, परम पदमुक्ति पायावे, सदा० ३, अनन्त चोवीसी दांन देयकर लीधो संजमभांर, वरतमानमें दे रह्या, महाविदेह क्षेत्र मझार, आगामी कालमें दैसी अनंता, इसमें फरक नसार, सोच हिरदेकेमांही, कहूंमें कहा लगतांई, दानकों मूढ उठावै, झूठा बोला चोर कहावै, दशमें अंगे जिन फुरमावै बे, सदा० ४, दांन दयामें पाप वतावै, अनर्थ भाखै सोय, देवगुरु धर्म्म तीन विराधो, निश्चै दुरगति होय, ओतो मरकर गयो नारकी, सिद्ध पावडियो जोय, आठमो निन्हव जाणो, समझकर खूब पिछानो, ज्ञानचंद सुगुरुपसाये, कनीराम जोडवणाये, बादीकों आण हटाये बे सदा मु० ५, इतिपदं ॥

[अथ थूलभद्रजीकी लावणी]

॥ थूलभद्रजी कियो चोमासो दुक्कर २ चित्रशाला, प्रतिबोधी बारे व्रत दीया समझाई बैश्यावाला, [टेर,]ज्ञानभंडारा खोल्या मुनिवर हेतजुगतकर समझावै, लखचौरासी जीवाजोनिआ गतीचार कह बतलावै, तिर्यंच नारकी ओर देवता मनुष्यगतिया कहलावै, रुल्यो काल अनंतनिगोदे तुरत छेडो नहीं आवै, [उडावणी] हेवो अजाण आंधो मिथ्यात्वी कहलावै, हेवो उजड पडता जिन मारग मुनिलावै, कामभोग विष जहर सरीखा विपाक फल मतखा आला, प्रतिबो० १, जीवाजीव पुन्य पाप वताया, आश्रव संबरचितलाया, निर्जराबंध अरु मोक्षभेदनव भिन्न २ कर बतलाया, पृथ्वी अप्प ओर तेऊबाऊ वनस्पती ओर तसकाया, छउंकायाका नांव वताया उणकै घटमें विठलाया [उडावणी] हेवो त्रस थावर सुक्ष्म बादर बोले, हेवो परजापता अपरजापता खोले, पाप अठारै सब समझाया जन्ममरणका भय आला प्रतिबो० २, अष्टकर्म्मका भेद सुणाया प्रकृती ओर न्यारे २ समकित पांमी व्रत आदरिया बारे व्रत उन सुद्ध प्यारे, मोहछाक ममताने मारे तपजप करणी अधकारे, पक्कीधनंतर हुई श्रावगा समझगई वो सबसारे, हेवो दांनशील तप भावफेर आराधै, हेवा सम्बर पोसा फेर सामायकसाधै, पडिक्कमणो वाकरै रोजीनां नेमधर्म्म पाले आला, प्रति० ३, व्रतपाले दोषण टाले तपजप संजम खप करता, बाईसपरीसा सेवै मुनीसर बारे भावना चित्त धरता, मन्न वचन काया वसकीनी पांचुं इंद्री थिर करता, चार कषाय आठमद त्यागी इच्छा रहत

तपस्या करता, [उडावणी] हेवे थूलभद्रजी धन्य मोटा मुनिराया हेवे शीलसंजम वेश्याके घर वचाया, दुक्कर २ माहादुक्कर नानुजपै थांकी माला प्र० ४, इतिपदं ॥

[पूजश्री श्रीलालजीरी लावणी]

॥ दोहा ॥ राग सोरठ ॥

॥ पूजपधाखा आप हुवा आनंद चित्तचावीया, गुणरत नांरी खाण थांरा दरशण पावीया १, उगणीसे गुणसठे नव साधूथे आवीया, चोमासो सुखकार धरमध्यांन चित लावीया २, बांणी अमृत धार, सुणतांही हुलसेहीया परसन पूछे आय, भिन्न २ कर समझावीया ३, भाया बाया करै अरज चितमनसें सुण, लीजीयै, कलपे सोचोमास, फेरवीकाणे कीजीये ४, [चाल पणिहारी,] श्रीश्रीमहाराज पूजजी श्रीलाल जीथै आया, वीकानेरका श्रावक श्राविका दरशणकर २ हरखाया, [टेर] बालपणेमें व्रत आदरिया जवानीमें संजम धारै, भणियागुणिया सूत्र वांचिया निरनोकीनो बुधभारे, पंचमहाव्रत मेरू जैसा ऐसे बोझसें नहीं हारे गुणसत्ताईस दीपै मुनीसर जिनवचनोंकूं सिरधारे, गांम नगर पुरपाटण विचरै प्रतिबोधै बहु नरनारै, भवि जीव सुणकर सरधा पांमै समकित सेंठी हुवै ज्यांरे, [उडावणी] हेवो दानदयाकै मारग मुनिवरचालै, हेवो अज्ञानीकूं रस्ते मुनिवर घालै, हेवों पाले शुद्ध आचार दोष सब टालै, ऊमर छोटी बुध है मोटी ज्ञान ध्यांनकर पदपाया, वीकाने० २, मन वचकाया वसकरलीनी आठ वचन पूरा पावै, करै तपस्या धरै थोकडा रागद्वेषकूं पोलावै दोषवयालीस टालै मुनीसर सावज मिसर वंचावै, वडे धीर गंभीर विचक्षण अव-

सर देख घरमें जावै पूछागाछा करै चोकसी आहार सूझतो वैलावै, जिसघर मुनिवर हाथ जो फरसै सो वड-भागी कहलावै [उडावणी] हेवो उपयोगसहित वसकी काया आतमकूं, हेवो धनधन मुनिवर मारै अपणे दमकूं, हे मैं जाउं वलिहारी सीस नमाउं उनकूं, साधु करणी-पार उतरणी क्षमातणा गुण है सवाया, वीका० २, राज मलजी लालचंदजी मगन चांद मुनि तपधारै, गवूजी टीकम कजोडी गंभीर मलजी सुखकारै, आठ मुनिः संग आया पूजके इछा माफक रहै सारै, माहा सतियां महा-राज विराजै सात ठाणासें अधिकारै, सोनाजी जिवणाजी कहियै पान कवर विद्या धारै, सिणगारांजी पेमकव-रजी सो भाग भूरांजीरी वलिहारै, [उडावणी] हेवो सतरे भेदे संजमका गुण छाजै, हेवो तपस्या करकै देखो सिंघ ज्यूं गाजै, हेवो धरम करै सो सव निर्जराकै काजै, आश्रव रोकै संवरमां है तप जपमें नहीं सरमावै, वी-काने० ३, अनाचार वै वावन टालै नवकलपी विहार करै, वारे भावना भावै मुनीसर नववाड सुद्ध मनमैं धरै, दोनुं वखत वखाण वाचता अष्ट कर्मासूं खूव लरै, हेत जुगत दृष्टांत सवइया भिन्न भिन्न भिन्न करकै खवर पडै स्वमती परमती आवै परिषदा पुन्यवंत दया धरम करै, जिनवर वांणी अमिय समाणी आराध्यां दुख दूर करै [उडावणी] हे गुण वहोत गुरूका केणेमें नहीं आते, हेवो छोडा जगत जंजाल भविकुं समझाते हेवो निज गुणपाते सो शिव पुरकूं जाते, तेज करण गुण करै जि-यांरा ज्ञान ध्यान हुवा चितचाया वीका० ५ इति पदं ॥

[पूजश्री श्रीलालजी महर्षीजीकी लावणी]

॥ श्री हुकम मुनि महाराज हुवे वड भागी महाराज क्रिया उद्धार कराया जी शिव लाल उदय मुनि पाट चोथश्री लाल दीपायाजी, [टेर,] उगणीसै छव्वीसे टोंक सहरके मांही महाराज पूज्यका जनम जो थायाजी है ओसवंश बंब जिन कुल धन २ कह लायाजी, चुनी लालजी पिता हरख बहु पाये, महाराज सर्वको अधिक सुहायाजी, धन्य चंद कवरजी, मात, जिनोंनें गोद खिलायाजी, [उडावणी] हे क्या वालपणामें सूरत मोह नगारी, जो देखे जिसकुं लागे अतही प्यारी, हे छोटीवयमें संगत साधांकी धारी, शुद्ध सरधा पांमी मिथ्या मतकों टारी महाराज जैनका भक्त कहायाजी, शिवलाल उ० १, फिरकीवी सगाई मात ओरभाईनें महाराज नार सुंदर परणायाजी हे मान कुंवरजी नाम रूप गुण संपन पायाजी, फिर थोडा दिनांमें चढा अतुल वैरागै महाराज संजम लेवाचित चायाजी, नहीं दीनी आज्ञा मात भेख साधूको गायाजी [उडावणी] उगणीसे वीस दूणा जोचार सालमें, मुनि दीक्षा लीधी कोटेके साध नालमें, सबतजा जगत नहीं आये महो जालमें, नहीं लगा दिल आचार उनकी चालमें, महाराज फेर चोथ मुनीपैं आयाजी, शिव लाल० २, उगणीसे सेंतालीस साल महा सुखदाई महाराज चोथपैं दिक्षा पाईजी, मुनि वृद्धि चंदजीनें सरांय शिक्ष सद्गुरु फुर माईजी, फिर संजम क्रिया पाले दिन २ चढते महाराज सूत्रको ज्ञान सिखाईजी, बहु बोल थोकडा सीख बुद्ध अधकी दिखलाईजी [उडावणी] अढारे वरस ऊमरमें तज घरबारे, नहीं ममता किससें तजा सर्व संसारे बहु संजम

किरिया पाले शुद्ध आचारे वे पंच महाव्रत मेरूसम सि-
रधारे महाराज भव्यजीवां मन भायाजी, शिव० ३,
फिर केईवरसांलग ज्ञान गुरांसें लीना महाराज सालसो
वावन जाणोजी, क्या काती सुदिके मांह सहर रतलाम-
पिछाणोजी, मुनि विनयवैया वच्च कर साता उपजाई,
महाराज पूज्य मन अतिहरखाणोजी, हे लेवो पूज्यपद
आज स्वयं मुख इम फुर माणोजी, [उडावणी] जब
गुरु आग्रहसें पूजपद मुनि लीनो, पूज मस्तक हाथ रख
हित उपदेश बहु दीनो, मुनि शुद्ध भावसें अमृत सम-
रस भीनो, चारों संघ सन्मुख भोलावण बहु दीनो,
महाराज चौथ पूज्य स्वर्ग सिधायाजी, शिवला० ४, मु-
निसम भाव शांति मूरत है प्यारी, महाराज संप गुण
अधको पायाजी, ये भक्त वच्छल मुनिराज सर्वकों
अधिक सुहायाजी, रतलाम सहर चउमासो पूरण करकै
महाराज फेर इंदोर सिधायाजी, केई गांम नगर पुर
विचर बहु उपगार करायाजी, [उडावणी] मुनि जहां
जावै जहां सबकों लागै प्यारे, क्या अमृत वांणी मूरति
मोहन गारे, मुनि जहां विचरै जहां करै बहुत उपगारे,
तपस्या सामायक पोषध व्रत बहुधारे महाराज भव्य
मन बहु हुलसायाजी शिव० ५, फेर साल अठावन नवे
सहर पधार्या महाराज जहांमें दरशण पायाजी कांई
रोम २ हर खाय हीया मेरा उमटायाजी, उस वखतथी
मेरे मनमें गुण कथ गाऊं महाराज दिलमेरा ललचा-
याजी पिण थिरता नहीं थी जिससें नहीं कुछ गुण कथ
गायाजी [उडावणी] अब दीन दयाल दयानिधि तुम
हो मेरे अब रखो हमारी लाज सरण हूंतेरे, कृपाकर का-
टोलख चौरासी फेरे, दरशण कर पीछा आया फिर

अजमेरे महाराज मनमें बहु पछतायाजी शिव० ६, अठा-
वने साल जोधाणे चउमासो कीनो महाराज धर्मका
ठाठ लगायाजी अमराव मुसद्दी लोग वचन सुण बहु
हरखायाजी जहां बहु त्याग पच्चखाण खंध हुवा भारी
महाराज जैनका धर्म्म दीपायाजी, अमृतसम वाणी सु-
णकै, बहु जीव सरधालायाजी [उडावणी] फिर साल
एक कम साठ बीकाणे चौमासो, श्रावक श्राविका धर्म्म
ध्यांन कीयो खासो, तपस्याका नहींथा पार झूठ नहीं
भासो स्वमति परमति सुण वचन हुवा हुलासो, महा-
राज भव्य जीवकेइ समझायाजी, शिवला० ७, फिर
साल साठके उदेपुर चउमासो महाराज मुलक मेवाड
कहायाजी जहां लगन धर्मकी बहुत जिनवचनां चित-
लायाजी, जहां राजमुसद्दी अहलकार केई आये महाराज
दरशन कर प्रश्नथायाजी, फेर दिया खूब उपदेश जैन
झिंडा फर रायाजी, [उडावणी] फिर साल इकाष्टे टोंक
चौमासो ठायो, जहां हुआ बहुत उपगारकै आनंद
पायो, सब श्रावक श्राविका धर्म्म करण हुलसायो, बहु
हुवा त्याग पच्चखाण सर्व मन भायो, महाराज जन्मभूमी
कह लायाजी शिवला० ८, फिर साल बासठै जोधाणे
चउमासो महाराज दूसरी वार करायोजी, एह वचन अ-
मोलख सुनकै भव्यजीव बहु हरखायोजी जहां दया
सामायक हुवा बहुतसा पोसा महाराज खंध कितनांही
उठायोजी, तपस्या सम्बर नहींपार भविकमन बहु
लोभायोजी, [उडावणी] फेर स्वमति परमति प्रश्न पूछ-
णकूं आवै, बहु हेत जुगत भिन २ करकै समझावै,
बलिनय निक्षेप प्रमाण जो खूब बतावै, नहीं पक्षपातका
कांम है सरल सभावै, महाराज वचन सुण सब उल-

श्रायाजी शिवला० ९, फिर साल तेसठे रतलाम आप पधारे महाराज श्राविक श्राविका मनभायाजी, की चउमासेकी अरज पूज्यसें आण मनायाजी ये वचन पूज्यका अमृतसम नित वरसै, माहाराज सुणन सहुमन ललचायाजी, दिवान मुसद्दी ओरराज अहलकार केई आयाजी, [उडावणी] जहां मुसलमानकेइ वखाण सुणवा आये, उपदेश पूज्यका सुण कर बहु हरखाये, जहामद मांसका त्याग किया शुद्ध भावै, फिर ठाकुर पचेडे काकूं सिकार छुडाये, महाराज जैन परभावक थायाजी, शिवलाल० १०, फिरकर चोमासोभाण पुरे पधारे, महाराज भव्य जीव बहु हरखायाजी, एक ठाकुरकों समझाय वदद सेरा वचायाजी, फिरकेइ जाल मछयांका बंध करवाये, महाराज अतिसय गुण अधिका पायाजी, कांइ सूरत देख दिलमस्त हुवै धरम चितलायाजी, [उडावणी] जो वखाण सुणवा एक वार कोइ जावै, फिर नहीं कहणेका काम तुरत चल आवै, उपदेश सुणके दिल उनका हुलसावै, करे आपसुं पचखाण त्याग मन भावै महाराज आपका गुण बहु छायाजी, शिवला० ११, फिर कोटेसें अजमेर जो आप पधारे महाराज नव ठाणेसें आयाजी, बहु हाव भावके साथ चोमासो जाण मनायाजी, अजमेर पधाख्या सुणके झटमें आया महाराज दरशण कर प्रश्न थायाजी हूवो हरख हिये उल्लास जोड कथ गुणमें गायाजी [उडावणी] कहे लालकनइया वीकानेरकावासी, अजमेर लावणी जोडकै गाई खासी, चोसठे साल असाढ एकमसुदि भासी सब श्रावक श्राविका सुणकै हुआ हुलासी, महाराज पूज्यका जसस-

वायाजी शिवलाल उदय मुनि पाट चोथश्री लालदी पायाजी १२, इति पदं ॥

[अथ रुघनाथजीकी लावणी]

॥ मन वचकाय लाय परभूसें, निज आतमकूं तारी है, रुघनाथ मुनीकै मुनीकै, दरशणकी बलिहारी है, [टेर०,] पंच महाव्रत पाले निरमल, सुमत गुपत चितधारी है, इंद्री पांचूं जीतकै, मन ममताकूं मारी है, हजारी मलजी शिक्ष आपकै, अघोर तपस्सी भारी है, देश णोकमें चोमासो, कीयो बहोत उपगारी है [उडावणी] बडे धीर गंभीर पीर छवकाया अधिकारी है, रुग० १, गऊतणी परकै गोचरी, दोष बेतालीस टाली है, वडे विचक्षण वरतकूं, बारंबार संभाली है, तीन करण तीन जोग शुद्धवे, जिनकी आज्ञा पाली है, अष्ट मदकूं जीतकै निज आतम उजवाली है, शील जो पाले नववाड क्षमा खडग दिलधारी है, रुघना० २, बेले २ करे पारणो अरस निरसवे आहार करै, तपस्या रूपी बाण धार अष्ट करमसुं खूब लडै, क्रोध मांन माया कपटाई लोभ लालचकूं दूर हरै, वीर जिनंदका जिनंदका हिरदे वीचमें ध्यान धरै, पर सन पूछै कोई मेवारी वेपरसन पूछै कोई दैउत्तर सुविचारी है, रुगना० ३, दोनूं वखत वखाण वांचता नव तत्वादिक भेदकहै, हेत जुगत कर भव्य जीवां हिरदेमें वैठाय दहे, बाणी जिनकी अमृत जैसी निरमल गंगा नीरव है, सुण वैराग पांमें भव्य जीव तत खिण उठकर त्याग लहै, ममता मूरछा नहीं किसीसें अप्रतिबद्ध बिहारी है, रुगना० ४, सरब पृथवी करूं जो कागद लेखण करूं जोगिर राई, खीर समंदर करूं जोस्याही

तो गुणपार आवै नांई, जेसें पंगु चढे गिरपै मनमें हरख आनंद लाई, सुण वैराग पांमें लावणी कनीं राम कहै सुखदाई उगणीसै पचासे चोमासो भीनासर सुखकारी है, रुघना० ५, इति पदं ॥

[पूज श्री उदयचंदजी महर्षिजीरी लावणी]

॥ कर लै पूज चरणका ध्यांन जिणासुं पांमें सुख नि- धान, [टेर,] मुरधर देश मालवै मांही जनम भोम सुथान उज्वल वंश उजागर ऊपना उदय चंद भूभान, करले० १, देख अनंत असार जगतनें, विषकी वेल समान, सम कितसेल संभाही सूरां, ऊठ खडेमै दान, करले० २, ज्ञान तुरीपर चढ कर वैठा, सुमती साज पलाण, तप तरवार ढाल धीरजकी करता अष्ट करमकी हांण, करले० ३, आदित्यजेम उद्योत करत है, मिथ्या मेटन जान, हेत उपदेश देत सुखकारी, उपगारी पद प्राण, करले० ४, परंपरागत पद आचारज सोहत गुणकी खाण, मुनी सारांमें वृद्ध विराजै योही इंद्र विधान करले० ५, देश २ का नरनें नारी, धरता चरणा ध्यांन, पुन्यवंत वड भाग हमारा, मिलिया दरशण, आन, क० ६, चारू संगके वीच विराजै पंडितपणा वखाण, भरी सभातो एसी दीपै, जाणे फूलण श्रीजिनवाण, क० ७, देव गुरूधरम परसादे सदा जोत जगान हीरालाल कहै पूजजी दिन २ चढते वान, करले० ८, इति पदं, ॥

[अथ हुकम मुनीजीकी लावणी]

॥ हुकम मुनी दीपै जगमांही सूरवीर हो रह्या ऋषी सर तपस्याके मांही, [टेर,] कोटे कानीसुं आया मुनीसर

किसन गढमांही संवत अठारे साल तेणवै फागण मास मांही हु० १, बेले बेले करे पारणो हुवै जठां तांई एक पिछे वडीमें रहे मुनीसर बारे मास तांई हु० २, लिखी वीनती आप पधारो, म्हारे सहर मांही, मोटा छो मुनि राजकै, महिमा फैली जगमांही, हु० ३, ज्ञान ध्यांन तो घणोईकहीजै, ज्यांरो पार नांही, भगवतरी अज्ञामें चालै, धन २ मुनि राई, हु० ४, ज्ञानतणे घुडलेपर चढिया, दृढ किरिया मांही, कर केसरिया उडदीवां मुनि करम कटक मांही, हु० ५, पंच महाव्रत निरमल पाले संका ओर नांही, दोष बयालीस टाले मुनीसर धन २ जगमांही हु० ६, सरवमीठेरा त्याग मुनीनें, जाव जीवतांही, तलीवस्त खावैनहीं मुनिवर धन २ मुनिराई हु० ७, कोड जिभ्यासुं गुण करूं तो तोही पारनांही, एक जिभ्यासूं गुण करूं तो, करूं कठातांई, हु० ८, संवत अढारे साल गुणंतरे मिगसर मास मांही, गुरू भेट्या श्रीलालचंदजी, बूंदी सहर मांही, हु० ९, पूज २ श्रीलालचंदजी मोटा मुनिराई ज्यांरे गुणांरो पार न आवै, सबकूं सुखदाई, हु० १०, इति पदं ॥

[ऋषि मुन्नालालजीकी लावणी चाल पणिहारीकी,]

॥ मुन्नालाल मुनि महातपधारी जाउं सदामें बलिहारी षट् कायाके पीर वडे गंभीर धीरगुण अधिकारी, [टेर,] मुलक मालवा रतनपुरीमें जनम लियो मुनि सुखकारी, अमरचंदजी तात नंदाबाई मात जिनोंघर अवतारी, ओसवाल बोहरोंके कुलमें शसिसम शोभै अतिभारी, उगणीसे छव्वीसे साल जनम सुकमाल हरख बहु नरनारी, [उडावणी] है काया बालपणै मुनि वचन मिष्ट

पयधारा, है कायासरीर सुंदराकार लगै बहु प्यारा है क्या छोटी वयमें प्रगटे हैं गुण सारा, सतसंगत साधोंकी करकै सीखा ज्ञान अपरम पारी, षट्० १, उगणीसै अड-तीसे सालमें रतनपुर लागे प्यारी, असाढ सुदनम्मजाण मंगलवार आण मुनि दीक्षाधारी, पूज उदयचंदजीकैपासै महा वरत शुद्ध उच्चारी, रतन चंदजी गुरु किया चरण चितदिया वडे आज्ञाकारी, [उडावणी] है क्या शुद्ध मन चित्तसें संजम मुनि वरलीना, है क्या तजा जगत जंजाल दया चितदीना, है क्या अल्प दिनोंमें ज्ञांन ध्यांन रंग भीना, विनय विवेक नेकगुण प्रगटे क्षमा गुण-पर तिखजारी, षट्० २, पंचमहाव्रत सूधा पालै तप जप संजम खप करता, दोष बयालीस टार लेवै शुद्ध आहार भावना चित धरता, बारे भेदे तपस्या करकै अष्ट करमकूं वैहरता, पालै शुद्ध आचार सूत्र अनुसार पापसें वै ड-रता [उडावणी] है क्या सतरे भेदे संजम मुनिवर पाले, है क्या बावीस परीसाजीत दोष सहु टाले, हेक्या नवकलपी विहार मुलकमें माले, बहु बरसां लग पुज्य पासमें सुत्र उद्यमकीनो भारी, षट्० ३, गांमनगर पुर-पाटण विचरे महाबाल विरमचारी, नववाडसील पार लोपै नहींकार जगमें महिमा सारी, गुण सत्ताईस दीपे मुनीसर कहूं कहांलग विस्तारी, तीन करणसें योग पाले शुद्धयोग निज आतमकूं उजवारी [उडावणी,] हे क्या स्वमती परमती पूछै परशन आई, हे क्या हेतजुगत दृष्टां-तसें दे समझाई, हैक्या न्यायनीतकी रीतसें दे बैठाई, वचन जिनोंका सरधे सोही पांमें भवजलसें पारी षट्० ४, मुन्नालालजी महागुणधारी बालचंदजी परउपगारी, लालचंदजी मुनिजाण हुकम गुण खाण चंद आतमतारी,

गंभीर मह्ल और चूनीलालजी धनराजजी धीरजधारी, ठाणे आठसुं सोहै भवी मनमो है सवकूं है हितकारी [उडावणी] हेक्या वहु सूत्रकैजान चरचा वहु करता, हैक्या पूछे परशन तुरत संशय हरता, हैक्या जैन आगम परमाण पापसें डरता, एकएकसें अधिक गुणोंमें कहुं कहां लगविस्तारी षट्० ५, उगणीसे ओर साठेसालमें वीकाणे मुनि आया है, पूरी मनकी आस कीयो चोमास सवकै मन भाया है, दोनुं वखत वखाण वांचता सुणकै भवि हरखाया है, अमृत जैसी वाण वरसती आण सवकै चितचाया है, [उडावणी] है क्या भव्यजीवोंके भाग मुनीसर आया हेलगा धरम ध्यानका ठाठ सवकै मनभाया हेक्या आवड महातमा छंद जोडकै गाया, फेरुं दरशान दीजो मुनिवर अरज करै सव नरनारी षट्० ६, इति पदं ॥

[अथ किरपारामजी ऋषीकी लावणी]

॥ मुनिवर मोटा महाराज हुकमचंदजीनें गुरु कीया, चतुरभुज महाराज उणपासै संजम लीया, विनयवंत सुविनीत थां । सरखा शिष्य दीपता, संजम सूरालाल इंद्री पांचुं दीपता, कोडजिभ्या गुणग्राम वरणीमें आवै नहीं, साधु रतनारी खाण इकजिभ्यासुं इमकहुं, वैयावच्चरे काज चार मुनीथे आविया, सादूलजी महाराज मिथ्यात घणारा झाडिया, सादूलजीकी वैयावचमें वीकानेर साथे आया, धीरज शीतल क्षमा सागर किरपाचंद मुनीराया, [टेर,] चतुर विचक्षण जाण अवसरका पंडतराज है गुणधारी, भिन्न २ कर समझावै सभीनें विद्यावंत है अधिकारी, हेतजुगत दृष्टांत सवइया कहत कुंडलिया लघु

प्यारे, महमोहन वेलसरब परषदा बरसे ज्यूं अमृत धारे
है सादलजी महाराजकै मुनीसर मोटा, है वांरी सेवाकरै
नरनार उसीकै नहीं टोटा, हेलिया महावीरका ओटा,
पडिक्कमणा और बोल थोकडा सीखै बायां और भाया,
धीरज० २, पांच महाव्रत अैजी पालै सुत्र सिद्धांत भण-
तासारा, पांच सुमती तीन मनगुसी वुद्धचार जो विस्तारा,
पांचूं इंद्रीगोपै मुनीसर षटरस छोड्या सब सारा, धो-
वणपाणी पीवै मुनीसर साध मारग खंडै धारा, हेवे स-
तरे भेदे संजम मुनिवर पाले, हेवे नवकलपी विहार मु-
लकमें मालै, हेवे बावन अनाचार टाले, पालपरूपै पर-
भव चिंता जनम मरणका भय लाया धी० ३, दोष
बयालीस टाले मुनीसर आहार सूझतो वेलावै, बारे
भेदे करे तपस्या आठ करमांनें उडावै, बारे भावना
भावै मुनीसर सवी जिनेसर वेचावै, निरवद्य भाषा बोले
मुनीसर धरम उपदेशमें बिलमावै, हेवे सज्या संथारो
सदा पलेवणा करता, हेवे बाईस परीसासहे पापसें ड-
रता, हेलिया मुक्तिमारगका रसता, इरिया भाषा और
एषणा उपयोग सहित बसकरी काया, धीर० ४, त्यागी
वैरागी नहीं सवादी नित्त बुलाया जावै नहीं, अवसर
देखकर घरमें जावै अजाण तकसुं आवै सही, पूछा गाछा
करे चोकसी गाला गोली करे नहीं, अचित्त वस्तुवे लेवै
कलपती दोषण लागेसो लेवै नहीं, हेवे जिसघर उस
वडभाग बहरण मुनि जावै, हेवे हरखे चित्तहुलास आ-
हार बहरावे हेवो भवसागरतिर जावै, चित्त वित्त पात्र
संजोग मुस्कल भवि जीवांकै मनभाया धी० ५, सीयल
पालै नववाडसुं क्षमा खडगकूं हाथ लहा, आठकर मांनें
मारहटाया धरमधूसां बाजरहा, गुण सत्ताईस दीपे मु-

नीसर जिन वचनापर चित लाया, चार कषाय आठ-
मद त्यागी रागद्वेष उपसमा लिया, हेमें चढते उछरंग
पेमनानु गुण गाया, हेमें ऊजड पडते मुनिवर मुझ सम-
झाया, हेमें खोटा धरमा वोसराया, धरम ध्यान उद्योत
वीकाणे भाग संजोगेथे आया, धीर० ६, इति पदं ॥

[ऋषि गैनचंदजीको लावणी ।]

॥ गैनचंदजी गुणवान गुणोंका पार नहीं पाया, भव
जीवां उपगार चोमासे वीकानेर आया, [टेर,] असाढ
सुदि चोथ वार सनिवारनें आया धनघडी धनभाग पू-
जका दरसण जो पाया, वायां भायां मिल करे बीनती
सुणियो मुनिराया, महरकरीनें भलां पधास्या हुवा चि-
तका चाया, [उडावणी] वायां भायांकी अरज सुणीजै,
चौमासो वीकाणै कीजै, इतनी मोपरमहिर करीजै, हुसी
घणो उपगार सरब जीवनकै मन भाया, भव्य जी० १,
मुलक मालवै मांह बडोदासहर बडा भारी, परमेचा
मोहताकुल ऊपना हुवा जोगधारी, धन्य मात और
पिता जिनोंनें अैसा सुतजाया, पूज जीवराजजी पर
दिक्षा लेकर जिन धरम दीपाया [उडावणी] सुद्ध मन
चित्तसें संजम लीना, छव कायानें अभय दान जो दीना
एहवा उत्तम काम जो कीना, वैयावच्च बहु करै गुरांनें
साता उपजाया, भवि० २, पंच महाव्रतधार कार नहीं
लोपे श्रीजिनकी, सम परिणामें सहै परीसा नहीं ममता
तनकी, दोष बयालीस टाल आहार शुद्ध वै लेता है,
तपस्यारूपी मालकारनें भाडो कायाकूं देता है, [उडा-
वणी] अष्टकर्मांसुं सन्मुख लडता तपस्यारूपी बाण जो

धरता, पापरूप रज दूरै हरता, जनम मरण ओर जरा तीनोंका भय घटमें लाया, भवि० ३, नववाड शीलपाल आठ प्रवचन चितलाया, चार कषाय आठमद त्यागी रागद्वेष उपशमाविया, वारे भेदे करै तपस्या जिसका पार नांही, वडी तपस्या करी जिनोंनें कहूं कठातांई [उडावणी] सोले पारणे सोले करिया, दिन बत्तीस अभिग्रह शुद्ध फलिया, धोवण आगार इता तप करिया, छुटकर तपस्या करी जिसीकी गिणती नहीं लाया, भवि० ४, सवादवाद इंद्री सव जीता समता चितधारी, धन्य पुरुष रसना वस करता जिन पुरुषोंकी वलिहारी, पूज पधाख्या वीकानेरमें हुवा उपगार भारी, सम्बर पोसादया समायां नहीं आवै पारी, [उडावणी] वायोंमें तपस्या हुई भारी, कहां लग महिमा कहुं जियांरी, जिन घरकी चाहूं वलिहारी, पांच महीना सुखसें वीता आनंद वहु पाया, भवि० ५, दोनूं वखत वखाण देवे जद अमृतधारा वरसै भविजीव पिराणी सुण २ हरखै समकित शुद्ध फरसै, स्वमती परमती पूछै परसन दै उत्तर सुत्रन्याय, कोइमानै कोऊ नहीं मानै सव परसम भाव, [उडावणी] न्याय नीत सव चितधरे हैं, पक्षपात दूर करे हैं, जो पुरुषोंका काज सरे हैं, एसे मुनीकै चरण भेटते दुरगति विरलाया भवि० ६, गैनचंदजी गुणवान जिनोंकी महिमा हदछाया, कोड जिभासें करूं गुणतो पार नहीं पाया, चुनीलालजी चोखे चित्तसें छोडी जगमाया, दोयठाणासें कियो चोमासो भविजीव मन भाया, [उडावणी] कनीराम मन उछरंग आया, वुधसारू अलप गुण गाया, पेम मगन हुइ मेरी काया, उगणीसे सैंतालीससाल काती सुदि नवम गाया, भविजी० इति पदं ॥

[अथ सवइया रूपचदजीकृत ।]

॥ उद्योत प्रकाश भयो अंधकार नासभयो जेसें भानु उगतही तिमर नसाय्यो है, जेसें उदै चंदमुनि भेटत मिथ्यात भागो दानशील तपभाव हिरदे विचाय्यो है, डूबतोहो कूपमांहि, काढलीनो ग्रहबांहि सावचेत कर शुद्ध मारग वताय्यो है, वोराहूतो दीनो मोय खरच नम्मंगे कोय असो निगरंथ गुरु रूपचंद धाय्यो है १,

सुमत गुपतधार निरदोष लेवे आहार दोष बयालीस टार ममताकूं मारी हे, मिथ्यामत परिहरे समकित चित्तधरे संजमकी खपकरे मोटा उपगारी है, तपस्या करणशूर विद्यागुण भरपूर दोषसेती रहे दूर गुणारा भंडारी है, रूपोकरे अरदास राखो चरणांरे पास पूज श्रीलालजीसें वंदना हमारी है २,

कर्म्मकाटण शूर क्षमागुण भरपूर दीपे है अधिकनूर कीरत सवाई है, हीरालालजी है तात साकरबाई है मात ओसवंशगांधी जात बहोत नरमाई है, गुरुरतनेस पाय घटमें बैरागलाय दीक्षालीनी चित्तवाय ऋद्धि छिटकाई है, कर्म्मचंदजी मुनि ज्यारी प्यारी लागेधुनि रूपचंदकाने सुनी अमीवरसाई है ३,

---

[अथ ऋषि कर्म्मचंदजीकी लावणी ।]

॥ आलाप, अरिहंत सिद्ध समरूं सदा आचारज उवझायरे साधु सकलके चरणकूं में वांदू शीश नमायरे १, कर्मचंद महाराजका में निरमल दरशण पायरे धरम ध्यान उद्योत देखी, मनडो बहु हरखायरे २,

शरणमें आया तुमारीरे श्रीकर्मचंदजी महाराज अ-

रज अब सुणो हमारी रे, [टेर,] हीरालालजी पिता आपकै, साकरबाई मात, कडबड गांममें जनम लियो सिरे, गांधीथांरी जात लागती सबकूं प्यारी रे, श्रीकर्म० १, उगणीसे गुणच्यालीसमें, रतनचंदजी गुरुकीना आसोज सुदि तेरसदिन मंगल, संजमके रंगभीनां, छोडदी ममता सारी रे श्रीक० २, सतरे भेदे संजमधारी, दोष बयालीस टालै, ज्ञान ध्यांन क्षमागुण भारी, जिन मारग उजवाले, लोभ ममताकूं मारी रे श्री० ३, ज्ञान ध्यांन भणनेतणो सरे, उद्यम करै दिनरात, धरम ध्यांनमें दिन गमेसरे कांई, नहीं दूसरी वात, मुनी मोटा उपगारी रे, श्रीक० ४, बीकानेरका श्रावक श्राविका, एककरे अरदास, चोमासेरो कलपजिकोस कांई, करो बीकाणेवास, अरजली जो अवधारी रे, श्रीक० ५, कजोडी मलजी है गुणवंता, जुहारमलजी छाजै, सूरजमलजी मांगीलालजी, धर्म्मध्यांनमें गाजै, मुनीसर सब गुणधारी रे, श्रीक० ६, धर्मध्यांनका ठाठ घणेरा, तपस्या हुई अतिभारी दोनुं बखते बखाण वांचता मूरतमोहन गारी रे सुणे है सब नरनारी रे श्रीक० ७, महासतियां उगणीस विराजै, अधिक अधिक गुण दीपै, ज्ञान ध्यांन ओर करै थोकडा, आठ कर्म्मोंनें जीपै, तपस्या इण विधधारी रे, श्रीक० ८, रंगूजीकी धापांजीतो, नवठाणासूं सोवै, धूलांजीतो इकसठकीना और घणी तपस्या होवै, करदिया अगता जारी रे, श्रीक० ९, खेतांजीकी लीछमांजीकै, थोक सैतीसको कीनो, सुगन कवरजी पानकवरजी, दोइकतीस जलीनो आठ ठाणा सुखकारी रे, श्रीक० १०, रतनकवर समुदायमें सिरे, सिरदाराजीरी चेली, फतैकवरजी करी अठाई ठाणा दोय रहेली, सतियां सोभैसारी रे, श्री०

११, सात आठ नव दस थोकडा छुटकर गिणती नांई ज्ञान ध्यांनकी घटा ऊमटी तपस्या मेह वरसाई मुलकमें जसविस्तारी रे, श्रीकर्म० १२, उगणीसे छासठके वरसे, द्वितीय सांवणमांई, सुदि चोथकी करी संवच्छरी, धर्म्मध्यांन चितलाई गुरूकी महिमा भारी रे, श्रीकर्म० १३, धीरगंभीर क्षमाके सागर गुणको पार नपावै, रूपचंद चरणाको चाकर लुल २ सीस नमावै, वंदना मानो हमारी रे, श्रीकर्म्म० १४, इतिपदं ॥

[लावणी दूजी ऋषि कर्म्मचंदजीकी]

॥ मुनि करमचंदजी सहर वीकाणे आया अरे हांरे छासटे आया मुनिवर सबके मन भाया, [टेर,] हीरालालजी पिता आपके साकरबाई मात ओस वंशमें जन्म आपको गांधीजात विक्षात हेक्या जन्म आपका कडवड गांममें थाया, १, उगणीसे गुणतालीस मांही, रतनपुरी मझार, आसु सुदि तेरस मंगलनें लीनो संजम भार हेक्या क्षमातणा गुण आपमें अधिक सवाया, अ० २, रतनचंदजी गुरु आपका जाणे सब नरनार पूज उदै चंदजीकै पासे महाव्रत लीनाधार धन्य एसे मुनिकों आपनें शिक्षवनाया, अ० ३, हेजी रातदिवस खप करै ज्ञानकी, विद्यामें भरपूर, हेजी एसे मुनीके चरणसरणसें, दुखजावै सब दूर, मुनि संगत सेती निरमल हुय जावै काया अ० ४, हेअंग पांचमा वचे दोपारे सबहीकै मनभाय दिन ऊगेतीजो अंग वांचै अमृत धुनवरसाय हेक्या वाणी सुणकै सहु भविजन हरखाया, अ० ५, हेजी बारे भेदे तप करै सकांई सतरे संजमधार दोषवयालीस टालकेस कांई

लावै सूंझतो आहार धन २ भाग उसीका जिसका हाथ फरसाया, अ० ६, हेजी पंचमहाव्रतधारी मुनिःकों, वंदन करूं त्रिकाल, समकित होवै निरमलीस कांई, पावै मंगलमाल, अनाथी मुनिसें श्रेणिक समकित पाया अरे० ७, चार मुनिःजी संग आपकै, तपसी ओर गुणवांन कजोडी मलजी जुहारी लालजी अर कमलजी गुणखान, हेक्या मांगीलालजी चपल बुद्धि दरसाया अरे० ८, उगणीसे छासठकै मांही, बीकाणे चोमास, चोमासो फेर करो कलपतो आ सबकी अरदास, हेक्या आवड माहातम्मा छंद जोडकर गाया अरे हारे० ९, इतिपदं ॥

[अथ लावणी ऋषि करमचंदजीकी तीजी.]

[आलाप,] करजोडकै वीनती करूं, चरणामें शीश न मायकै, गुरू गुणवरणन करूं, अज्ञा वडोंकी लायके १, मातपिता ओर जनमनगरी, कहताहूं समझायकै, कोण गांममें लीनी दीक्षा वोकहूंमें गायकै २, साधुसंतकी करे सेवा,वो नर चतुर सुजाण है, जो उनोंकी करे निंदा, वो मूरख नादान है ३, वार २ करताहूं अरजी तुमारे चरणमें ध्यांन है, करो चोमासो कलपतो अब अरज लेवो मांन है ४,

षट्कायाके पीर मुनीसर पंचमहाव्रतके धारी बीकानेरमें कियो है चोमासो करमचंदजी मुनि उपगारी [टेर] अवल हकीगत कहूं आपकी पांच मुनिसंग आये है, राजमलजी जुहारीलालजी, धनराज मन भाये है, सूरजमलजी मांगीलालजी एकसे एक सवाये है, विनयवंत सभी संतोंकूं लुल २ सीस नमाये है [उडावणी] हेथे पंचमहाव्रत पालो उत्तम है किरिया, हेशुद्ध पालो शील

आचार संजम चितधरिया, विनयवंत गुणवंत आपहो क्षमातणा गुण है भारी, वीका० १, हीरालालजी पिता आपका साकरबाई है माता कडबड गांममें जनम लियो है, गांधी जात है विक्षाता, रतनचंदजी गुरू आपका उनका गुणमें नितगाता, पूज उदेचंदजी पै दीक्षा लीवी सभीकै मन भाना, [उडावणी] है उगणीसे गुणतालीस सालमें संजम लीना, हेआसुसुदि तेरस वार मंगलरंग-भीना, रतनपुरीमें लीनी दीक्षा जाउं चरणकी बलिहारी वी० २, महासतियां महाराज विराजै सतरठाणासे इध-कारे, एकएकसे अधिक गुणोंमें नहीं आवै गुणका पारे नंदकवरजी ओर रंगूजी खेताजी था तपधारे करकरणी करम काटता जाऊं जिनोंकी बलिहारे, [उडावणी] है क्या सतरे भेदे संजम मुनिवर पाले, हे क्या बाईस परीसा जीत दोष सब टाले, गुणातणा भंडार आपहो नहीं आवै गुणका पारी, वी० ३, उगणीसे अर तेसठ सालमें वीकाणे मुनिथे आया दोनुंवखत वखाण वाचतां भविजीवोंके मन भाया, सूत्र भगवती वांचै दुपारां सबहीकै चितमें चाया, ठाणा अंग वांचै दिनऊगै अमृत ध्वनि कर वरसाया [उडावणी] हेक्या वाणी आपकी दिन २ अधिक सवाई हेक्या आवड महातमा सहर वीकाणेमें गाई, करो चोमासो ओर कलपतो अरज करै सब नरनारी वीका० ४, इति पदं ॥

[अथ लावणी ।]

॥ श्रीकर्म्मचंदजी महाराज जाउं बलिहारीरे गुरुसुख-कारीरे० हुवा संवत उगणीसे छासठ चोमासो वो सुख-कार वीकाणे मझार, पांच ठाणांसुं आप पधारिया वरते

सुखशाता गुणसताईस दीपे मुनीका क्षमारस पाता, दोष बयालीस टाल मुनीसर निरदोषण लाता निरदोषण लाता सबकूं हितकारीरे गुरुशुभकारीरे, १, पंचमहाव्रत पाले मोटका जिन आज्ञाअनुसार दानदयाका मारग बतावै सुमती गुपतीधार दोय वखतको वखाण देवै पालै शुद्ध आचार मुनी ब्रह्मचारीरे गुरुसुखकारीरे, २, मन वचन काया वसकर लीनी रागद्वेषको मार बारे भेद करे तपस्या नवकल्पी करे विहार बारे भावना भावै मुनीसर निरवद्य बोले विचार क्षमासुखकारीरे गुरुसुखकारीरे, ३, कजोडी मलजी जुवारीलालजी मुनिवर हितकारी, सूरजमल ओर मांगीलालजी, वांदो नरनारी, बोल थोकडा सीखणकेरा आदेश करै भारी आतमकों तारीरे गुरुसुखकारीरे, ४, श्रावक श्राविका अरज करत है, मुनिवर सुणलेणा, कलपेसों चोमास वीकाणे दरशण नित देणा, तेजकरण हे शरण आपकी भेटे गुरुचरणा, अलप वुध माहारीरे गुरुसुखकारीरे, ५, इतिपदं॥

[अथ लावणी शोभालालजी ऋषीकी ।]

॥ अथ आलाप सखदोड लिख्यते ॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचार्या उवझाया मुनीराजरे पंचपरमेष्ठी नितनमूं तारण तरणजिहाजरे १, गुणवंतके गुण गावतां पूरे जोमनकी पाजरे उत्कृष्ट रस उत्पन्न हुवै सारै वोसगला काजरे दौडगुणीका गुण कोई गावैगा दुखदरिद्र गमावेगा फल मनवंछित पावेगा पार सागरसें लंघावेगा जीव खट् काय न हणावेगा धर्म्म अहिंस्या वतावेगा भक्ती गुरूकी जो करावेगा विधीसें सीसन

मावेगा कन्हइया कहै वचन रसाल धारो सब हुवो पल-
कमें निहाल मुनितूंही—

पूज्य श्रीयके हे गुरुभाई शोभालाल मुनिजसधारी,
ज्ञानतणा भंडार गुणका नहीं पार कहांलग कहूं विस्तारी
[टेर,] नानालालजी तात आपकै जडावबाई है माता,
ओसवंश विक्षात चोधरी जात सभीके मनभाता,उदयपु-
रमेवाड मुलकमें गांव जावद् है विक्षाता, शाल छत्तीसे
जाण जन्मलीयो आंण अम्मा पिया हरखाता, [उडा-
वणी] हेबहु गोरी मिलकर मंगलगीत जो गाते हेहद्-
गाते, हेसब सजनसनेही दैणवधाई आते, हेहां आते,
हेवडभाई ज्ञानमल दिलमें बहु हरखाते, हेहरखाते, छो-
टाभाई फेर हुवै इंद्रमल जावद्में परतिखजारी, ज्ञान०
१, तरुणभये फिर माततातकै सगपण करवाकी लागी,
दिया नीमच परणाय हरखसें व्याह फेर कीनासागी,
गृहवास छोटी ऊमरमें धर्म्मरुचि जबरी जागी, संसारका
व्यवहार लगे जंजार भाववण गये त्यागी [उडावणी]
हेअनित्यपदारथ जांणै जगसबीका, हेरंग २ में बीररस
व्यापगये तबीका, हेवैरागी बनडा बणगये थे कबीका
सालपचावन भंडारीसंग आया बिकानेर मझारी, ज्ञानत०
२, आज्ञा नहीं दीनी घरकां जब स्वमेव संजम लीना, साधु-
भेष लियाधार तजा संसार खटकाय दान दीना, साल
छपन्नवृद्धि चंद मुनिवरकों जाके फेर गुरुकीना, करै बहुत
अभ्यास ज्ञानका खास अमृतरस बहु पीना, [उडावणी]
हेसइकडों थोकडा अल्पकालमें मुखकीने, हेजिनमतकी
रहस्या भिन्न २ करके चीने, हेस्वमतपर मतमें हुवे बहुत
परबीने, गृहवास सूत्रतीस वांचै गुरुगमसें लीया अर्थ-
धारी, ज्ञान० ३, गुरुभाई पूज्य श्रीयसंग त्रण चउमास

रह्या आपसही, विनयभक्ति अपार नेकप्रकार करकै बहु
ज्ञानलही, पूज्य श्रीमुख प्रशंसा आपकी सुणीसो मुझसें
नजाय कही, मुझजिभ्या हेएक गुण अनेक पारकैसें जो
पही, [उडावणी] हेकोडकवी मिल गुणकरै कोई आ-
पका, हेसुरपतीनल हेपारसोई आपका, हेशुद्धक्रिया ज्ञान
है दोई आपका, पंचमहाव्रत पालत विचरै दोषसहू दूरां
टारी, ज्ञान० ४, पांचे सुमती सोहे मुनीसर त्रणगुप्तीके
भंडारी, षट्कायाके पीर ज्ञान गुणधीर सम दम खम
गुणभारी, नववाडशील पाले मुनीसर दशविध जतीध-
र्म्मके धारी, अष्टमदको गार कषाय चार टार निजातम
उजवारी, [उडावणी] हे मुनिचरण करण गुणधार सुणो
नरनारी, हेदोष वैंतालीस टार लेवै शुद्ध आहारी, हेपूज
आणावरते राखे घणो विचारी, पडिलेहण प्रतिक्रमण
हमेसां सुबेशांम करता सारी ज्ञान० ५, सूत्रभगवती
पन्नवणादी भाव विविधमुनि फुरमावै, हेतजुगत दृष्टांत
देवै बहु संत भिन्न २ कर समझावै, अमृत समबाणी
हमेसां दोनुंवखत मुनि वरसावै, सुणकै मस्त होजाय
भव्य हरखाय मजा आनंदपावै, [उडावणी] हेमुनिनय
निक्षेपा सप्तभंग्यादी जाणै, हेकरे न्यायसहित परमाण
पक्ष नहींटाणे, हेपूछै प्रष्ण उत्तर देवै सूत्रप्रमाणै, त्याग
खंध बहु हुवा वीकाणै तपस्याका नहीं आवै पारी, ज्ञान०
६, शाल अडसठ चोमासो वीकाणे शोभामुनिकी हद-
छाई मुनि देविचंद गेवर उमंग छति ऋद्धि छिटकाई, आ-
रजियां तेवीस ठाणेसें त्रण समुदायकी सुखदाई, करै
तपस्या घणी खग्गकी अणी जनम सफलथाई [उडावणी]
हेअबलाल कन्हइया छंद जोडकै गावै, हेसब साध सं-
तोंकों लुल २ सीस नमावै, हेमुझबंछित पूरोयेही अरज

सुणावै, चिंता चूरो सर्व्व संघकी संकट सब देवो टारी, ज्ञान० ७, इति पदं ॥

[सिरदारांजी आर्यांकी लावणी ।]

॥ माहासती सिरदारकवरजी गुणरतनांकी है माला, दुक्कर करणी करै हमेसां करमतणा काटे जाला, [टेर,] रांमसुखजी पिता जिनोंका फूलांबाई है माता, ओश वंशमें जन्म लियो है जातसूराणा विख्याता, जोधपुरमें लीनी है दीक्षा भविजीवोंकै मन भाता, सुगन कवर महाराजपैं दीक्षा लीवी सेभीके चितचाता, [उडावणी] हेउगणीसे तीस नवसालमें संजम लीनो, हेसंगतीज कंवरजी षट्काया दान दीनो, हेसब तीनजणा माहाउत्तम कांमजो कीनो, गांमनगर पुरपाटण विचरै करै धरमका उजवाला, दुक्कर० १, पंचमहाव्रत निरमल पालै सुमत गुपत शुद्ध चितलावै, बाईस परीसा सेवेहो आकरा समभाव नहीं डरपावै, ज्ञान ध्यानमें लीन सदा रहै एकप्रभूकूं वेध्यावै, रागद्वेष पक्षपात नहीं है भवि जीवाकै चितचावै, [उडावणी] समभाव तपस्या करै सदा सुखदाई, हेगुण बहोत सतीका कहणेमें नहीं आई, हेनहीं क्रोध अंगसंत संग कियां तिरजाई, कहूं कहांलग शोभा उणकी सब जीवनकै रिछपाला, दुक्कर० २, नववाड शुद्ध शीलपालता सुत्रसिद्धांत भणता सारा, रातदिवस खप करे है ज्ञानकी कहूं कहांलग विस्तारा, दोषबैतालीस टालै मोटका लेवै सूझतो वै आहारा, छोटा मोटा दोषण टालै राखै घणो वे विचारां [उडावणी] हेक्या वखाण वांचता अमृतजैसी वानी, हेभदरीक

सुभाव सरल माहा गुणखाणी, हेआगम अनुसारे वचन कहै सुखदानी, भिन्न २ ज्ञान सीखावै सबकूं वचन जिनोंका है बाला, दुक्कर० ३, तीजांजी महाराजकी महिमा कहूं सुणो सब नरनारी, सोहतीस भाव अहो निस जिनका क्षमातणा गुण है भारी, नरम वचन निरदोष बोलता राखे घणो दिल विचारी, रातदिवस करै ज्ञानका उद्यम कहूं कहांलग विस्तारी, [उडावणी] हेक्या सोनकंवर छगनांजी जीवणांजी सोहै, हेक्या पेमाजी वखतावरांजी मन मोहै, हेमाणकभूरांजी राजकंवर गुण ढोवै, हरखांजी महाराज ग्याराजी बारे ठाणा शोभे आला, दुक्कर० ४, नंदकवरजीकै टोलेमें गुणवंती सतियां सारी, एकएकसें अधिक गुणोंमें विद्यावंत है अधिकारी, किरिया पातर सरल स्वभावी सरब सती महागुणधारी, कोडजिह्वा गुण करे हो जिनूंका नहीं आवै उनका पारी, [उडावणी] हेक्या आवड महातमा छंद जोड गाता है, हेदुख जावै दूर फेर सुखसंपत पाता है, हेक्या श्रावक श्राविका दरश सदा चाता है उगणीसे ओर साठसालमें जोडकरी अनिरसाला, दुक्कर० ५, इति पदं ॥

[अथ साधपणेकी लावणी लिख्यते ।]

॥ कायामें ज्ञान कर धरा ध्यांन जिन जिगकी माया छोडदिया, होगया साध सब छोड वाद जिन समता रस भरपूर पीया, [टेर,] झुठे मात सब त्रात भ्रात ये सब स्वारथके जांनलिया, परभूसें प्रीत तज जगकी रीत श्रीजिन मारग पहचान लिया, भजते अरिहंत रहते एकंत जिन चित मनसेती ध्यांन किया, होगया० १, तज हिंसा

झूठ दीवी जगकूं पूठ जिन अदत्त दांनकूं दूर किया, मैथुन परिग्रह छोड कोडसो पंचमहाव्रत धारलिया, तज जगका भोग लेलिया जोग छवकायाकूं अभयदांन दिया, होगया० २, क्रोधमांन सब झूठा जाण जिन माया लोभकूं दूरकिया, दिल दया धार होगये पार फेर करमकिल्लेकूं तोडदिया, कुमतीकूं काट बहै शिवकी वाट जिन खूब धरम उपदेश दिया, होगया० ३, एसे जोसंत गुणके महंतसें बेर २ परणाम करूं, शुद्धमनसें धार करूं खेवा पार हिरदेमें उनका ध्यांन धरूं, कहै कनीरांम सब छोड काम जिन राजरटेसो सफल जिया होगये० ४, इतिपदं॥

[पार्श्वप्रभूकी लावणी ।]

॥ ध्यांन नित धरता तेरारे श्रीतेईसमा जिनराज काज सिद्ध करदो मेरारे, [आलाप,] अरिहंत सिद्ध आचारजजी, उवझाया मुनिराजरे, पंचपरमेष्ठीकूं नमूं तारण तरण जिहाजरे, पारस गुण वरणन करूं अज्ञा गुरूकी पायकै, मातपिता जनमनगरी दाखूं शुभचित लायकै, [१,चाल,] कासीदेश बनारसनगरी अश्वसेन तिहां राय, वामाराणी है गुणखाणी, जिनकी कूखे आया लीया जनम शुभवेरारे, श्रीतेई० १, मातपिता मनहर खियासिरे पांम्या सुख अथाय, इंद्रादिक मिल महोछव कीनो मेरूपरबत जाय, गावता गीत घनेरारे श्रीते० २, इकदिन गंगाऊपर आये माताजीकी लार, वडे नागकूं जलता देखा तापसके दरबार, लोक बहु होरह्या भेलारे श्री० ३ कुणसा नाग जले लक्कडमें, हमकूं आंख दिखाय, प्रभु तब लक्कड फाड दिखाया, देखे दुनिया आय, वृथा है

तपना तेरारे, श्रीते० ४, बडे नागकूं काढउबार्‍या, मेल्या स्वर्ग मझार, पद्मापति धरणेंद्र हूवा, सुणा मंत्र नवकार, उठालिया तापसडेरारे, श्रीते० ५, कमठमर हुआ मेघ-माली, प्रभुहुये अणगार, मेहवरसाये प्रभु न चलिये रचिया फैनहजार, कमठ मन भया अछेरारे श्रीते० ६, धरणेंद्र पद्मावती सरे, आसण अधर उठाय, उपसरग टाल्या प्रभुजीका, आया जिणदिसि जाय, गावै गुण प्रभु-केरारे श्री० ७, पारस केवल पांमिया सिरे, तीरथ थाप्या-चार, साधसाधवी श्रावक श्राविका इसमें फरक नसार जगतमें किया उजेरारे श्री० ८, बलते [1]नागकूं जिम तुम तार्‍यो, तिम प्रभु मुझतार, हिमत मलसुत कनीरामकी अरजीये अवधार, मेटभव २का फेरारे श्रीते० ९, इति पदं॥

[अथ मुक्तिमार्गकी दुकरता ढाल]

॥ मुगतिरो मारग दोहलो जीया चतुर सुजाण, [टेर,] पृथवी काया नहीं छेदिये, जाणो निज मातसमान, त्र-सथावरवासोवसे, घणाजीवा इंदीखाण, मु० १, पाणी-विना परजा डुले, आसा करेरे राजान, ऊंचो मुखकर जोवता, किरपा करो भगवान, मु० २, वेचेरे फरजन आपरा, तोपिण नहीं मिलेधान धसको खाय धरती पडे, ऊभा तजदे प्राण, मु० ३, तेऊ कायारो शसतर आकरो, वायू देवेरे वधाय, उडता पडेरे पतंगिया, जीव घणा जलजाय, मु० ४, तेऊ वाऊरो नीसर्‍यो, मानवभव नहीं पाय, निश्चेरे जावै तिर्यंचमें, घणो दुखियोरे थाय, मु० ५,

---

१ [श्वेतांबर पार्श्वनाथ चारित्रमें एक नाग लकडेमें अधवलेकूं वचाया ऐसा लेख है नाग नागणी दिगांवर कहते हैं इसवास्ते पाठ बदलाया है मनसें नहीं.]

वनास्पती दोय जातरी, भाखी श्रीभगवान, सूई अग्रनि गोदमें, जीव अनंता वखाण, मु० ६, येपांचोंही थावर जांणियै, मति वाओतरवार, जीव गरीब अनाथ छै, मति काटो निराधार, मु० ७, त्रसथावर हणियांविनां, पुद्गल पूजा न होय, विणभुगत्यां छूटे नहीं, मरसी घणोरोय २, मु० ८, पुद्गलरी त्रपती करै, परतिख लूंटेरे प्राण, अनुकंपा घटमें नहीं, खुली दुरगति खाण, मु० ९, रम्मत देखणनें गयो, ऊभो रह्यो सारीरात लघूनीत संका घणी बाहिर निसरियो नहीं जात, मु० १०, नाचै वैस्यारो तायफो, निरखै रंगसुरंग, रमणीरे संगमें राचियो, पोढेलाल पिलंग, मु० ११, दुखकरनें सुख माणतो, रुलियो काल अनंत, लखचौरासी जीवायोनिमैं, भाख्यो श्रीभगवंत, मु० १२, गलकट्टू मिलिया घणा भरियो ठगांरोबजार, कोई पूत्रजणनी जण्यो, चाले सूतररे अनुसार, मु० १३, आसव संपदाकारमी, जांणो बालूडांरो ख्याल, निसचै परभव जावणो, बांधो पाणी पहिलांपाल, मु० १४, सुसरारे घरे जीमतो, सखियां गायरही गीत, थोडादिनांमें पडसी आंतरो, निश्चै जांणो यही रीत, मु० १५, कायरनें चढे धूजणी, सूरासनमुख होय, नाठा जावै गीदडा, मानवभव दियो खोय, मु० १६, ओसंग्राम कह्यो केवली, सूरा सन्मुख थाय, झूझ रह्या अपणी देहसूं गुमान गर्व गमाय, मु० १७, जीव दयारो सिर सेहरो, बांध्यो श्रीनेमजिनंद, गजसुक माल वनडो वण्यो, पाम्यां परमानंद, मु० १८, मेतारज मोटा मुनी, धर्मरुचि अणगार, हिंस्या कुमति डिग्यानहीं, खोल्या दयाना भंडार, मु० १९, सेठ सुदर्शन जीतियो, जीवदयारे प्रसाद, इंद्रदेवै परदक्षणा, ऊभाकरे धन्यवाद, मु० २०, गोत्रतीर्थं

कर बांधियो, श्री श्रीकृष्णमुरार, आज्ञा दीधी आणंदसु, लेवो संजमभार, मु० २१, साढी बारे वरसां लगै, झूझ्या श्रीवीरजिनंद, जीवदयारो सिर सेहरो, बांध्यो त्रिसला-रेनंद, मु० २२, कालो रे मुखकीयो चोरनो, फेरयो नगरम-झार, समुद्र पाल ते देखनें, लीनो संजमभार, मु० २३, हिंस्यामें चोरीरी नियमा कही, लूंटै जीवांतणां वृंद, कु-गुरुरो भरमावियो, होरह्यो अंधाधूंद, मु० २४, करण मुनीसर इमभणे, पालोवरत अखंड, जीवदयारो धर्मआ-दरो, भाख्यो श्रीभगवंत, मु० २५, इति पदं ॥

[अथ श्रावककरणीकी सिक्षाय]

॥ श्रावक नांम धरायनें, एहवाकरै अकाज, तिणनें समझु श्रद्धतां, मनमें आवै लाज, [१, ढाल,] बांदू सोले जिनसो०, अंडामारीनें धडियां उडावै, सुदरी वदि करीने दीखावै, त्यागे नहीं पारकी नारो, तेश्रावक किम उतरै पारो, १, परनारीनें रहै तकता, जिम ग्रहण मांहिं मंगता फिरता, वचन वदै अतिविकारो, २, ते०, सूंक खायने पेटभरै, विसवास देयनें घात करे, टाले धर्म निंदै सं-सारो, ३, ते०, नीर अछाण्या मांहि पडै, भैंसा जिम पैसीनें रोल करै, वलै पीवणरो नहीं परिहारो ४, ते०, कंदमूल भखैनें तकै मूला, वहु वीजारांध करै होला, वलै बोरभखै लटसंहारो, ५, ते०, वले गेररमेनें बोलै अछता, परनार तकै रातूं फिरता, सपडैतो खावै मारो, ६, ते०, अछताक जिया मांहि मिलै, कवड़ी साटै पै-जार चलै, ओ उत्तमरो नहीं आचारो, ७, ते०, हुक्को पीवैनें मदमांस भखै, रात्री भोजन निशदिवस तकै,

खातां पडजावै अंधारो, ८, ते०, कुलनी कूडी रूढताणै, बलै खलगुल एकसमोजाणै, जिम मद छकियोई नरनारो, ९, ते०, गुरु मिलिया हीणाचारी, विरदाय कियो निज अधिकारी, चोरकुत्या मिल्यां किणरो सारो, १०, ते०, गाहक मिलियां सखरी दाखै, छलबल करनै नखरी नांखै, कूडा सूंसकरै केई अणपारो, ११, ते०, कर्मादांन करै पनरै, बले पत्थर फुडायनें विणज करै, ऊंठ बलधरो लेवै भाडो, १२ ते०, वचन आडंबर करै अछतो, थोथा बादल जिम गाजंतो, लोकलाज नहीं लिगारो, १३ ते०, चुगली खाय कहै अछती, परघर बोबै नहीं साचरती, जाणै धर्मी ठग बुगला कारो, १४ ते०, परदोष न देखै तिलजितरो, अछ तोही आल देवै नितरो, परनिंद्यारो नहींपारो, १५ ते०, नहीं सूंसविरतपच खाणरती, तपमूल करै नहीं शक्ति छती, तूट पड्यो खावणलारो, १६ ते०, देव गुरु धर्म नहीं लखिया, बलि श्रावकमें बाजै मुखिया पिण अंतरगतमैं अंधारो, १७ ते०, तत्वतणो न करै निरणो, तिण अछतो मांड मेल्यो सरणो, किम उतरे भवजल पारो, १८ ते०, नितरा कुदेव देवी पूजे, पिण अंतर, गतिमैं नहीं सूझै, अरिहंत ब्रह्म तारणहारो, १९, ते० इम सुणने ममता मेटो, इकदेव निरंजन शुद्ध भेटो, जो थैचावो निसतारो, २० ते०, श्रावक सीखनी इकवीसी, चोमासे अजमेर मैं निवसी, रतकहै सुणो नरनारो, २१, ते०, इति पदं ॥

[अथ साधुकरणी शिक्षा, ढाल,]

॥ खुसामदी करै दातारनी, रमावै बाल, जाणै आहार

आपै आछीतरै, बांधे पेटनी पाल, ओमारग नहीं साधरो [आंकडी,] बेटा बहू मावापना, असत्रीनैं भरतार, सासू बहू सगातणा, कहै समाचार, २ ओ०, लाभ अलाभ भाखै वले, जोतषनें जोय, जनममरण बतायदै दोष तीसरो होय, ३ ओ०, जात जणावै आपरी, दीनदया मणोथाय, आहार नआवै पातरै, मूंढोदै कुमलाय, ४ ओ०, ओषध भैषज करै, वलेदेवै सराप, क्रोधकरी लड-विध लिये, ज्ञानी कह्यो पाप, ५ ओ०, मान माया लोभ करी, हूवा दोषण दश, पहिला पछेनें साथे, करै घणो-जस, ६ ओ०, चारणदे विरदावली, भोजगनें भाट, अ-णदीधां ओगुणकरै, थोथो वैठो पाट, ७ ओ०, विद्या फोर कामण करै, वलै मंत्रनें चूर्न, संजोगमेले सर्वथा, इसडां करै खून, ८ ओ०, उसासणारा दोषए, गलावै, गर्भ, उत्तम ए नहीं आदरै, साधूटालै सर्व्व, ९ ओ०, रसनाना लंपटीथका, मेलै आहार संजोग, आछो मि-लियां राजी हुवै, भूंडो मिलियां सोग, १० ओ०, ताक २ जावै गोचरी, लावै ताजामाल, उवास व्रत करै नही, कुंदा वणरह्या लाल, ११ ओ०, रसनारा गिरधीथका, आरामें जाय, लघुता लागे लोकमें, निंद्या धर्मनी थाय, १२ ओ०, उणदिन जायसकै नहीं, रहै रातरा ध्यांन, प्रभाते जावै तेडियो, स्यूंपायो ज्ञान, १३ ओ०, भारी आहार भलीतरे, खावै ठंढोठार, भांगेवाड तोल्यांथका, पीछै हुवै भांड, १४ ओ०, वेसवार भला घालिया, भलो दीयो वघार, तीवण आछीतरे कियो, वले कहै छमकार, १५ ओ०, चावलदालमें घी घणो, सरायने खाय, चारि-त्रनें करै कोयलो, कह्यो सूत्तरमांय, १६ ओ०, निरसो आहार तीवणवले, नहीं मिरचनें लूंण, चारित्रमें निकले

धुंओ, खावै माथो धूण, १७, ओ०, एकण घरसुं बहरता, दश २ जणनो आहार, बाई असन करै मोकलो, भावना भावै तिवार, १८ ओ०, कोई पंथी पूछै क्यूं खडा, देखूं साधांरी वाट, रसगिरधांनें वो जाय कहै, दोड्या जाय गहगाट ओ० १९, माटे पाणी मांहनें, नाखै मूठीराख, बहरा वणरे कारणै, बहरे साधपणो नाख, २० ओ०, आधा करमी आहार लै, बाजै मोटा साध, जिन पंथनें तेरे तीन कियो, सेवै सुख अगाध, २१ ओ०, लाखांकी डारी घातसुं, वणै रेसमीवस्त्र, सो पहिरे निरदईथका, बाजै पूज पवित्र, २२ ओ० दूसरे गांम पोहचायवा, जावै गृहस्थी लार, भावभेल आरंभ करै, बहरी खावै वो आहार २३ ओ०, जागा नीपावै आपणी, कवेलू देवै फिराय, आमना जतावै आपरी, साधपणो उठजाय, २४ ओ०, वस्त्रपात्र थानक वलै, अनें चोथो आहार, साधू जोसूझता भोगवै, ज्यांरी हूं बलिहार, २५ ओ०, आरजा जीमावै हाथसूं, बांटकर देवै आहार, पासे बैठी रहै आरज्या, चोथो व्रत गयोहार, २६ ओ०, सुगडांग सूत्रमें कह्यो, तिरेसो तारणहार, डूबै जिकै किम तारसी, जोवो हिरदे विचार, २७ ओ०, इति पदं ॥

॥ सुणो २ अंगरेज बहादुर, गउ अरजी करनी, मुझ मैं क्या तकसीर आजमें, बेनाहक मरती, १, मेरा दूध सब दुनियां पीवै, मैं जगकी माता, एसी वात विचार देख, क्यों मुझकों मरवाता, २, नर दुनियांमें ज्ञान जोपाया, नजर नहीं आता, मुझें मारकर पाप न जांणै, क्यागुरु सिखलाता, ३, वे दरदीतूं दरद न जांणै, जुलमहुवा जाता, महा अनारज कसाइयांसें, मुझकूं मरवाता, ४, सभी

समझकै देखो साहिब, गऊ बहुत डरती, गरीब और लाचार दीनमें, दूध पिलाकै सुख करती, ५, मेरा दुखमें कहूं किसीपैं, कोणसुणै अरजी, ज्ञानी होयसो ज्ञानसें समझै, और सबी गरजी, ६, दूध पिलाती पूत्र जनमती, दुनियां पालणकूं, जमी दारका करूं गुजारा, हासल राजाकूं ७, वैद्यकग्रंथ पढा जो पूरा, मेरीकदर जांणै, शोथ संग्रहणी अजीर्ण खोवै, मेरी छाछ स्यांणे, ८, रक्तपित्त दही शिखरन सेती, अतीसार जावै, नैत्ररोग सब और रनोंधी, घीसैं नास पावै, ९, सबी रोगपर दवा घृतकी, दवा संग वणती, वादी पित्त सब रोग मिटावै, एसा मैं सुणती, १०, दवा शुद्ध गोबरसें केई, गोमुत्रसें होती, पांडू सोथ गोमूत्रसें मिटता, जहर केई खोती, ११, दूध दही घृत छाछ विगरनर, किसीकै नहीं सरता, मुझसें पलै और मुझकों मारै, एसा जुलम करता, १२, दूध दही घी घरमें वरतै, छाछज वैटनकूं, इतने सुख मेरे संगरहते, लष्टपुष्ट ननकूं, १३, गाडी रथके पूत्र जूतते, खेती करननकूं, इंधन और घरकी करै शोभा, गोबर नीपनकूं, १४, नृपतीके शिर चमर ढोलावै, शोभा बहुत करती, मैंअबला लाचार होयकर, सरणा हियेधरती, १५, इति गौअरजी पदं ॥

[अथ प्रसस्ति ॥]

॥ समकित कैलक्षण यही गुणका ग्राहक होय, जैसेकुं जैसा समझ, रखै विरोधन कोय, १, सम परिणामी शांतका कवलग करूं बखाण, अन्यमती शुभगुण धरै, वोभीनीका जाण, २, धनकण कंचन सब तजै, निंदाविकथा

त्याग, जिन आज्ञामें चलतजो, सोही संतवड भाग, ३, उगणीसै अडसठमें, बुधजन किया विचार, संपवढै जिन धर्ममें, तो होवै जयकार, ४, मांने कर्त्ता तो कहा, नहीं मै कहा विशेष, मनमांने मानेविगर, नगई ममतारेख, ५, धर्म अनादि जैनका, देवपूज अरिहंत, शुद्धदेत उपदेशसो साधू वजैमहंत, ६, सूत्रादिकमें जो कहा, नय निक्षेपामूल, स्याद्वाद रुचि जब वढै, यही धर्म अनुकूल, ७, गोले छा-गोत्रीप्रवर, वींझराज सुतनेक, मोहणलाल पूनमशशि, बडभागी सुविवेक, ८, इनके कहणेसें किया, संग्रहपाठक राम, छपायके परगट किया, तद्भक्तोंके काम, ९, वा-चक जीवण प्रेमचंद, अमरचंद गुणरास, वीकानेर मरुदे-शमैं, विद्याशाल प्रकाश, १०, जैसा जिसने रचदिया, सोहीलिखा सुजाण, अगर अशुद्धि होयतो मुझ दोषण मतजाण ११, वायां भाया पढतही, मनमैं हरखित होय अधिक ओछ लिखते रहा, मिच्छामि दुक्कडमोय १२, इति॥